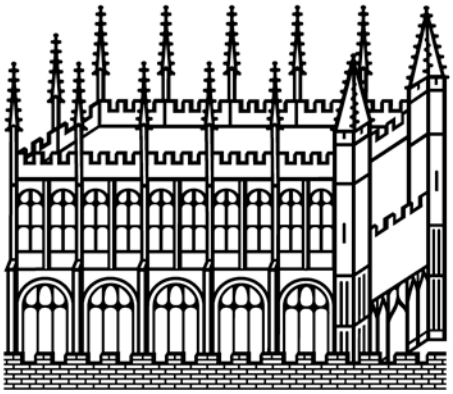


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Misc A
251

13.D.21.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Citra-candrikā.

चित्रचन्द्रिका का

चित्रचन्द्रिका

अर्थात्

विचित्र चित्रोंका अथाह सागर

जिसको

श्रीमत्परम प्रवीण कवि काशीराज महाराज ने संस्कृत से आदि ले अनेक ललित छन्दों में यथा विधि बोध के अर्थ भाषा टीका सहित ॥ अपने हृदय उद्गार से नायिका परस्पर संवाद

वर्णन किया है

श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर जीने भलीभांति रामरत्न महाराज से शुद्ध कराय

स्थान लखनऊ

निज यन्त्रालय में छपवाया ॥

जनवरी सन् १८७५ ई०

श्रीगणेशायनमः

अथचिंतचन्द्रिका

लिख्यते

छप्पै

वारण आनन शुभ भाल सिंदूर सु चार्चित ॥
देव सिद्ध गंधर्व नाग किन्नर करि अर्चित ॥ एक दन्त
भुज चारि सुभग लम्बोदर राजत । अष्ट सिद्धि नव
निद्धि विविध विद्या बर छाजत । कवि काशिराज
सुख पाद के चरण कमल में चित्त धरो । नाम
लेत शिव सुत को विघ्न सकल तत्क्षण टरो ॥

टीका ॥ यह मंगला चरण है गण पति की स्तुति
ग्रन्थ कर्ता करतु है कैसे हैं गण पति गज बदन उन्न
लम्बक में सिंदूर लगाये हुये हैं । पुनि देवता
आदि दैकें पूजित हैं पुनि एक दांत चार भुज सुंदर
लम्बा उदर सोभित है पुनि आठ सिद्धि नव निद्धि
अनेक प्रकार की विद्या रूपी जो वर हैं तिनकरिके
सोहैं हैं ऐसे जो गण पति तिनके चरण कमल
में कवि काशिराज सुख पाद के चित्त लगायो ।

शिव पुत्र को नाम लेत ही संपूर्ण विघ्न तुरत ही दूर भये १

श्लोक:॥ विघ्न तिमिर चय तरणि विपणि: सद्बुद्धि विविध रत्नानां भक्ते प्सित कल्प तरुर्गौरी पुत्रश्चिरं जयति २

टीका॥ यह मंगला चरण है कवि गण पति की स्तुति करतु है कैसे हैं गण पति विघ्न तिमिर चय तरणि: विघ्न रूपी जो अंधकार ताको चय नाम समूह ता के दूर करिवे कूं सूर्य हैं विपणि: सद्बुद्धि विविध रत्नानां पुनि कैसे हैं भली जो बुद्धि नाम अनेक शास्त्र रूपी सोई हैं अनेक प्रकार के रत्न ताके विपणि हैं नाम बजार हैं पुनि भक्ते प्सित कल्प तरु: नाम भक्त जनका ईप्सित नाम वांछित ताके देवे कूं कल्प वृक्ष है पुनि ऐसे जो गौरी पुत्र गणेश हैं सो चिरं नाम बहुत काल पर्यन्त जयति नाम कल्याण करैं रहैं उन कूं नमस्कार है २

प्राकृत आर्या॥ जिस्सा संझरणेणप्पा हादिसव्वं करग अव अरं ब अणा एणं विणाणं देन्ती सा जसमइवा गीसा ३

टीका॥ यह मंगला चरण है ग्रन्थ कर्त्ता कवि वाणी

की स्तुति करतु हैं जिस्सा नाम जस्या संस्मरणे णा नाम स्मरणेन जाके भजन करिके प्याहादि नाम प्रभाति सबं नाम सर्वं करण श्रव श्रारंभ नाम कर गत वर्ण सिव प्रकाश मान होत है सम्पूर्ण वस्तु। जैसें रूप मैं वेर के लिये तैं कोऊ श्रंग वेर को छिपो नहीं रहतु तैसेही वाणी के स्मरण तैं कोऊ वस्तु छिपी नहीं रहतु है श्रस्माणं नाम श्रज्ञानां विस्माणं नाम विज्ञानं देन्ती नाम ददति मूर्ख जो है तिन कूं श्रास्त्र ज्ञान देति है सानाम सो सब्द नाम जयति वागीश्वरी सो सरस्वती सम्पूर्ण श्रधिकता करिके वर्तें हैं जिन के भजन करने तैं संपूर्णवस्तु दीखें हैं मूर्खता दूर करिके ज्ञान देती हैं ऐसी जो वाणी हैं तिन कूं नमस्कार करूं हूं ३

दोहा॥ उज्वल भूषण वसन जयति वीणा पुस्तक कर। शुभ हंस श्रारूढ़ कंठ गत मुक्त माल वर॥ शेष सुरेस महेश चरण पंकज वंदत नित। मनवांछित फल लहत कहत जन वाणी धरि चित॥ कवि काशि राज श्रनुनय करौं कुमति तिमिर तुमहीं हरौं। यह चित चन्द्रिका ग्रंथ कों जगत जननि पूरन करौ॥ ४

टीका॥ यह मंगला चरण है कवि वाणी की स्तुति

करतु है कैसी है वाणी जिन के ऊजरे गहना अरु वस्त्र है जयति नाम अधिकता करिकै सोहैं हैं पुनि वीन अरु पुस्तक करमें लिये है अरु ऊज्वल हंस पर चढी है अरु कंठ में मोतिन की माल श्रेष्ठ है पुनि शेष नाग अरु इन्द्र अरु शिव जिन के चरण कमल की पूजा नित्य करतु हैं हे भव्य नर वाणी जू कों चित्त में धरु मन वांछित फल लेहु ऐसें शास्त्र कहतु है तातो नी सूं कवि काशि एज विनती करतु है कहा विनती की हमारी कुबुद्धि रूपी अंधकार को तुम दूरि करौ अरु यह चित्त चन्द्रिका ग्रंथ को हे जगत् माता पूरण करी देहु ५

छप्पै ॥ चित्त समुद्र अगाध कोऊ कवि थाह न लयो। मैं अतिहीं बुधि हीन कछुक ग्रंथन बल गयो॥ अध ऊरध विनु विंदु विंदु युत एकहि जानो। खल डल सप बव यजहि सकल समता करि मानो॥ अक्षर मोटे पातरे इन को दोषन देखिये। क्रम भंग होय नहिं चित्त को सो विचार उर लेखिये ५

टीका ॥ यह चित्त रूपी समुद्र अथाह है याकी थाह कोऊ कवि ने नहीं पाई अरु मैंतो अतिहीं बुद्धि करिके न्यून हूं परन्तु थोड़ो सो ग्रंथन के बल करके

कह्यों है चित्र की रीति यह है कि अंध विंदु नाम विसर्ग ऊर्ध विंदु नाम अनुस्वार इन करिके युक्त अक्षर अथवा इन करिके रहित अक्षर चित्र काव्य में इनकूं एकही जानिये अरु रकार लकार ळकार इन तीनन कूं एक जानो अरु सकार ष कार श कार ए तीनन कूं एक जानो अरु ब कार व कार ए दोऊन कूं एक जानो अरु य कार ज कार ए दोऊन कूं एक जानो अरु अक्षार मोटे पातरे नाम दीर्घ अक्षार कूं लघु जिह्वा सूं उच्चारण करिके लघु मानिये याको दोष चित्र सैली में नहीं है जा रीति सों चित्र को निर्वाह होय सो कीजिये चित्र की रीति बिगरै सो न कीजिये ५

अथ चित्र लक्षणम्

तोमर छन्द ॥ अब गद्य चित्र बखानु पुनि अर्ध चित्रहि जानु। अंकर सु चित्र हि मानु त्रयभेद चित्रहि आनु ॥१॥

टीका ॥ अब गद्य चित्र कों कहु पुनि अर्ध चित्र कों जानों फिरि अंकर चित्र सुंदर कों मानिये तीनभेद के चित्र आनिये १

अथ गद्यचित्र लक्षणम्

दोहा॥ वर्ण स्थान स्वर गनो आकृति गति पुनि बंधा चित्र भेद षट् जानिये वरनत कवि करि संध ई

टीका॥ वर्ण चित्र अरु स्थान चित्र अरु स्वर चित्र अरु आकार चित्र अरु गति चित्र अरु बंध चित्र यह छः प्रकार के चित्र कवि कहत हैं करि संध नाम प्रतिज्ञा करि कै नाम वर्ण प्रतिज्ञा स्थान प्रतिज्ञा इत्यादिक जानिये ई

अथ वर्ण चित्र लक्षणम्

इक व्यंजन तें चारि लगि स्वर व्यंजन सब भाखि। अरु सरिगम व्यंजन कह्यो गुनन मत रस चाखि ७

टीका॥ इक व्यंजन तें चारि लगि नाम एक वर्ण का चित्र अथवा दो वर्ण का अरु तीन वर्ण का अरु चार वर्ण तक अरु सर्व मात्रा अरु सर्व वर्ण का एक चित्र कह्यो है अरु सरिगम पधनी इन सात वर्ण का एक चित्र कियो है आगे सूधो है ७

एकाक्षर लक्षणम्

दोहा॥ एकी अक्षर को जहां कीजें छन्द सुबंध। सो इक व्यंजन कहतु हैं चित्र काव्य की संध ८

टीका॥ एक अक्षर को जहां छन्द कीजिये भली रचना सुंता कूं एक व्यंजन नाम चित्र कहत हैं चित्र काव्य की यह प्रतिज्ञा है ८

यथा दोहा॥ केकी केका कू कि कै काका कू कै कोक। कंक काक की का कुकू काक काक के कोक ९

टीका॥ यहां उद्दीपन विभाव है नायिका संयोगिनी अरु वियोगिनी इन दोऊन को उद्दीपन करतु है एक कूं दुख रूपी एक कूं सुख रूपी। केकी। नाम मयूर। केका। नाम मोर की वाणी। कू कि कै। नाम बोलि कै का नाम कहा काकू कै नाम कहा कहै है कोक नाम मेंडुक यह सखी प्रति सखी को वचन रूपी प्रश्न तहां उत्तर कंक नाम कोमल काक नाम संभोग को आरम्भ की नाम ताकी काकु नाम ध्वनि विकार कू नाम एष्वी काक नाम क काहिये सुख अक काहिये दुख काक नाम वादी के नाम तिनको काक नाम कोक शास्त्र या दोहा को भावार्थ यह है कि मयूर अपनी वाणी बोलि कै कहा कहै है अरु कहा बोलै है मेंडुक तहां यह उत्तर कोमल संभोग के आरंभ के ध्वनि की एष्वी है अर्थात् उत्पन्न

करै है सुख वादिनी संयोगिनी अरु दुख वादिनी विरहिनी तिन कूं कोक शास्त्र है नाम का मोहीपन करिके सुख दुख को दाता है ९

अन्यच्च दोहा नोने नैनी नैन ने नोने नुने ननून। नाना नन ने नानु ने नाना नैना नून १०

टीका यहां सखी की उक्ति नायक सूं नायिका पर कीया की रूपाधिकता वर्णन करै है नायक कूं श्रवण नुराग करावै है। नोने नैनी नाम सुंदर हैं नेत्र जाके नैन ने नाम ताके नेत्रने नो नाम नूतन नै नाम नीति नुने नाम वटोरे हैं ननून नाम ते घाटि नहीं हैं नाना नन नाम बहुत है आनन जाके ऐसे जो हैं ब्रह्मा नैना म तिन ने नाम नहीं रचे सृष्टि में ऐसे नहि रचे हैं ते नाना नाम नाना प्रकार के नैना नाम ने त्र नून नाम हीन हैं उनते याको यह भावार्थ है की सुंदर नेत्र वाली के नेत्र ने अपूर्व कटा स ऐसे वटोरे हैं कि लघु नहीं हैं अरु ब्रह्मा की सृष्टि में ऐसे कटाक्ष काहूं नेत्र में नाहीं दे खे १०

दकारलक्षणं ॥ दोहा ॥ दक दक व्यंजन है

अधर पुनि युग व्यंजन छन्द यह युग व्यंजन चित्त है
वरनत बुद्धि अमंद ११

टीका॥ आधो छन्द; एक अक्षर को अरु आधो छंद दूसरे अक्षर को एक जाति हि व्यंजन चित्त की यह है अरु दै अक्षर मिलाइ कै छन्द कीजिये ताकूं दूसरी जाति कहत हैं जिन कविन की बुद्धि नहीं मंद है ते ११

यथा दोहा॥ तूंती तातत त तंतैं तोते तातेतत। लालो लीला लै लली लली लाल लै लच्छ १२

टीका॥ यह सखी का बचन नायिका मानिनी सुंमान मोचन कराय बे मैं तूंती नाम तुम तिया तात नाम राम त नाम बुद्ध तत नाम विस्तर तैं नाम बुझने तोते नाम तोसौं ताते नाम ता नायक सूं तत नाम तल लालो नाम लालसा लीला नाम विलास लै नाम लीनता लली नाम हे लाड़िली नायिका लालो नाम रल यो ऐक्य नाम रलो अर्थात् मिलो लाल नाम श्री कृष्ण लै नाम लेहु लल्ल नाम अयोजन या दोहा को भावार्थ यह है कि तूं तो तिय है नाम तिय में थोड़ी बुद्धि होति है यातें राम बुद्ध फैलायो तैंने तोसौं अरु नायक सूं तो तत्व है नाम एक ताही है याते हे लाड़िली विलास की

लालसा में लीन ह्वैके लाल सौं मिलो अरु लेहु अपने मनो वांछित फल कौं १२

द्वितीयो पद्या दोहा॥ हरि हर हर हरि हेरि ही रि रि सौं रोहि। हरि हरि रहि रहही हौं हार हरि होहि १३

टीका॥ यहां मनस उक्ति प्राणी के हे हिय नाम हे मन हरि जो बिसु तिनकूं हर नाम महादेवरूप हेरि नाम देखु अरु महादेव कौं बिसु रूपी देखु अर्थात देखि कैं रि रि नाम रटि रटि के हौं नाम भली भांति सौं रोहि नाम चढ़ि या कीर्तन मार्ग में अरु हारि हारि रहिये रहीं नाम थकि थकि के रहो या ही राह में तौ हौं नाम सहज हीं हार हरि होहि अर्थात विसु तेरे हार होंयगो नाम हृदय वास करैंगे १३

व्यक्षर लक्षण दोहा॥ तीनि वर्ण को नियम करि रचिये छन्द सुजान। सो चि व्यंजन चिब है कहत सु कवि परधान १४

टीका॥ जा छन्द मैं तीन हीं वर्ण को प्रयोग कीजिये ता कूं चि व्यंजन चिब कहत हैं जे कविन मे श्रेष्ठ हैं १४

यथा दोहा॥ तरल लता ते सी ललित रत तर लाला लोल। रूरी लीला ते रलो तू रती रति, तोल १५

टीका यहाँ दूती की उक्ति नायका सूं नायक सूं मिलाप प्रगट करायो चाहति है हे तिया तरल लता तेती ललित नाम चंचल वेली हूंते तू सुंदर है अरु रत तर लाला लोल नाम अनुराग में अत्यन्त करिके रंग्यो है अरु याही ते श्री रूप चंचल हैं तासूं रूरी लीला तैं रलो नाम भले विलास सौं मिलो नायक सौं अरु तू रती रति तोल नाम काम देव की स्त्री के तुल्यता करि के तू हूंरगी है यहाँ अनुराग लखिवे के दूती पर कीया की सकुच छुरावे है सातैं अनुराग लक्षिता पर कीया है १५

चतुर्व्यंजन लक्षणं दोहा इक इक व्यंजन प्रति चरण जहाँ करनियै मित्र चतुरक्षर सोजानि ये अति अद्भुत यह चित्र १६

टीका एक वर्ण को एक चरण या रीति सौं चारि वर्ण के चारि चरण जहां रचिये ताकौं चतुर्व्यंजन चित्र कहत हैं १६

यथा दोहा॥ लोल लाल लोले लली नोने नोने

नोन.रूरे रूरे री रैं जोजे जी जै जोज १०

टीका यहां सखी को वचन सखी सूं लोल नाम चंचल लाल नाम श्री कृस्न लोलै नाम चंचल ही लली नाम नायिका नोने नोने नाम सुंदर सुंदर नोन नाम सुनार्द रूरे रूरे नाम चोखे चोखे री नाम रत्न यो ऐसे अर्थात् रत्नि के नाम मिलि के रैं नाम बातें करैं हैं जोजे नाम मिलाये जी नाम जिय जै नाम जय जोज नाम जोजना या को भावार्थ यह है की चंचल लाला अरु चंचल ही लाली है अरु लावण्यता दुहून सुंदर सुंदर है सो भले भले प्रकार सूं मिलि के बातें करत हैं सो हे सखी मुग्ध नायक मुग्धा नायिका जोजे नाम मिलाये दुहून कूं हमनें अब जिय में जस कौं जोउ अर्थात् हे सखी तुम्ह प्रसन्न होउ यह बड़ो ई कार्य भयो कि दोऊ मिले १०

सर्व व्यंजन लक्षणं दोहा एक छन्द मैं सब वरण अरु सब मात्रा होइ सब व्यंजन चित्र यह कहत सयानें लोई १८

टीका जहां एकई छन्द मैं सम्पूर्ण अक्षर अरु संपूर्ण मात्रा होय ताकूं सर्व व्यंजन चित्र चतुर लोग

कहत हैं १८

यथा कुंडलिका॥ केकी रव घन लखि नचे छाजे किल्ली वैन। तट ठिठिढि चढ़ि गण नदी तत्य उदधि रहि ऐन॥ तत्य उदधि रहि ऐन दये फबि भू मग सगरे। आय रले वर तियनि पथिक नर परिहरि दगरे॥ आशिष सहित हुलास लही विरहिन हियरे की। और शोप आनंद भई जब कूके के की १९

टीका॥ यहां सखी को बचन सखी सूं वर्षा ऋतु में आगत पति का के आनन्द को वर्णन करति है मयूर पक्षी बादर लखि कै नाचन लगे आरु सोभित भये कींगर के शब्द आरु कारे न सौं दहि नाम मडुदि के चढ़त भये नदीन के समूह आरु समुद्र आपने ऐन नाम मर्यादा में तत्य नाम यथास्थित रहे आरु छिपे सुहावने पन्थी के रस्ता सिगरे यातें जादके मिले श्रेष्ठ तियानिसौं बटोही लोग छोड़िके रस्ता कौं आरु तब आशिष सहित नाम मनोरथ सहित आनन्द पायो विरहिणी नायका निजे आपने हृदय को आरु औरही नाम अपूर्व सोभा अधिक भई जब बोले मोर अर्थात् आलंबन विभाव समय में उद्दीपन विभाव भये यातें सोभा अधिक भई १९ ॥ ॥ ॥

स्वरव्यंजन लक्षणं दोहा। जहँ सरिगम के वर्ण सौं रचिये छन्द प्रवीन। सो स्वरव्यंजन चित्र है कह्यो ग्रंथ रस लीन २०

टीका। जहाँ सरिगम पधनी इनही सात वर्ण सौं छन्द रचिये ताकौं स्वरव्यंजन चित्र कहत हैं जेरस ग्रंथन में लीन हैं २०

यथा कवित्त। सारस से नैन रस सैननि सरसनि धि गिरगुन ग्राम धनि धनि सुम धुरिमा रंग रागिनी निरंग मूरि मे रँगीसी धुनि सुनि सुनि धाम धाम सीगान पुरिमा परम नरम रानी सानुराग पीपर सिसरा मरा मन सनि रोपे रूप रूरि मा रस समोँसा धि रधे मानन मिमानु मानु मे रोपन पूरि मेरी पैनी मैन मुरिमा २१

टीका। यह सखी को वचन राधिका सौं मोन मोचन कराय वे में सारस नाम कमल से नेत्र अरु रस रूपी कटाक्षन में सरस नाम अधिक ताके निधि नाम समूह हैं अरु गिरा नाम वानी ताके गुन के स्थान हैं धन्यधन्य है तुम्हारी सुंदर मधुर तार राग रागिनी न के रँग की जड़ मैं रँगि रही है धुनि ता शब्द कौं सुनि सुनि के गेह गेह में रमि के पूरित ह्वै रही है तुम्हारी

गाय वे की मा नाम लक्ष्मी परम नाम उत्कृष्ट अरु नरम नाम कुडा में प्रवीन है हे रानी सानुराग नाम अनुराग सहित पीतम कौं परसु समगम नाम हिलि मिलि के चित्त सौं सनि नाम लिपटि के रोपो नाम आरोपित करो आपने रूप की रूरिमा नाम चोखी सोभा हे राधिका आज रास को समया साधि नाम सम्हारु मान कौं नवायिके मानि ले मानिले मेरी प्रतिज्ञा कौं पूरन करु तू मेरी है याते तोसौं कहति हूं अरु पैनी नाम चोखी है तुकाम के मरोड़ के बीच में अर्थात् ऐसी रूपवती है के अरु गान विद्या में प्रवीन है के तू मान करती है यह योग्य नहीं है यातें रास समय में श्री कृस्न ते मिलु यह नायका।

दोहा २१ ॥ ॥ ॥

इति श्री मत्काशिराज विरचित चित्र चन्द्रिकायां वर्ण चित्रवर्णनो नाम प्रथम प्रकाशः १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ स्थान चित्र लक्षण लिख्यते दोहा॥

निधंरहि कौं आदि दै पंच स्थानी चित्र एक एक थानी पुनि कह्यो समुझि लीजियो मित्र १

टीका॥ निधंक्य निस्तालव्य निर्मूर्द्धन्य निर्दन्त्य

निरोष्ठ ए पांच चित्र जानिये अरु एक एक स्थानीय नाम कंठ स्थानी तालुस्थानी मूर्द्धस्थानी दंतस्थानी ओष्ठस्थानी अरु पांच चित्र एजा नि ये मित्र १ ॥

निष्कंठ्य लक्षणं दोहा अह कवर्गकौं छाड़िये अरु सब माचा त्यागि।ई ऊ ऋ सों छन्द रचि यह निष्कंठ हि लागि २

टीका अकार हकार अरु कखगघङ इन अक्षरन कौं छोड़िके अरु सब मात्रानि कौं छोड़िके अरु इकार उकार ऋकार ए तीन मात्रानि सौं जहां छन्द रचिये यह निष्कंठ्य की लागि है नाम संकेत है २

यथा दोहा श्री पी प्रीति सुरीत सी निधि विधि वृद्धि सुबुद्धि। रूरी नीति सु भूरि भू सुमिरी जीशुचि सुद्धि १

टीका यहां अपने जीव सों प्राणी की उक्ति यह है कि श्री पी नाम लक्ष्मी के पति नारायण तिन की प्रीति नाम प्रसन्नता सो कैसी है सुरीति सी नाम सुंदर रीति की श्री है अरु न जो निधि अरु विधि नाम कर्मकांड इनकी वृद्धि करैहै अरु

सुंदर बुद्धि की वृद्धि करै है अरु चोखी नीति अरु सुभूमि नाम सुंदर जो बहुत जो भूमि ताहू की। देन वारी है ऐसें शास्त्र में सुमिरी नाम कही है जो नाम है जीव शुचि सुद्धि नाम पवित्र शुद्धता अर्थात् मोक्ष परिणाम में ताहूकी दाता है भगवत कृपा ३

निस्तालव्य लक्षणं दोहा॥ दश पंच वर्ग हि छोड़िये र मन्ना मति देहु। निस्तालव्य सुचित्र यह कवि पंडित लखि लेहु ४

टीका दकार शकार षकार अरु च छ ज झ ञ अरु दकार की माचा इन वर्ण माचा नकौं छोड़िकेन हीं कन्द रचिये ताकौं निस्तालव्य चित्र कहते हैं ४

यथा दोहा॥ कमल वदन तेरो सरस मुख मूंदे कस बाल। खोलो घूंघट अरु लखौ कर जोरें नंदलाल ५

टीका यहाँ सखी को वचन मानिनीसौं मान मोचन करावे में हे बाल कमल सो मुख तिहारो रस करिके सहित है ता मुख कौं कैसे मूंदि रही है घूंघट पट कौं खोलि के देखो कर जोरे नंदलाल तिहारे सनमुख हैं याते मान छोड़िके इन को आदर करो ॥ ५ ॥ ॥ ॥

निर्मूर्द्धन्य लक्षणां दोहा॥ ऋषर स्वर्ग हि छाड़िके रचिये छन्द सुजान। निर्मूर्द्धन्य सु चिह्न हि ग्रंथन मत अनुमान ॥ ६ ॥

टीका ऋकार षकार रकार अरु टठडढण। इन वर्णन कौं छोड़िके जहाँ छन्द रचिये ताकौं निर्मूर्द्धन्य चिह्न कहिये ॥ ६ ॥

यथा दोहा॥ पीतम जब अनुनय कियो तबनहिं मान्यो बाल। कोप मुधा मोपै कियो तैंनै मनाये लाल ॥ ७ ॥

टीका यह नायका कलहांतरिता तासौं अंतरंग सखी की उक्ति यह है की पीतम ने जब अनुनय कियो नाम विन्ती करी तब तैंनें नहीं मान्यो हे बाल अब मोपै क्रोध मुधा नाम वृथा करै हैं की तैंने लाल कौं मनायो यह हे बाल तुझने मनायो नहीं अरु मेरे मनाये लाल कैसें मानैं ॥ ७ ॥

निर्दंत्य लक्षणं दोहा लसलन वर्ग हि। त्यागिके छन्द रचौ सुख पाय। निर्दंती यह चिह्न है काशिराज कवि गाय ॥ ८ ॥

टीका लकार सकार लकार अरु तथ दध न इन अक्षरन कौं छोड़िके जहाँ छन्द रचिये ताकौं

निर्दंत्य चित्र कहत हैं कवि काशिराज ॥ ७॥

यथा दोहा॥ कछु उमगे उरमे उरज वाक मिटा ई भाव। चाहि अभी दृजराज जी परमा वाको भाव ॥ ८ ॥

टीका यह अज्ञात यौवना नायका है सखी की उक्ति नायकसौं यह है की अभी थोड़े हृदय में कुच उकसे हैं अरु कछुक वचन के बीच में मधुरता आई है हे दृज राजजी वा नायका की परमा नाम उत्कृष्ट सोभा ताको जो भाव हैं नाम छटा ताकों चाही अब नाम देखो अब ॥ ८॥

निरोष्ठ लक्षणं दोहा जहाँ उकार पवर्ग कौं छाड़ि कीजियत छन्द उमता नाहीं दीजिये सो निरोष्ठ रस कन्द ॥ ९॥

टीका उकार अरु पफवभम अरु बकार वका र एक ही हैं अरु ऊ की मात्रा इन वरन मात्रा छोड़िके जहां छन्द रचिये ताकों निरोष्ठ चित्र कहतहैं कैसो है यह चित्र रस को कन्द है नाम मूल है ॥ ९॥

यथा कवित्त कनक लजात तन आननतेचंद कौंति ललित चषन कंज खंजरीट हीन है। लाल की ललाई नहीं आछरी अधर रंग की रनासि का ।

ते हारि कानन न लीन है॥ तड़ित सरस हास लसत दसन राजि दरकि अनार दाने देखियत दीन है। कहि काशी राज आज अधिक सजी है राधा आनंद आगाधा लखैं लाल जी आधीन है ॥ ११ ॥

टीका॥ सखी का वचन सखी सों यह नायका स्वाधीन पतिका ताको रूप वर्णन करति है सखी सुवर्ण जा के तन के रंग ते लज्जित होतु है अरु मुख ते चन्द्रमा की कांति लज्जित होत है ललित नाम सुन्दर नेत्र न तें कमल अरु खंजन तुच्छ हैं एक रूप करिके ए क एक चंचलता करिके अरु लाल मणि की अरु णई कूं नहीं आदर कीनों ओष्ठ के रंग नें अरु तो ता नासिका ते हारि मानिके वचन मे लीन है अर्थात् वनन मे वास करै है अरु तड़ित नाम वि जुली सें सरस हास नाम अधिक द्युति इसीमे है त्र में सोभित जो दंतन की राजि नाम पंक्ति ताकूं दे खि के फटे जो अनार अर्थात् दंतन की समता करि वे लिये तब दीखे जो अनार के दाने ते सुछ दीखे क है कवि काशी राज आज के दिवस अधिक ता करि के सजी है राधा अरु आनंद आगाधा नाम अर्थात् है आनंद जामे ऐसी जो राधा तिन्है देखि के श्रीकृष्ण

जी अधीन नाम आश्रक भये हैं ॥ ११॥

कंठस्थानीय लक्षणं दोहा अहकवर्ग के वर्ण ते छन्द रचो निरधारि। अवर्ण मत्राही जिये कंठ स्थानि विचारि ॥ १२॥

टीका अकार हकार अरु कखगघ इन अक्षर नही ते जहाँ छन्द रचिये अरु अकार आकार अरु अनुस्वार यही मात्रा दीजिये ताको कंठस्थानीय चित्र जानिये ॥ १२॥

यथा चौपाई कंक काक खग अघहा गंगा। गाहु गाहु अक गाहक अंगा ॥ १३॥

टीका मन तें प्राणी की उक्ति कंक नाम डैंक पक्षी काक नाम कउआ ऐसे जो अधम खग हैं तिन हूं की अघहा नाम अघ पाप ताकी दूर करन हारि हैं श्रीगंगा जी यातें हे मन तू गाहु गाहु नाम न्हाउ न्हाउ अक नाम दुःख ताको गाहक नाम हरण करन वारी है यह अंगा नाम प्राणी अर्थात् अधम पक्षी आदिक गंगा स्पर्श तें तरें हैं तो यह अंग क्यों न तरैगो याते स्नान करु ॥ १३॥

तालुस्थानीयलक्षणं दोहा इयचवर्गन ते रचो छन्द जहाँ सुख धाम। तालुस्थानी चित्र य-

हरणतकवि गुन ग्राम ॥ १४ ॥

टीका॥ ढकार णकार यकार ग्रह च छ जझ इन ग्रक्षरन ते जहाँ छन्द रचिये ताकों तालुस्थानी चित्र कहत हैं जे कवि गुन के ग्राम हैं ॥ १४ ॥

यथा चौपाई॥ झझी झाझ जुझार छाजे। चाय चाय जय जाची जाजे ॥ १५ ॥

टीका॥ यहाँ युद्ध को वर्णन यह है कि झाझी नाम झाँझ के बजावने हारे झाँझ बाजा जुझार नाम मारू बजाते छाजे नाम सोहे झझ ता समय चाय चाय नाम चाहि चाहिके जय जाची नाम जीत के जाँचने वारे सूर वीर जाजे नाम युद्ध करते भये ॥ १५ ॥

मूर्द्धस्थानी लक्षणं दोहा॥ रटषरटवर्जन ते जहाँ कीजे छन्द विचार। मूर्द्धस्थानी चित्र सोयं ग्रन्थ मत ग्रनुसार ॥ १६ ॥

टीका॥ रटकार षकार रकार ग्रर ट ठ ड ढ ण। इन वर्णन ते जहाँ छन्द रहिये ताको मूर्द्धस्थानी चित्र जानिये ग्रंथ मत के ग्रनुसार तें ॥ १६ ॥

यथा चौपाई॥ ण्ण रूरे रट ढाढी रटे। रणी ढी ठ गढ़े ण्ण डाढे ॥ १७ ॥

टीका॥ यहाँ युद्ध को वर्णन यह है कि रण रूरे रट नाम युद्ध के चोखे रट नाम कड़खा दाढ़ी एटे नाम दाढ़ी पुकारत भये तहाँ रणी दीट नाम युद्ध मे जो दीठ है सूरते दाटे नाम जमि कै रण नाम संग्रा म ताकौं डाटे नाम रोकत भये ॥ १७॥

दंतस्थानी लक्षणं दोहा॥ लसल तवर्गन ते जहाँ छन्द रचैं कविलोग दंत स्थानी चित्र को जा नि लेहु यह योग ॥ १८ ॥

टीका लकार सकार लकार ऋ तथ दधन इ॰ न वर्णन ते जहाँ छन्द रचैं हैं कविलोग तहाँ दंत स्थानी चित्र जानिये या चित्र को यह योग है ॥ १८॥

यथा दोहा॥ तत निधान तान नित्तनैं ललितल ललित ई ताल। सुनि सुनि नत तन से लसत नूतन नोने लाल ॥ १९ ॥

टीका यहाँ सखी को वचन सखी सों यह नायका भौंटा के वीन वजायवे को वर्णन करति है तत नाम वीणा वाजो ताकी निधान नाम जाननेवाली नायका तानानि तनैं नाम अनेक तानन कौं विस्तरै है ललि न ललित नाम सुंदर सुंदर दे ताल नाम ताल दे के ऋ इन तानन कों सुनि सुनि के नत तन से

नाम नम्र तन से अत्यंत वशी भूत से भये हैं न-
वीन जो सुंदर लाल हैं ते ॥ १९ ॥

ओष्ठस्थानी लक्षणं दोहा जहां पवर्गा-
उकार ते छन्द बना वो मित्र। ओष्ठ स्थानी जानिये।
परम सुखद यह चित्र ॥२०॥

टीका पफबभम अरु उकार इन अक्षरन्ते छ-
न्द बनावो हे मित्र सो ओष्ठ स्थानी चित्र जानिये यह
परम सुख दाता है ॥ २० ॥

यथा चौपाई माभा उपमा मैं फविवामा। उमा
पाप पवि भूमि विभामा ॥ २१ ॥

टीका यहां पार्वती को वर्णन है कैसी हैं पार्वती
कि मा नाम लक्ष्मी भा नाम कांति उपमा में नाम
सादृश्य मे फवि नाम सोहैं हैं वामा नाम सुंदरी
उमा नाम पार्वती पाप नाम पातक पवि नाम
वज्र भूमि नाम पृथ्वी विभामा नाम क्रोध रहि
त याको भावार्थ यह है कि सुंदरी पार्वती जो सोभा
नि करिके लक्ष्मी जी की उपमा में सोहै हैं अरु पृथ्वी
में पाप दूर करि वे कूं वज्र हैं अरु निक्रोध हैं नाम।
दयालु हैं ॥ २१ ॥

इति श्रीमच्छत्राशिराजविरचित

चित्रचन्द्रिकायांस्थानचित्रवर्णनंना-
महितीयप्रकाशः ॥ २ ॥

अथस्वरचित्रलक्षणं दोहा गुरु लघु
मात्रा भेद करि रचिये छन्द प्रवीन। अति विचित्र।
स्वर चित्र यह कहत रसिक रस लीन ॥ १॥

टीका जहाँ गुरु लघु इन मात्रान के भेद करिके
छन्द रचिये एक छन्द में सर्व गुरु मात्रा अथवा एक
छन्द में सर्व लघु मात्रा ताकों स्वर चित्र कहत हैं
जे कवि रस में लीन हैं ॥ १॥

तत्रसर्वगुरुस्वरचित्रं यथा चौपाई
एथा देखैं रामा ऐसी। चन्दा आगे तारा जैसी २

टीका यहाँ सखी का वचन सखी सों अथवा स-
खी का वचन नायक सों राधिका के रूपाधिक्यवर्ण-
न में राधिका के देखेतें और जो रमा हैं नायका
सो ऐसी है जाति है जैसे चन्द्रमा के आगे तारा है
जाति हैं ॥ २॥

द्वितीयंसर्वलघुस्वरचित्रं यथा
कवित्त रमि रुचि मलिन ललित मुख निरख
त नलिन नयन सरवर नहि दरसिय। हसित लसित दु-
ति तड़ित दलित छवि मधुर अधिक रस अधर सु

सर सिय। उदित उरज वर कमल मुकुल सम तनु रु
ह अवलि उदर सर परसिय॥ चलहु ललन नव मि॰
लन समय अब वचनं अमृत मय तिय कछु।
वरसिय ॥ ३ ॥

टीका॥ यह सखी का वचन नायक सौं यह ना
यका विश्रब्धन वोढा ताको रूपाधिक्य वर्णन करै
है कैसी है नायका जाको सुंदर मुख देखत ही
चन्द्रमा की कांति मलीन होति है अरु नेत्र के वरा॰
री कौं नलिन नाम कमल तेन देखे अरु हसवे में जो
कांति लसै हैं ता करिके विजुली को प्रकाश मंद हो
जाय है अरु ओठ में मिठाई हू ते अधिक रस बहुत
है अरु उदित नाम प्रकाश भये जो उर मे कुचन के
अंकुर सो श्रेष्ठ कमल के मुकुल नाम कली के वर
वर हैं अरु तनु रूह अवलि नाम रोमावली उदर सर
नाम नाभि ताकों स्पर्श करति है अर्थात् तारूण्य
ता आई चलो हे नव लाल अब मिलाप को समयो
है या समय मे अमृत मय वाणी कछुक नायका
वोली हे अर्थात् हौं कियो है सो अब देर न कीजिये
चलिये हे लाल ॥ ३ ॥

निर्माञ्चक लक्षण दोहा युत अकार

सब वर्ण जहँ औरन भत्ता कोइ। वरणत कापूरा
जकवि निर्मांचि करै सोइ ॥ ५ ॥

टीका जहां अकार युत सब वर्ण होंय अर्थात
छुटे अक्षर होंय कोई मात्रा लगी न होय सो नि-
र्मांचिक चित्र जानिये ॥ ५ ॥

यथा कवित्त कनक लजत तन अमल बस
न सजल दन कमल नर कचन सघन घन। मलन
करत कर रदन चमक पर वचन मसमन बसत
अतन तन॥ नयन सयन सर गमन लसत गज च-
रण नरम छंद सरंग फवन वन। रमत्त गहन घ-
न चलत न धव अव तरल लखत पथ कहत अ-
पन पन ॥ ५ ॥

टीका यहाँ सखी को वचन नायक सौं नायि
का का रूपाधिक्य वर्णन करिके नायक कूं से जा
यो चाहत है यह नायका पर किया वास कसख्या
कैसी है की सुवर्ण लजात है जाके तन सों अरु त-
न यहाँ देहरी दीप कन्याय है जैसे चौखटके दीप
क सो भीतर अरु बाहर हू प्रकाश करै है तैसे
ही तन शब्द जो है सो पूर्व पद मे भी लगे है अरु
पर पद मे भी लगै है अरु तन मे निर्मल वस्त्र की

है सज्ञ अरु मुख कमल ते श्रेष्ठ है अरु केश के वरोवरी को नहीं है सघन घन अर्थात् श्याम घटा अरु मलिन करतु है किरण को दांतन के चमक के ऊपर अरु वोलनि जाकी रस करिके सहित है अरु मन में वास करत है अतन तन नाम कामदेव अरु नेत्र के कटाक्ष सर नाम वा- ण सदृश हैं अरु चलनि सोहत है गज कीसी अ- रु चरण नरम छद नाम कोमल पत्र से मुनि सर ग नाम रंग सहित हैं नाकी फवि वनी रही है सो नायका रमि रही है सघन वन में अर्थात् इस स- मय वहीं वैठी है चलिये क्यों नहीं हे भव नाम हे प्रिय अव शीघ्र ही देखि रही है तुमारी राह यह वात मैं कहूं हूं अपन पन नाम अपनी प्रति- ज्ञा करिके अरु द्वितीय अर्थ अपन पन नाम अपनो समझि के ऐसो समयो फेरि न मिलैगो यातें चलिये वन में वैठि के पथ को देखै है या ते पर की या जानिये ॥ ५॥

इति श्रीमत्काशिराजविरचितचित्र चन्द्रिकायां स्वरचित्रवर्णनंनाम तृ- तीयःप्रकाशः ॥ ३ ॥

अथ आकार चित्र लिख्यते ॥ अथ आकार बंध भेद कथनं तत्र प्रश्न: ॥

दोहा आकृति बंध विभेद तैं कहे चित्र है रीति। तिन के लखियत रूप सम कहौ भेद की नीति १

टीका आकार चित्र अरु बंध चित्र ए दोऊ चित्र एक रूप हैं तिनकों जुदे करिके दो रीति सूंक हे तिनको कहा भेद है ॥ १॥

अन्यच्च दोहा जो आकार सुबंध है बंध सुहै आकार। है प्रकार कैसे बनें कवि कुल करो विचार ॥ २॥

टीका जो रूप आकार को है सोई रूप बंध को है अरु जो रूप बंध को सो आकार को है यातें दो भेद काहे कूं किये एकहि भेद करो चाहिये याकों विचार करिके कहो ॥ २ ॥

तत्र उत्तरं दोहा जो आकृत विधि नैं रची ताही क्रम अनुसार। न्यास वर्ण को कीजिये सो जानो आकार ॥ ३ ॥

टीका जैसो आकार ब्रह्मा ने रच्यो है उत्पत्ति में ताही रीति सों अक्षरन कों धरिये अर्थात् वा-ही रीति सों पढ़ि वो बनें सो आकार चित्र जानिये ३

आकारको उदाहरण यथा दोहा
विधि कृत वारिज मे लखो प्रथम कोश पुनि पा-
त । त्योंही पढ़िये वर्ण तहें यह आकृति अवदा
त ॥ ४ ॥

टीका ब्रह्मा के स्वे नोकमल हैं तिन को उ-
त्पत्ति क्रम यह है कि प्रथम कोश उत्पन्न होत
हैं पुनि पत्र उत्पन्न होत हैं ताही क्रम तें प्रथम
कोश में वर्ण धरिये पुनि पत्र में पुनि कोश पुनि
पत्र ऐसें जहाँ अक्षर पढ़िये सो आकार चित्र
जानियें ॥ ४ ॥

बंधलक्षणं दोहा या क्रम कों तजि बुद्धि
बल कीजे और प्रकार । वर्ण न्यास जा चित्र
में सोई बंध विचार ॥ ५ ॥

टीका जो रीति प्रथम वर्णन करि आये हैं
ता रीति कों छोड़िकें जहाँ बुद्धि केवल तें और
रीति तें अक्षर धरिये ताकों बंध चित्र कह-
त हैं ॥ ५ ॥

बंध को उदाहरण यथा दोहा जहाँ
पत्र ते कोश में वर्ण पाठ की रीति । पद्म चित्र सो
बंध है सुकवि विचक्षन नीति ॥ ६ ॥

टीका जहाँ अक्षर प्रथम पत्र में धरिये पुनि कोश में धरिये पुनि पत्र पुनि कोश या रीति तें जो कमल चित्र कीजिये ताकों कमल बंध जानिये यह कवि की इच्छा के आधीन है जैसो कवि न बाह्यो तिहि रीति सूं कवि ने अक्षर धर्यो याते बंध चित्र जानिये अरु ब्रह्मा की सृष्टि की रीति करिके जाँ बनाइये ताकों आकार चित्र जानिये ॥ ६ ॥

दोहा इहि विधि और जानिये आकृत बंध विचार । काश्मिराज वर्णन कियो ग्रंथन को अनुसार ॥ ७ ॥

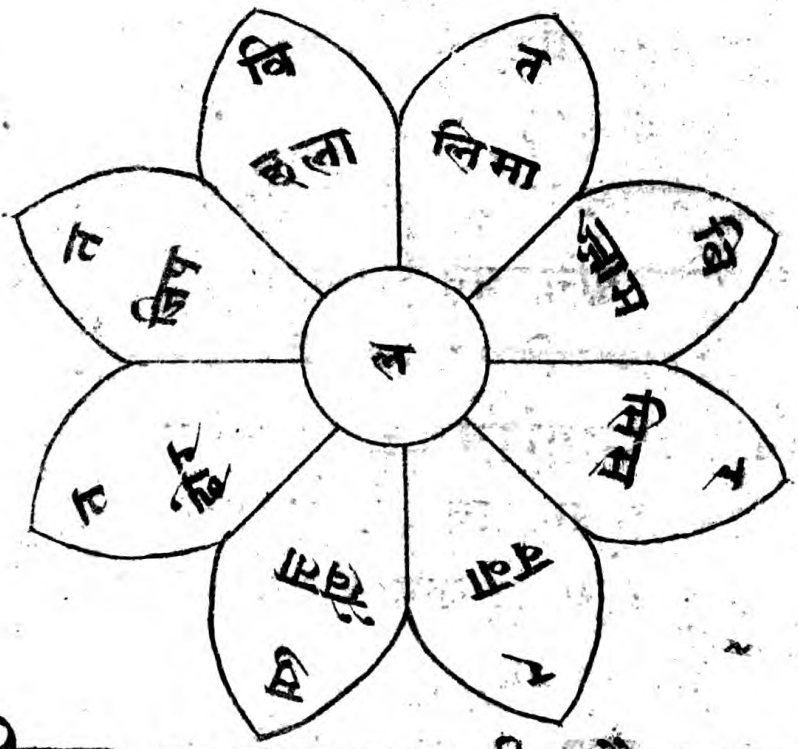
टीका या ही रीति ते औरहूं आकार बंध को भेद जानिये यह काश्मीराज कवि ने ग्रंथन की रीति करिके कह्यो है ॥ ७ ॥

अष्ट दल कमला कार लक्षणं दोहा

षोड़श वर्ण कुं एक करि धरो कोश में मित्र । त्रय त्रय वर्ण जुं पत्र में कमल अष्ट दल चित्र ॥ ८ ॥

टीका या अष्ट दल कमला कार चित्र में सोरह वार कोश को अक्षर आदि अरु अन्त करिके पढ़िये पत्र के तीन तीन वर्ण कों मध्य में देके सो कमला कार जानिये ॥ ८ ॥

यथा दोहा ललित माल लज्जा विमल ल-
सि रसलल वर बाल । लखै सुताल लहो तल ल
लित पलल छवि लाल ॥ ६ ॥



टीका यह नायका स्वकीया जोड़ा जल की-
ड़ा के सन्मुख ह्वै रही है ता समय मे सखी नायक सौं
नायका को रूपाधिक्य वर्णन करिके लेजा चा-
हति है ललित माल नाम सोभित है माला जाकी
अरु लज्जा विमल नाम जामें लज्जा निर्मल
है अरु लसिरसलल नाम सोभित है रस को वि
लास जामें ऐसी जो श्रेष्ठ बाल है सो लखै है,

तलाव को लहो तरल नाम ताकौं शीघ्रही प्राप्त होय लज्जित नाम लजाइ रही है पल्लल नाम कमल की कविलाल याते चलिये ॥ ९ ॥

कदली वृक्षाकारलक्षणं दोहा जड़िये पढ़िये स्यंभ लौ ग्रंथि पत्र पुनि ग्रंथ। ग्रंथि पत्र पढ़ि शिखरलौं कदली आकृत पंथ ॥ १० ॥

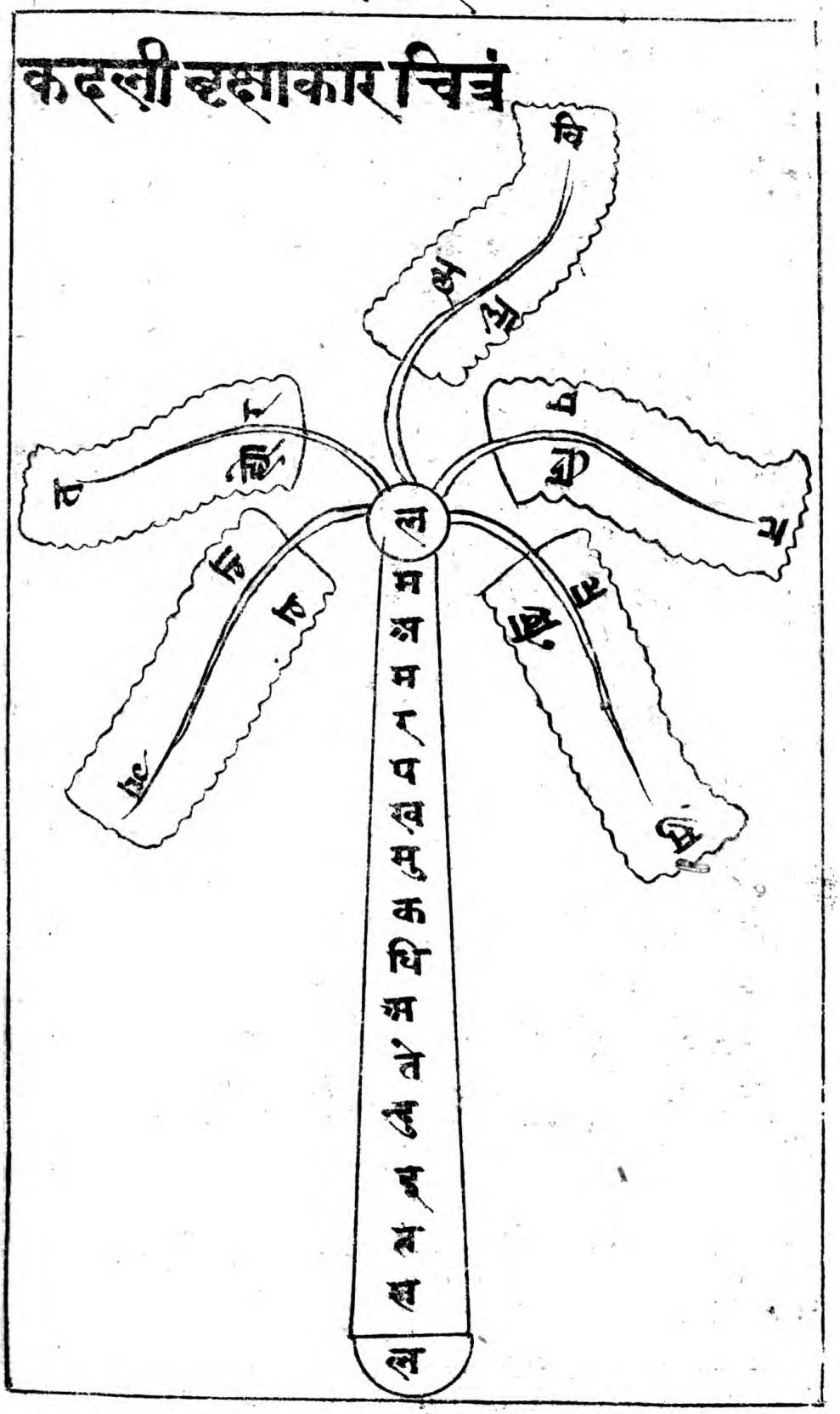
टीका प्रथम जड़ि के अक्षर पढ़ि के पुनि स्यंभ के अक्षर पढ़िये पुनि पत्रन की जो गांठि है तासें को अक्षर पढ़िये पुनि दक्षिण पत्र पढ़िये ग्रंथ ग्रंथ पढ़िये पुनि वाम पत्र पढ़िये पुनि ग्रंथ पढ़िये पुनि ग्रंथ पढ़िये पुनि दक्षिण पत्र पुनि वाम पत्र अंत में शिखर का पत्र पढ़िये यह कदली वृक्षाकार को लक्षण है ॥ १० ॥

यथा दोहा लसत इंदु तैं अधिक मुख परम अमल वह बाल। लखो सुताल लह्यो तरल लज्जित पल्लल कवि लाल ॥ ११ ॥

टीका यह नायका लक्षिता है अरु नायक हू लक्षित है तहाँ सखी को वचन सखीसों यह है कि सोभितहै इंदु तें अधिक मुख जाको ऐसी उज्वल निर्मल वह बाल है हे सखी देखो तुम सु-

चित्रं ३५

कदलीवृक्षाकारचित्रं



नाम सो नायका ने तलाव कों लख्यो नाम प्राप्त भई अरु तरल नाम चञ्चलहै लाल अरु लज्जि-त हैं पल्लव नाम कमल कों छवि जासों ऐसे जो लाल हैं तेऊ सरोवर के तट पै पहुँचे हैं लख्यो सुताल यह पद दुइं ओर लगै है ॥ १९॥

इति श्री मत्काशिराज विरचित चित्र चन्द्रिकायां आकार चित्र वर्णनं नाम चतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

अथ गति चित्र लिख्यते

अथ गति चित्र लक्षणं दोहा व्यस्त सम-स्त गता गतहि और अश्व गति जानि । दरि विधि रचिये छन्द जहँ सो गति चित्र बखानि ॥ १ ॥

टीका व्यस्त नाम खंड खंड करिके गता गत सम-स्त नाम सम्पूर्ण करिके गता गत अरु घोड़ा की ग-ति सों जहाँ छन्द रचिये ताकों गति चित्र कहतहैं १

तत्र पादानुपाद गतागत लक्षण दोहा सुलटे उलटे पाठ सौं अई पाद ते पाद। जहाँ पाद अ-नु पाद सो जानो विना विवाद १ **दोहा** अष्ट वार पढ़ि ग्रंथि कों आदि अंत्य मैं मिल। अई पाद की लिपि करो सो स्वस्तिक गति चित्र १ ॥

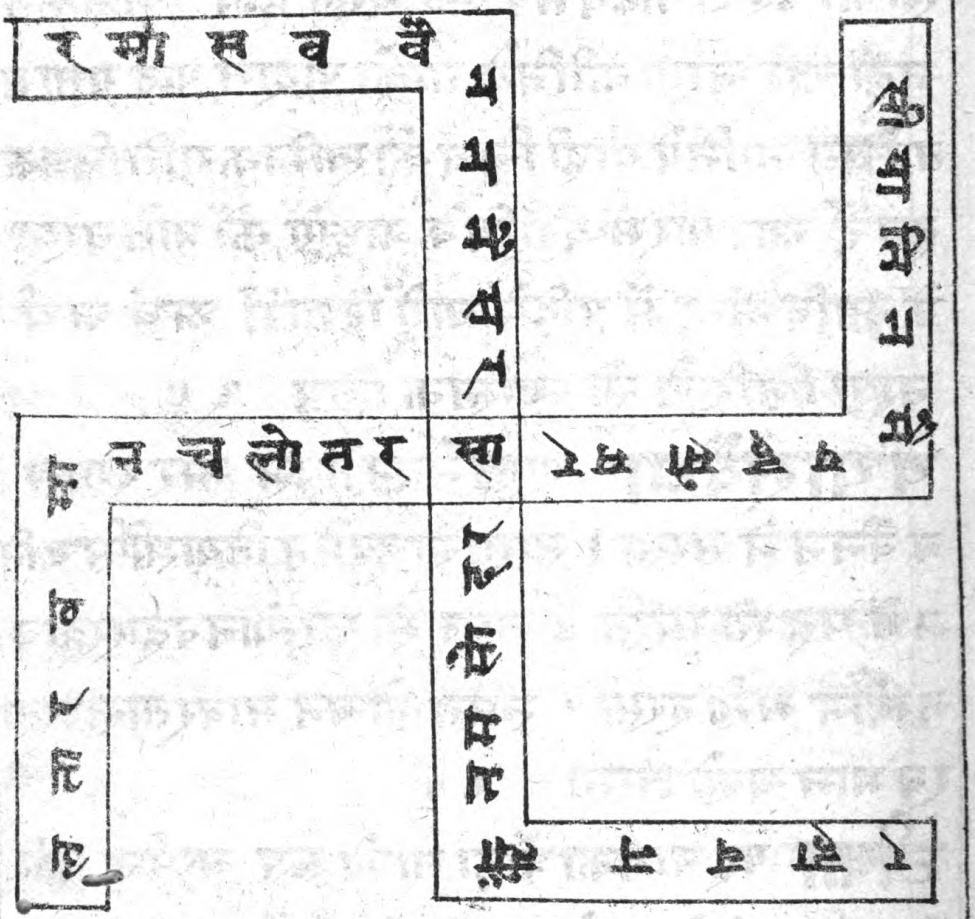
टीका जहाँ आधे चरण कौं सूधो पढ़िये बहुरि चरण कौं उलटो पढ़िये तब एक चरण होय या रीतितें जहाँ चार चरण कीजिये ताको पादानुपाद गुप्ता गत चित्र जानिये याही चित्र कौं स्वस्तिक गति चित्रक हत हैं आठ बार मध्य ग्रंथि के अक्षरों कौं प्रति चरण के आदि अंत्य में पढ़िये चारौं दिशा में अर्ध अर्ध चरण लिखिये सो स्वस्तिक चित्र ३ ॥

यथासंख्या सारस नैनन बैस मार २ मास व बैनन ने सरसा । सारस सो हयमेन तियासीसि यति न में यह सो मरसा ॥ सारद सो मन त्यौंन वहार रहाव नत्यौंन मसो दरसा । सारत लोचन मावर ताल ना रव मान चल्यो तरसा ॥ ४ ॥

टीका यह नायका भौंदा ताको रूप वर्णन करि के नायक कूं लेजायो चाहति है यहाँ सखी को वचन नायक सौं यह है कि सारस नाम कमल से नैन करिके वै नाम अवस्था करिकें बसि है मार नाम कामदेव के रमा नाम लक्ष्मी के समान है सब वचन करिके अरु वै नाम नीति करिके सरस नाम रस करिके सहित है सा नाम सो नायका रस नाम क्रीड़ा में सोहे है कामदेव की

चित्रं. ३८

स्वस्तिकगतिचित्रं



स्वस्तिके समान सीया नाम स्वकीया तिनके बीच में यह नायका सोमसा नाम सोमवल्ली की भूमि है अर्थात् अमृत की भूमि है सारद नाम सरद काल सहत है मन जाको अर्थात् उज्ज्वल है अरु जैसोही नूतन हार है रहावन सोंन मसी नाम रुको सो रह्यो है वन त्योंही रसा नाम रेख्योहै याहीतें स नाम सो नायका रत लोचन नाम आश-

क लोचन दे रही है अर्थात् वन मे रमि रही है मावर
ताल लता नाम मेरु तलाव अरु लतान की सोभा
मेरव नाम मेरो शरु मानिके हे नायक चलो तर
सा नाम शीघ्र चलो ॥ ५ ॥

अर्द्ध गता गत लक्षणं दोहा यही अर्धको
चरण कौं अन्य अर्ध सौं युक्त । अर्द्ध गता गत चित्र
सो सु कविन को यह उक्त ॥ ५ ॥

टीका याही पादानु पार गता गत चित्रके आ-
धे चरण कौं और आधे चरण सौं युक्त कीजिये ऐ-
से दै चरण लिखियें सूधे ताही कौं उलटे पढ़िये
तब चार चरण होय सो अर्ध गता गत चित्र जा-
निये यह सु कविन की उक्ति है ॥ ५ ॥

यथा सवैया सारस नैननवैवस मार सिंया ।
तिनमें यह सो मरसा । सारद सो मन त्यौं न वहार
लता रव मानचलो तरसा ॥ ६ ॥

टीका इन दोऊ चरण कौं उलटे जब पढ़िये
तब चारि वर्ण होत हैं या सवैया को अर्ध पादा-
नुपार गता गत चित्र में प्रथम ही अर्ध कह्यो-
है सो जानिये ॥ ६ ॥

तदक्षर तदर्ध गता गत लक्षणं दोहा

उलटे सुलटे पाद में वर्ण अर्थ जहं एक । जानु गता गत चित्र सो कवि करि कह्यो विवेक ॥ ७ ॥

टीका जहां उलटे हू पढ़ने में वैसे ही अक्षर आवें जैसे सूधे पढ़ने में आवे अरु दोऊन को अर्थ एक ही होय ताहू को गता गत चित्र जानिये ॥ ७ ॥

यथा सवैया सारत लोचन मा वर ताल रमा सववैनन नै सरसा । सारस सो हय मैना तिया सी रहावन त्यों न म सो दरसा ॥ सारद सो मन त्यों नव हार सिया तिन में यह सो मरसा । सारस नैनन कैन समारल तारव मान चलो तरसा ॥ ८ ॥

टीका या सवैया को अर्थ पादानु पाद गता गत चित्र में प्रथमही कह्योहै सोजानियो ॥ ८ ॥

द्वितीय गताऽगत लक्षणं दोहा एकअर्थ पद भिन्न जहां उलटे सुलटे बीच । सोऊ गता गत चित्र है कहत सुकवि रस सींच ॥ ९ ॥

टीका जहां सूधे उलटे पढ़ने में अर्थ तो एकही होय अक्षर दो तरह के होंय सोऊ गता गत चित्र जानिये ॥ ९ ॥

यथा सवैया सारस सौं सर सार व मावर सो·

मस मास मसी तन सो॥ पारद ते दृग पाचख मंख च कोमल आलम कोनन को भारद सादर भा भर सौरभ यौं नव जोवन जो ससजो ॥ हार सुधा सुरझा गल में लगा त्यौं गन नैन गलोर र लो ॥ १० ॥

टीका यहाँ जो सखी की उक्ति नायक सौं होय तौ स्वकीया पर कीया दोउ सम्भव है अरु जो नायक की उक्ति दूती सौं होय तौ नायका पर कीया जानिये सारस सौं सरसा नाम कमल हू सैं अधिक है अरु रवभावर नाम गृह की संपति श्रेष्ठ है जा की अरु सोम नाम चन्द्रमा को समा नाम समया अर्थात् पूर्णी मासी ताके समसो नाम समान तासौं तन सो नाम विस्तार को भा न है सो नायका अरु पारद ते दृग्ण नाम पारे हू ते अधिक चञ्चल है अर्थात् सुग्धा है अरु चख मे खच कोमल नाम नेत्र मे जाके कोमलता खचित है रही है अरु आलम को मन को नाम लोक के कौंनेन में कोई नहीं है यहाँ काकु जानि ये अरु भारद नाम भारदेन वारी है सादर भा नाम आदर सहित सोभा जाको अरु भर सौरभ

नाम अतिश्य करिके सुगंध है नामे अरु यौं नव जोवन नाम या प्रकार ते नूतन यौव न को जो रस जो नाम उमंग सजि रही है अरु हार नाम माला सुभा सुरहा नाम सुंदर भासि रही है गलमेलगा नाम गले में लगि कै त्यौंना म तैसेंही गन नाम समूह नौनग नाम न- वरत्न की लोरलो नाम लरी मिलि रही है या- को भावार्थ यह है कि ऐसी है यह नायका कि- जाके सर्व उपमामे संसार में बराबरी को दूसरो नहीं है ॥ १० ॥

भिन्नपदार्थगतागत लक्षणं दोहा

उलटे सुलटे पाद में अर्थ और पद और । यहौ गता गत चित्र है कहत सुकवि सिर मौर ॥११॥

टीका जहाँ सूधे अरु उलटे दोऊ प्रकार के पदि के में भिन्न अर्थ होय अरु भिन्न पद होंय सोऊ गता गत चित्र जानिये ॥ ११॥

यथा सवैया नैनन बैवर हार सुभा सत- सारस यों रस से ननमा। मैन तियासि लसी सब भासुर चीजस जोवन भार समा ॥ है नव नौ नग बेसर भासिन लाल लगवो यहि सार रमा । से रस

जीन चलो तरभौनु सु मानत जो कुल सो तन मा ॥ १२ ॥

प्रतिलोम यथा सवैया मानत सो लहु जोतन मा सुनु भौरत लोचनजीससे। मार रहा हिय खोल लला नमि भास्स वेरान नौवन है ॥ नास भा नव जो सज चीर सुभाव स सील सीया सिन में मानन से सर यौं सरसा तस भासु रहा रव बैन ननै ॥ १३ ॥

अनुलोम टीका यह नायक मानी है ता सो सखी की मान मोचन कराय वे में उक्ति यह है कि कैसी है नायका नेत्रन करिके अरु वै नाम अवस्था करिके श्रेष्ट है अरु हार सुंदर भासत है सारस नाम कमलन को अरु या भाँति सों र स हैं कटाक्षन के मा नाम मध्य में अरु काम दे व की तिया सी लसी नाम सोभित्त भई है संपूर्ण भा नाम कांति करिके सुरवी यस नाम सुंदर रुचिरई यस योवन के भार नाम अतिसय के समय में अर्थात् योवन के भार के समय के ज स में रुचिरई है अरु है नवीन नव रंग की वे स र ना को ऐसी भामिनि है नायका है लाल देखो

यह रमणा नाम लक्ष्मी को तुल्य है अरु सैरस जी नाम सैल सजि रर्द है नचलो नाम नहींचलो गे तुम कहा यह काकु अर्थात् चलोही तर ना म शीघ्रही भौनसु नाम भवन सुंदर को मान को त्याग करो हुलास करो तन मैं ॥ १२॥

प्रतिलोम टीका यह नायका पर कीया नायक पक्ष की दूती की उक्ति नायक सौं यह है कि मानत सो नाम सो नायका मानति है ताकौं तु म लहो जो तुम्हारे तन में वसत ही अरु जाकौंसु नि के तुम रतलोचन भौ नाम भये हो अर्थात् जाको गुण रूप सुनि के आरक्त लोचन भये होसो नायका अब मानति है अरु जैसरसे नाम जा नायक में तुम्हारो जीव लालचै है मार रसा हिय खोल लला नाम हे लला तुमारो जो हृदय है सो कामदेव की पथ्वी है ताकौं खोलो अर्थात् अप ने मनोरथ कौं सुफल करौ अरु तैसेही नमि भारस वेगन नौवन है नाम भारसौं अर्थात् फल पत्र के बोझ सौं संपूर्ण झुकि रह्यो है ऐसो गन नीय वन है अर्थात् संकेत स्थल के नायक है मास रमा नाम लक्ष्मी के तुल्य है कांति नामैं

नव जो सज चीर नाम नूतन जो है चीर ताकी है सज जाके अरु सुभाव सुशील नाम स्वभाव करिके अरु सुशीलता करिके सीया तिनमें नाम स्वकीया जो तिय है तिन में हैं याको आसय यह है की है तो पर कीया परन्तु स्वभाव सुशीलता करिके स्वकीया के समान है यह परकीया तें विशेष गुण है अरु मानन सैं सरयों सरसा नाम या भांति सरोवर जल करिके सहित है । जाके देखेतें मान दूर होत है अरु तैसैंही भासि नदै रह्यो है शब्द बैननसैं नाम वीणानिकी नीति करिके याको भावार्थ यह है की ऐसी जो नायका है ताके संग विहार करै अरु उद्दीपन सामग्री हूं सब सानुकूल है ॥ १३

अथ भाषांतर गतागतलक्षणं दोहा सुलटे भाषा और है उलटे भाषा और। भाषांतर यह चित्र है सुकवि कहत करि गौर ॥ १४॥

मध्य पंक्ति अर्ध पंक्ति पदि दोहा डमरू चित्र। मध्य पंक्ति करथ उलटि पढो फारसी मित्र ॥ १५॥

टीका जहां सूधे पाठ में और देशी की भाषा होय अरु उलटे पाठ में और देश की भाषा ।

होय सो भाषांतर गता गत चित्र जानिये ॥ १४॥
यहाँ दुसरू बंध चित्र कियो है तामें जो मध्य की
पंक्ति है ताकों सूधी रीति सों पढ़िये अरु ताके नी-
चे की जो पंक्ति है ताहू को सूधी रीति सों पढ़िये
तब भाषा दोहा होत है अरु मध्य की पंक्ति जो है
ताको उलटि के पढ़िये अरु ताके ऊपर की जो
पंक्ति है ताहू को उलटी रीति सौं पढ़िये तब फ़ार-
सी को बैत होत है ॥ १५॥

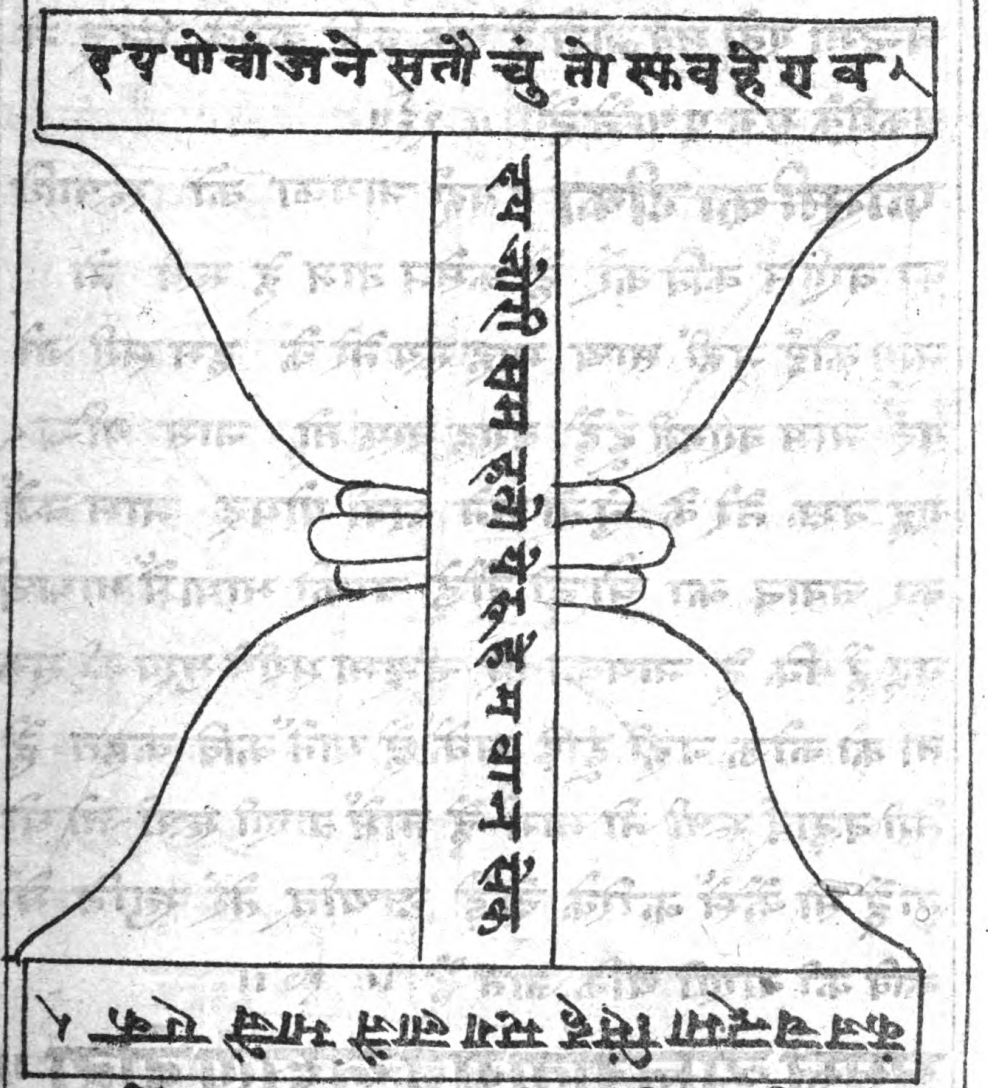
यथा दोहा॥ दय जोरी सम हतो येरू हेमवा
न सेक। कंज चन्द्रमा सिंहू सय ताडै भजै एक १६

यथा फ़ारसी कीबैत कसेन वाम हे रुये
तो हस्त्री जोयद । वरेह वस्क तो चुं तो सनेज
बाँपोयद ॥१७॥

दोहा कोटीका यहाँ सखी को वचन सखी
सौं नायका स्वकीया को रूपा धिक्य वर्णन करै।
है कि दय जोरी नाम दयी है यह जोड़ी सम।
हतो नाम महत्व करिके जो सहित है जो ईश्वर
चिन्हने अरुये नाम यह रू नाम रुद्र अरु हे-
म नाम सुवर्ण अरु बाण नाम तीर अरु।
सेक नाम सिंचन अरु कमल अरु चन्द्रमा

चित्रं ४७

डमरू गति चित्रं



अरु सिंह अरु मृग एक तो लक्षित होत है अ-
रु एक भाजि जात हैं या को आसय यह है कि
यह जोड़ी ईश्वर ने ऐसी दई है हे सखी जा जा-
यका के कुच सों रुद्र लक्षित होत हैं तन की कां
ति सों सुवर्ण कटाक्ष करिके बान रूप करिके

अमृतसिंचन चरण करिके कमल सुख करिके चन्द्रमा एतो सब लागे हैं अरु कटि करिके सिंह ने थकरिके मृग ए भाजे हैं ॥ १६॥

फारसी का टीका ॥ यहाँ नायका को रूपाधिक्य का वर्णन कवि करे है कसेन वाम हे रूये नो नाम कोई नहीं साथ माह रूय तेरे के हम सरी जो यद नाम बराबरी ढूंढे बराह वस्फ तो नाम वीच। राह वस्फ तेरे के चुंतो सने जबां गोयद नाम क्यों कर जवान का घोड़ी दौड़े याको भाषामें भावार्थ यह है कि हे नायका तेरे चन्द्रमा सरीषे मुख की समना को कोऊ नहीं ढूंढि सके है यातें कवि कहत है तेरी बड़ाई रूपी जो मार्ग है तामें वाणी रूपी जो घोड़ा है सो कैसें करिके दौड़े अर्थात् तेरें स्तुति में कवि की वाणी थकि जात है ॥ १७॥

समस्त व्यस्त गतागत लक्षणं दोहा ॥

जहँ अखंड पुनि खंड को होइ गतागत मित्र। ताको कविकुल कहत हैं व्यस्त समस्त सुचित्र ॥१८॥

दोहा ॥ चौपाई के अर्द्ध ते कहत अर्ध जहं चारि। नव कोष्टक गति चित्र यह सु कविनकह्यो विचारि ॥ १९॥

टीका जहां समस्त पद कौं पढ़िये ताको उल्टि के पढ़िये सो तो अखंड गता गत्त अरु जहां खंड खंड पढ़िये सो खंड गता गत्त ताही कौं व्यस्त समस्त समस्त गता गत्त चित्र कहत हैं । १८ जहां आधी चौपाई कौं नव कोष्टानि में लिखिये ताकौं सूधी रीति सौं पढ़िये पुनि उलटि के पढ़िये फेरि खड़ी पंक्ति पढ़िये पुनि ताकौं उलटि के पढ़िये व चौपाई के अर्ध निकसत है चारि ताकी है चौपाई जानिये ॥१९॥

यथा चौपाई सीता सोभा रमा सयासी । सीया रमा रमा सो तासी ॥ २० ॥

व्यस्तं यथा चौपाई सीभा सता रमा सो मासी । सीमा सोया रता सभासी ॥ २१ ॥

नवकोष्ठगतिचित्रम्

सी	ता	सो
भा	र	मा
स	या	सी

समस्त टीका यहां कवि की उक्ति यह है कि सीता जी की जो सोभा है सो रमा नाम

लक्ष्मी तामे सयासी नाम विराज मान सी है अर्थात् सीता की सोभा लक्ष्मी मे विराजमान सी है पाते सीता लक्ष्मी सों अधिक हैं सीया नाम स्वकीया समार नाम काम कीके सहित अर्थात् प्रौढ़ा तिन की जो भा है कांन्ति सो तासी नाम तैसी है यहाँ काकु अर्थात् ताके तुल्य नहीं हैं याको भावार्थ यह है कि और जो स्वकीया प्रौढ़ा हैं तिनकी जो कांति है सो सीता के समान नहीं है ॥ २० ॥

व्यक्त टीका यहाँ हूँ कवि की उक्ति यह है कि सी नाम सीता ताकी भास नाम कांति सो कैसी है तार नाम अति उच्च है अर्थात् परम उत्कृष्ट है यासो नाम या कारण ते मासी नाम लक्ष्मी के समान है सीमा सो नाम मर्यादा जो है सो यारता नाम यह-जो लता है सीता ताकी सभासी नाम कचहरी सी है याको भावार्थ यह है कि सीता की जो उच्च सोभा है सो तौ लक्ष्मी के समान संभव है परन्तु मर्यादा जो है सो तौ सीताही की सभा है अर्थात् मर्यादा सीता ही में है अन्यत्र नहीं है ॥ २१ ॥

सर्वतोभद्र गति लक्षणं दोहा

चहूँ ओरतें बाँचिये पाठ एक सो होय। ताहि
सर्वतो भद्र कहि वर्णत हैं कवि लोय॥ २१

टीका चारौं ओर ते पढ़ने में एक सोइ पाठ
आवै अथवा एक पंक्ति छोड़िके दो छोड़िके तीन
पंक्ति छोड़िके पढ़िये तहाँ हूँ चारों दिशा नि ते एक
सोई पाठ होय ताकौं सर्वतोभद्र चित्र कहत हैं।

धा	रा	ती	र	र	ती	रा	धा
रा	सु	भा	सु	सु	भा	सु	रा
ती	भा	र	मा	मा	र	भा	ती
र	सु	मा	न	न	मा	सु	र
र	सु	मा	न	न	मा	सु	र
ती	भा	र	मा	मा	र	भा	ती
रा	सु	भा	सु	सु	भा	सु	रा
धा	रा	ती	र	र	ती	रा	धा

यह चौंसठि कोष्ट में लिखो जात है याही चित्र
कौं जहाँ सोरह कोष्ट में लिखिये तहाँ पादानु

पाद गता गत चित्र जानिये ॥ २१

यथा अनुष्टुप् धारा तीर रती राधा रासु भासु सुभा सुरा। तीभा रमा मार भाती सु मान न भासुरा ॥ २२ ॥

पादानुपाद गता गतचित्रं

धा	रा	ती	र
रा	सु	भा	सु
ती	भा	र	मा
र	सु	मा	न

टीका यहाँ सखी को वचन सखी सौं रास समय में धारा तीर नाम प्रवाह के तट में रती राधा नाम प्रीति है राधा की रासु भासु नाम रास का जो प्रकाश ता में सु नाम सुष्ठु भासुरा नाम देदीप्य मान है ती नाम स्त्री भा नाम कांति रमा नाम लक्ष्मी मार नाम काम देव भाती नाम प्रकाश रसुमान नाम रस रूपी जो ताल का विश्राम नमा नाम नम्र सुर नाम षड़ जादिक स्वर याको भावार्थ यह है कि यमुना का जो प्रवाह है ताके तट प्रीति है जाकी ऐसी जो है राधा सो रास का जो प्रकाश है तामें भली प्रकार सो दे दीप्य मान है अरु स्त्रीन के मध्य में कान्ति करिके लक्ष्मी है अरु काम देव कौं प्रकाश करे ऐसे रस

कसिके युक्त जो ताल को विश्राम तामें नम्र है सुर जाके अर्थात् हे सखी ऐसी राधा गान करै है ॥ २३ ॥

द्वितीय सर्वतोभद्र गति लक्षणं दोहा

दोदो अक्षर कोड़िये जोड़ि दीजिये अंत। यहू सर्वतो भद्र है वरणत कवि गुण वंत ॥ २४ ॥

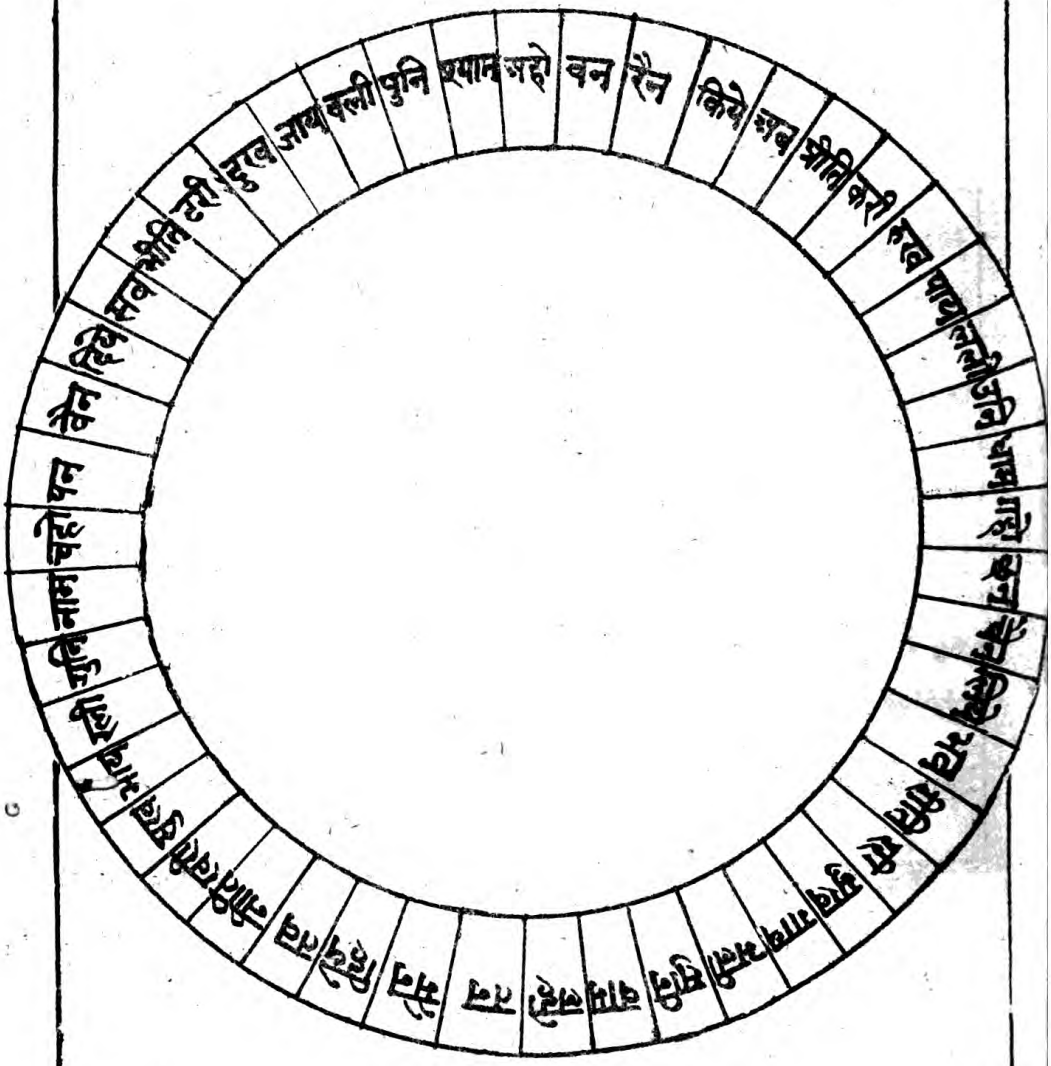
टीका या सर्व तोभद्र कों मंडला कार लिखिये आदि सों दो दो अक्षर कोड़िके पढ़िये छूटे जो अक्षर हैं तिन्हें अन्त में जोड़िये तहाँ अड़ तालीस सवैया निकसत है सो जानिये ॥ २४ ॥

यथा सवैया श्याम अहो वन रैन किये भव भीति करी सुखपाय लली उनि। धाम राहो कुन चैन लियेभवरातिरीसुखगाय भली सुनि॥ बाँसे लहो तन में न दिये तब नीति खरी सुख भाय रली गुनि। नाम चहो पन चैन दिये सब भीति टरी दुःख जाय बली पुनि ॥ २५ ॥

टीका या सर्व तो भद्र चित्र को अर्थ सन धेनु बंध में कहेंगे ॥ २५ ॥ २५ ॥ २५ ॥

चि·चं·५४

सर्वतो भद्र गति चित्रम्



रथगति अश्वगति लक्षणं दोहा

ढाई ढाई घर सों अक्षर लीजै बाँचि। जहाँ छन्द दूजो बने सो रथ गति हैं साँचि ॥ २६ ॥

टीका जहाँ ढाई ढाई घर सत रंज के घोड़ाकेरी-ति सों अक्षर पढ़िये जा घर में घोड़ा गयो होइ ताघ-रमें फेरि न जाय चौंसठ घरन में एक हू घर बाकी न रहै ऐसे पढ़ने में जहाँ दूसरो छन्द निकसै सूधे पढ़-नेमें दूसरे छन्द निकसे सो अश्व गति चित्र घोड़ा फेरवे के लिये अश्व गति चित्र में अंक दिये हैं वा रीति सों पढ़िये ॥ २६ ॥

यथा रथगति पद्धटीका छन्द सुनच-नि नत नर सुन तय रवल कन। वच लज सकतज पर सुरु मल पन। वसु रव नव नर ॥ सुयसल सल वन लज रत निकसत सिज तस मिडि यन ॥ २७ ॥

यथा अश्वगति पद्धटीका छन्द

सुतन कनक रुच चरन जलज रसु। लपन नि-स पन तन रल मयन वसु ॥ वसन वनक सज रस-न तड़ित जसु। रसिय वनिय नव सरल मिलत लसु ॥ २८ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २८ ॥

॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥

रथगति अश्वगति चित्रं

१सु	२न	३च	४नि	५न	६त	७न	८र
९सु	१०न	११त	१२य	१३व	१४ल	१५क	१६न
१७ब	१८च	१९ल	२०ज	२१स	२२क	२३त	२४ज
२५प	२६र	२७सु	२८रु	२९म	३०ल	३१प	३२न
३३ब	३४सु	३५द	३६व	३७न	३८व	३९न	४०र
४१सु	४२य	४३स	४४ल	४५स	४६ल	४७व	४८न
४९त	५०ज	५१र	५२त	५३नि	५४क	५५स	५६त
५७सि	५८ज	५९त	६०स	६१मि	६२दि	६३य	६४न

रथगतिटीका यहां सखी का वचन सखी सो रास समय में श्री कृस्न को गान वर्णन नृत्य के समय में यह है कि सुन चनि नाम सुंदर जो नृत्य है ताकरिके नतनर नाम वस किये हैं मनुष्य जिनने गुरु वाही नृत्य कौं सुन नाम सुनि करिके तय नाम ताप कौं प्राप्त भये खल नाम

कंसादिक दुष्ट जन ते कन नाम हूकभये अर्थात् खल प्राणिन कौं दुख भयो अरु ता नृत्य में वच नाम वचन अर्थात् गान सो कैसो है गान लज सक लज नाम लाज अरु शंका इन कौं त्याग किये हैं याही ते पर सुरु नाम और गान कर्तानि के सुरु न कौं मलपन नाम मलिनता देत हैं अरु वसुदव नव नर नाम कुबेर के बनावने वारे ऐसे श्रीकृस्न नर हैं तिन के गान अरु नृत्य कै सुजस नाम सुंदर जस करिके लस लवन नाम सोभित भयो है वंदावन पुनि लजरतनि नाम लज्जा में रत हैं ऐसी जे स्वकीया तिनहि कसत नाम आकर्षण करत है सिजत नाम थ्रिजत है अर्थात् रचत है स नाम सम्यक्चकोरेण अर्थात् भली तरह सौं मिडियन नाम मिलन अर्थात् स्वकीया न के संग मिलाप रचै हैं ॥ २७ ॥

अश्वगतिटीका यहां सखी को वचन नायक सो नायका सुधा को रूपा धिक वर्णन करिके मिलाप करायो चाहति है सुतन कनक रुच नाम सुंदर है शरीर में सुवर्ण की

सी रुचि जाके अरु चखन जल जरसु नाम नेत्र कमल नि में रस है जाके अरु लपननिसप नत नाम मुख ते चन्दुमा हीन है जाके अरु त रल मयन वसु नाम जासें चञ्चल काम देव ने वास कियो है अरु बसन वनक सज नाम जा के वस्त्र के बनाव की सज है रही है अरु दशन तड़ित जसु नाम जाके दंतन में बिजुली को ज स है अर्थात् बिजुली की सो प्रकाश है रसिय नाम है रसिक वनियनव नाम वह नवीन दु लहिन है पुनि कैसी है कि सरल नाम निकप ट है मिलतल सु नाम तासों मिलिते भये तु म सोभित हो अर्थात् या समय में मिलो यह नाप्का विस्वध न योढ़ा ॥ २८ ॥

इति श्री मत्काशिराज विरचित चि त्र चन्द्रिका यां गति चित्र वर्णनं नाम पंचमः प्रकाशः ॥ ५ ॥

अथ वंध चित्र लिख्यते

वंध चित्र लक्षणं दोहा आकृत अथवा गुननि सों कवि वाँधै जहँ छन्द। वंध चित्र तासं कहत जिन की बुद्धि अमंद ॥ १ ॥

टीका एक आकार बंध दूसरा गुण बंध ये दोभेद बंध चित्रमें हैं आकार बंध वह जानिये जहां कवि पुष्प फलादिक इन की तसवीर लिखिके तामे अक्षर भरे सो आकार बंध अरु जहां कवि तसवीर न बनावे नाम बंध करै अथवा भाषा बंध करै अथवा जैसे काम धेनु सो जो मागो सो देत है तैसेही एक छन्द बनाइये जो छन्द मागिये सो छन्द वामे सो कहै तो यह काम धेनु का गुण बंध भयो याही रीति ते और ह गुण बंध जहां कवि करै ताकों गुण बंध चित्र कहत है जिन की बुद्धि मंद नहीं है ते ॥ १ ॥

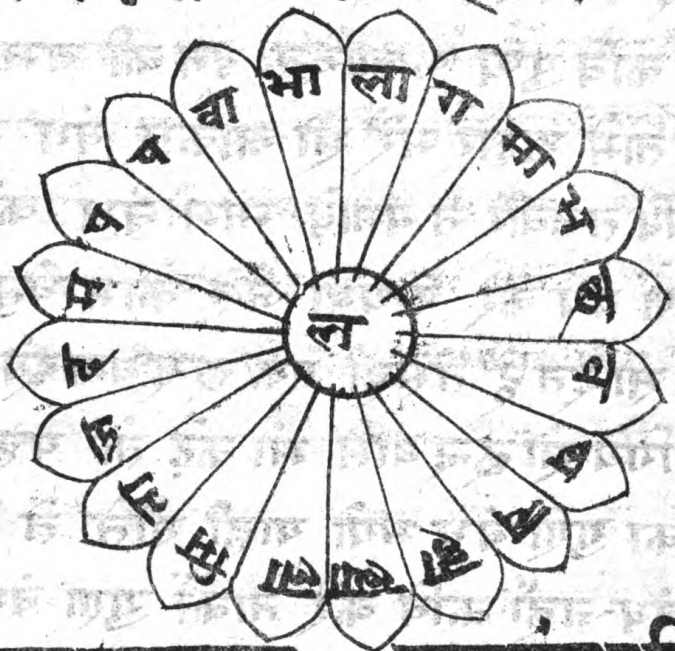
कमलाकार बंध लक्षण दोहा प्रथम पत्र पुनि कोश पुनि पत्र कोश पदि मित्र। कवि को विद सब कहत है कमल बंध यह चित्र ॥ २ ॥

टीका पहिले पत्र का अक्षर पदिये पुनि कोशका अक्षर पदिये पुनि पत्र पुनि कोश या रीति तें जहां पदिये तहां कमला कार बंध चित्र जानिये ॥ २ ॥

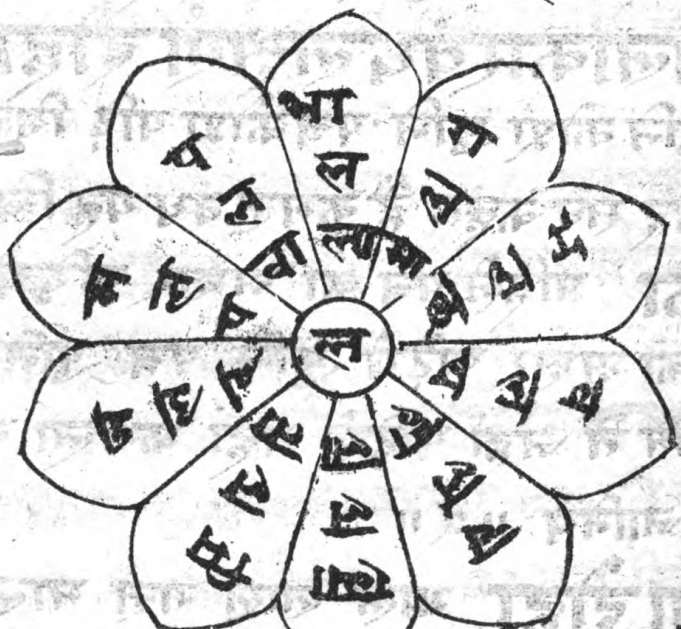
यथा दोहा भल लाल गल माल भल कुलवल चले चल हाल। ख्याल लाल मिल

नाल जल दल मल फल फल वाल ॥ २ ॥

विंशति पत्रकमलाकार बंध चित्रम्



दशदलकमला कारबंधचित्रं



टीका यह नायका परकीया नाकों सखी

अभिसार करणो चाहति है भाल लाल नाम मस्त
क में लाल मणि है अरु गलमाल भल नाम
गले में भली माला है याते अब छल बल नाम
प्रपञ्च को बल करिके संकेत स्थल मे शीघ्रही च
ल तहाँ लाल सौं मिल के तलाव के जलमें ख्या
ल नाम क्रीड़ा अरु दलमल पलपल बाल नाम
है बाल लाल को छिन छिन के अंतर सो दृढ़
आलिंगन करो यह दलमल पद को आशय
है ॥ ३ ॥

चामरा कारबंधलक्षणं दोहा ॥ घुंडी
कगनी खड वरन सेष अर्द्ध धरु दंड। केश वर्ण
की दंड के सिखर वर्ण सौं मंड ॥ ४ ॥

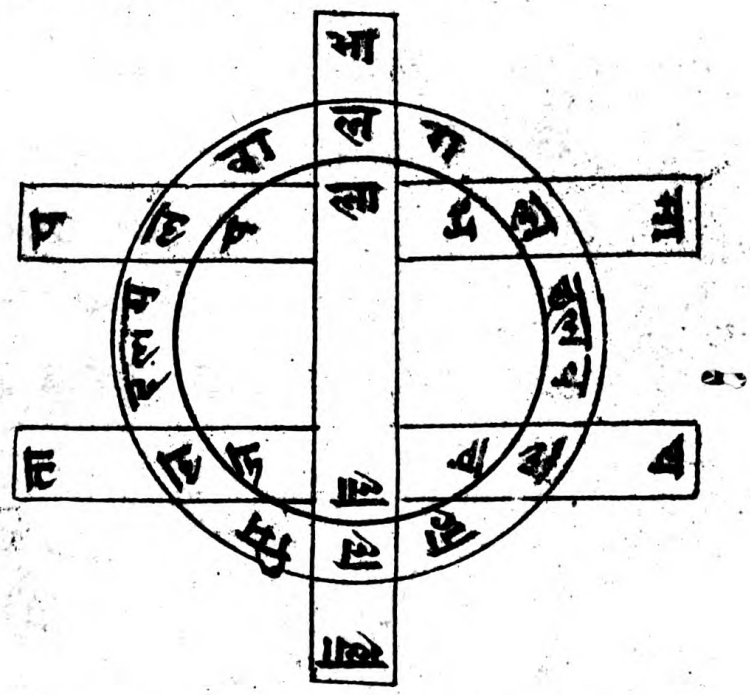
टीका ॥ चामरा कार चित्र लिखिये तामे प्रथम
घुंडी का अक्षर पढ़िये फिर कंगनी का मध्य का
अक्षर पढ़िये पुनि वाम कंगनी का अक्षर पढ़िये
पुनि मध्य पुनि दक्षिण कंगनी पुनि मध्य ए ष
ट वर्ण घुंडी कंगनी मे भये वाकी अर्द्ध के अक्ष
र दंड में पढ़िये पुनि केश के एक एक अक्षर
दंड के शिर सौं मिलाय के पढ़िये यह चामर बं
ध के अक्षर धरि वे की रीति है सो जानिये ॥ ५ ॥

चामरकार बंध चित्रम्


व
प
प
म
ह
ज
ल
ल
ल

री का नीचे का अक्षर पढ़िये पुनि कूंडि का अक्षर पढ़िये पुनि कूंडि पुनि कूंडि आड़ी। क्यारी के अक्षर को प्रथम रीति सौं पढ़िये दोहा के अंत को अक्षर कूंड के पहिले अक्षर में समाप्ति कीजिये सो हल की कूंड बंध जानिये ई

षष्ठा दोहा ॥ भाल लाल गल माल भल छल वल पल चल हाल। ख्याल लाल मिल ताल जल दल मल पल पल बाल ॥ ७ ॥



टीका ॥ यह हल के कूंड बंध चित्र को अर्थ कमल बंध चित्र में प्रथम कहि आये हैं सो जानियो ॥ ७ ॥

मुष्टिकाकारबंधलक्षणं दोहा ॥

कन अँगुली जड़ि मध्य नख मध्यरु घाई वांच।
नख हथेली मैं पदो मुष्टि बंध सो साँच ॥ ८ ॥

टीका॥ कनुगली अंगुली के जड़ि के पोरुवा को अक्षर पढ़िये पुनि वाके मध्य पोरुवा को अक्षर पढ़िये पुनि वाके नख को अक्षर पढ़ि पुनि वाही के मध्य को अक्षर पढ़िये अरु घाई का अक्षर पढ़िये पुनि दूसरी अँगुली का मध्य का अक्षर पढ़िये पुनि जड़ पुनि मध्य पुनि नख पुनि मध्य पुनि घाई या रीति तैं पाँचौं अँगुली पढ़िये बाकी के अक्षर हथेली मैं पढ़िये अंत को अक्षर कनिष्ठा के मध्य में पढ़िये सो कर मुष्टि बंध चिन्ह जानिये ॥ ८ ॥

कर मुष्टिका कारबंध चित्रं



यथा ॥ भाल लाल गल माल भल छल वल पल चल हाल। ख्याल लाल मिल ताल जल दल मल पल पल वाल ॥ ९ ॥

टीका ॥ या दोहा को अर्थ कमला कार बंध चित्र में कहि आये हैं सो जानिये ॥ ९ ॥

कमठाकार बंधचित्रलक्षणं दोहा

पुंख आई रेफा पढ़ो पुनि कमठा पदु मित्र। अर्ध पनच पुनि तीर पदु, कमठा बंध सु चित्र ॥ १० ॥

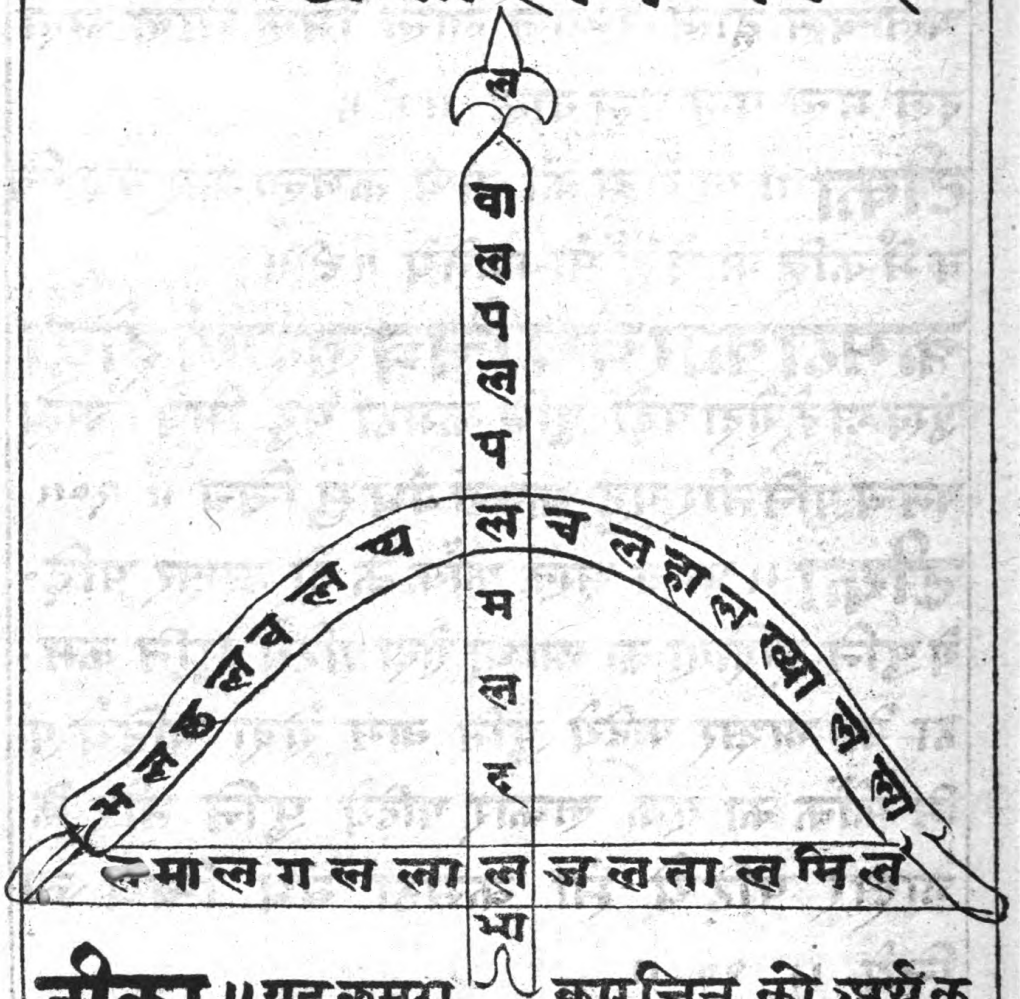
टीका ॥ प्रथम सर्के फौंक के दो अक्षर पढ़िये पुनि दक्षिण का आधा रेफा पढ़िये पुनि कमठा के अक्षर पढ़िये पुनि वाम रेफा पढ़िये पुनि फौंक का एक लकार पढ़िये पुनि तीर के अक्षर पढ़िये सो कमठा बंध चित्र जानिये ॥ १० ॥

यथा दोहा ॥ भाल लाल गल माल भल छल वल पल चल हाल। ख्याल लाल मिल ताल जल दल मल पल पल वाल ॥ ११ ॥

टीका ॥ यह कमठा बंध चित्र को अर्थ कमल बंध में कह्यो है सो जानिये ॥ ११ ॥

चित्रं. ६६

कमठाकारबंधचित्रम्



टीका ॥ यह कमठा कारचित्र को अर्थ क मलबंध में कह्यो है सो जानिये ॥ ११॥

त्रिपदी बंध लक्षणं दोहा ॥ आदि पंक्ति के वरण मधि पंक्ति वरण मिलि वाँच । ऐसे अंत्य रु मध्य मिलि त्रिपदी बंध सुसाँच ॥ १२॥

टीका ॥ जहाँ आदि पंक्ति के एक एक अक्षर कौं मध्य पंक्ति के एक एक ओर सौं क्रम सौं मिला

इकै बाँचिये वैसे ही अंत्य पंक्ति के अक्षरन कौं मध्य पंक्ति सौं मिलाइये सो विपदी बंध चित्र जानिये यह तीस कोष्ठ में लिखो जात है याही चित्र को नव पंदुरु कोष्ठ में दो दो अक्षर मिलाइ के लिखिये दो दो अक्षरन कौं वाही रीति सौं दो दो अक्षर मिलाय के बाँचिये सोइ विपदी बंध चित्र जानिये ॥ १२ ॥

यथा दोहा ॥ लला चारु चित चारु तिय पर मन रस अनुराग । कला चारु हित चारु हिय पर मन रस तनु राग ॥ १३ ॥

एकाक्षर विपदी बंध चित्रम्

ल	चा	चि	चा	ति	प	म	र	अ	रा
ला	रु	त	रु	य	र	न	म	नु	ग
क	चा	हि	चा	हि	प	म	र	त	रा

द्व्यक्षर विपदी बंधचित्रम्

लला	चित्त	तिय	मन	अनु
चारु	चारु	पर	रस	राग
कला	हित	हिय	मनु	तनु

टीका ॥ यहाँ सखी का वचन सखी सौं नायका

प्रौढ़ा का संयोग वर्णन में लला चारु चित्त नाम सुंदर है चित्त जिन को ऐसे तो श्री कृष्ण हैं ऋरु चारु तिय नाम सुंदर ही राधिका जी हैं ऋरु परम नरम ऋनुराग नाम इन को प्रीति कू उत्कृष्ट क्रीड़ा मय है ऋरु कला चारु हित नाम हित की जो कला है ऋर्थात् मृदु बोलन हसनादिक ते कूँ सुंदर हैं ऋरु चारु हिय नाम सुंदर है हृदय ऋर्थात् निष्कपट है ऋरु परम नरम नाम हे सखी मन कौं उत्कृष्ट प्रकार सौं रमा बनैं बारौं हैं तनुराग नाम शरीर को रंग जिन को ॥ १३॥

द्वितीय त्रिपदी यथा॥ भले भाग मेरे पिया आए सुख हित भोर। वसे दाग धोरे हिया ला ए नख छत कोर ॥ १४॥

द्वितीय त्रिपदी बंधचित्रं

भ	भा	मे	पि	या	सु	हि	भो
रे	म	रे	या	ए	ख	त	र
व	हा	धा	हि	ला	न	ख	की

टीका॥ यहाँ मध्या खंडिता नायका को वचन नायक सौं भले हैं भाग्य मेरे हे पिया तुम मेरे

सुख के लिये बड़े प्रात: काल ही आये अरु कंकण के राग धारण कियें हो अरु हृदय में नख क्षत की कोर लगाये भये हो या रूप तें तुम आये यातें मेरे बड़े भाग्य हैं ॥ १५॥

गोमूत्रिकाकारबंधलक्षणं दोहा

सूधी पंक्ति दुगल लिखो तिर्यक बाँचि सुजान।
सूधे तिर्यक शब्द इक गो मूत्रिका समान ॥१५॥

टीका ॥ दो पंक्ति सूधी लिखिये ताकौं सूधी रीति सो बाँचिये अरु दोनों पंक्ति के कोष्ठ के एक एक अक्षर अंतर देके बाँचिये टेढ़ी रीति सों दुहू रीति के पदि बे में जहाँ एकही शब्द निकसै ताकौं गोमूत्रिका बंध चित्र जानिये ॥ १५॥

यथा दोहा ॥ भले भाग मेरे पिया आए सुखहित भोर। बले दाग धारे हिया लाए नख क्षत कोर ॥ १६॥

गोमूत्रिकाकार बंध चित्रम्

भ	ले	भा	ग	मे	रे	पि	या	आ	ए	सु	ख	हि	त	भो	र
व	ले	दा	ग	धा	रे	हि	या	ला	ए	न	ख	क्ष	त	को	र

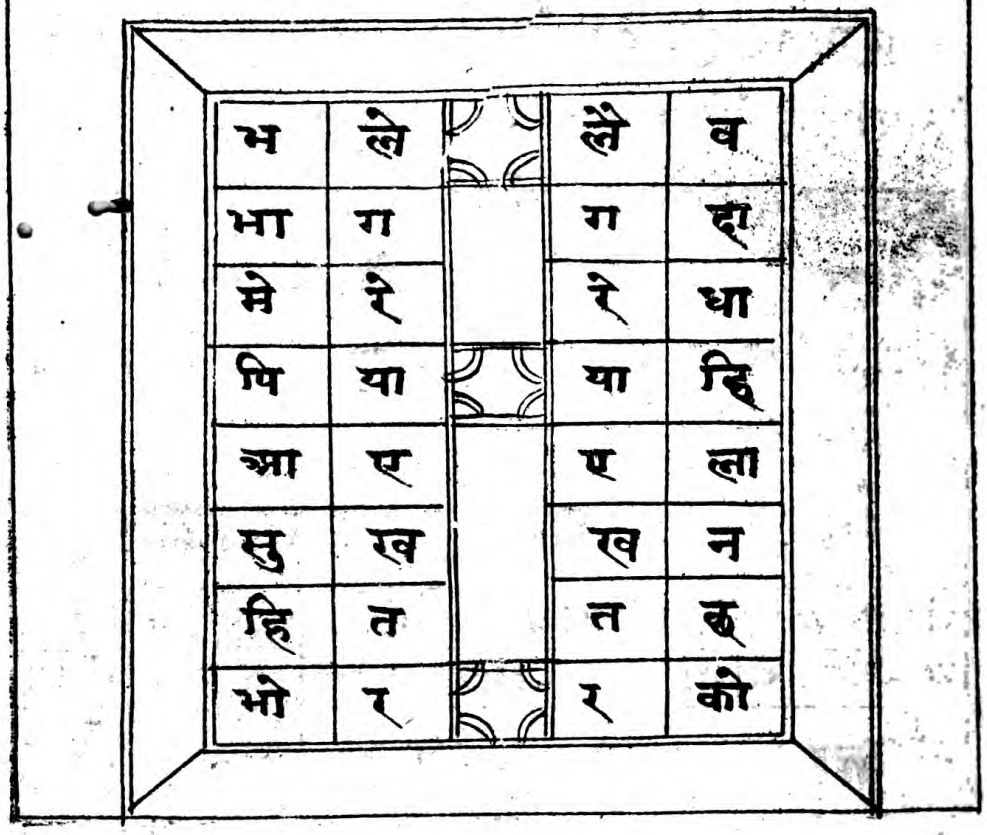
टीका ॥ या गोमूत्रिका बंध को अर्थ द्वितीय

विपरी बंध चित्र मैं कह्यो है सो जानिये ॥ १६ ॥

कपाट बंध लक्षणं दोहा ॥ सूधे दक्षिण प-
द पदो उलटे पदि पट वाम । ताहि कपाट सुबंध क
हि जे कवि गुन के धाम ॥ १७ ॥

टीका ॥ दक्षिण किवाड़ के पल्ला कों सूधी रीति सो पढ़िये अरु वाम किवाड़ के पल्ला के अक्षर कों उलटी रीति सों पढ़िये ताको कपाट बंध चित्र कहत हैं जे कवि गुन के गेह हैं ते ॥ १७ ॥

कपाट बंध चित्रम्



यथा दोहा ॥ भले भाग मेरे पिया आए सु-
ख हित भोर । बलै दाग धारे हिया लाए नख छ
त कोर ॥ १८ ॥

टीका ॥ या कपाट बंध चित्र को अर्थ द्वितीय चि
पदी बंध चित्र में कहि आए हैं सो जानिये ॥ १८

सरपत्र बंध लक्षणं दोहा ॥ चारि पंक्ति
लिख बाँचिये हय गति सौं प्रति चरण । शर पत्र
बंध सो चित्र है कहत सु कवि करि परन ॥ १९ ॥

टीका ॥ चारि पंक्ति करिके लिखिये सत रंज
के घोड़े की गति सौं पंक्ति के प्रथम प्रथम आ-
सन सौं दाई दाई घरन सौं पढ़िये ताको सर
पत्र बंध चित्र कहत हैं ॥ १९ ॥

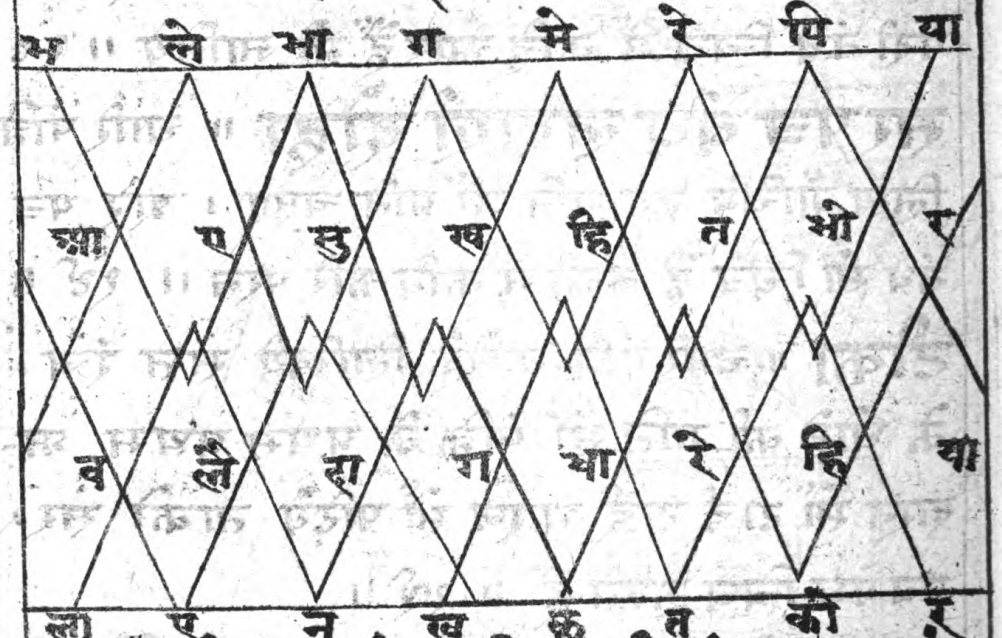
यथा दोहा ॥ भलै भाग मेरे पिया आए सु
ख हित भोर। बलै दाग धारे हिया लाए नख छ
त कोर ॥ २० ॥

अश्वगतिबंधचित्रं

	भ	लै	भा	ग	मे	रे	पि	या	
	आ	ए	सु	ख	हि	त	भो	र	
	व	लै	दा	ग	धा	रे	हि	या	
	ला	ए	न	ख	छ	त	को	र	

टीका ॥ यह सरपव बंध चित्र को अरु अश्व गति बंध चित्र को अर्थ द्वितीय त्रिपदी बंध चित्र मे कहि आए हैं सो जानिये ॥ २१॥

चटाईबंध चित्रं



मध्यादि मध्यांत्य त्रिपदी बंध लक्षणं

दोहा ॥ मध्य पंक्ति के वरण को आदि पंक्ति करु लीन। त्योंही मध्यरु अंत्य पदि त्रिपदी बंध प्रवीन ॥ २२॥

टीका ॥ मध्य पंक्ति के एक एक अक्षर कौं आदि पंक्ति के एक एक अक्षरन सौं मिलाइ के पढ़िये अरु तैसेंही मध्य पंक्ति कौं अंत्य की पंक्ति सौं मिलाइ के पढ़िये सो मध्य आदि मध्य अंत्य

विपरीत बंध चित्र जानिये ॥ २१॥

यथा दोहा ॥ हार भार सोहै हिये रस तर सीलो वैस । हास भास सो तौ हिते राग तज सी-लो वैस ॥ २२॥

मध्यादि मध्यांत्य विपरीतबंधचित्रं

	र	र	है	ये	स	र	लो	स	
	हा	भा	सो	हि	र	त	सी	वै	
	स	स	तौ	ते	ग	ज	लो	स	

टीका ॥ यह नायका मध्या धीरा ताकी उक्ति नायक सों हार को भार सोहै है तुमारे हृदय में याको व्यंग्य यह है कि हार को बोझ उतारो या कहने ते बिन गुन माल सूचित भई रस तर सीलो वैस नाम तुमारो यह भेष रस भर्यो है यातें रस चुवत है अरु तुमारे हास को जो प्रकाश है सो तो हमारो हित ही है राग तज सीलो वैस नाम तुमारी जस भरी अवस्था हमे रँगतु है अर्थात् बस करी है ॥ २२॥

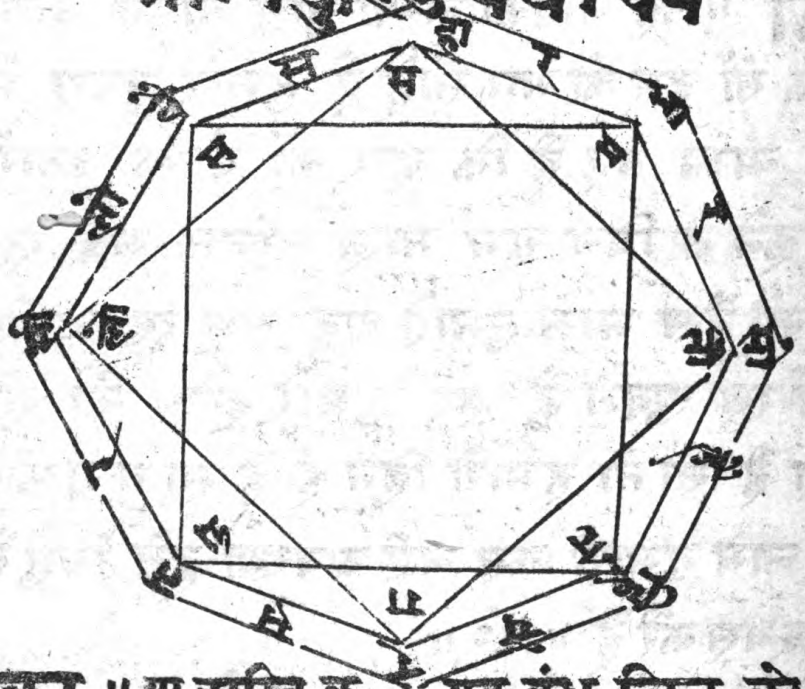
अग्निकुण्डबंधलक्षणं दोहा ॥ प्रथम अर्ध पदि गोल क्रम कों ा वर्ण पुनि लेहु । कुण्ड

वर्ण सौं मेलि पढ़ु अग्नि कुण्ड रचि देहु ॥ २३॥

टीका ॥ आधे दोहा को गोल क्रम सौं लिखिबेय। अरु अग्नि कुण्ड के कोण पर जे अक्षर आये। हैं तिन कौं कुण्ड के भीतर के अक्षरन सौं मिलाइके पढ़िये यह अग्नि कुण्ड बंध चित्र की रचना। जानिये ॥ २३ ॥

यथा दोहा ॥ हार भार सोहे हिये रस तर। सीलो वेस। हास भास सो तौ हिते रंगत न सीलो वेस ॥ २४ ॥

अग्निकुण्ड बंधचित्रं



टीका ॥ या अग्नि कु एड बंध चित्र को अर्थ मध्यादि मध्यांत्य विपरी वंध चित्र में कहि आ

ये हैं सो जानिये ॥ २५॥

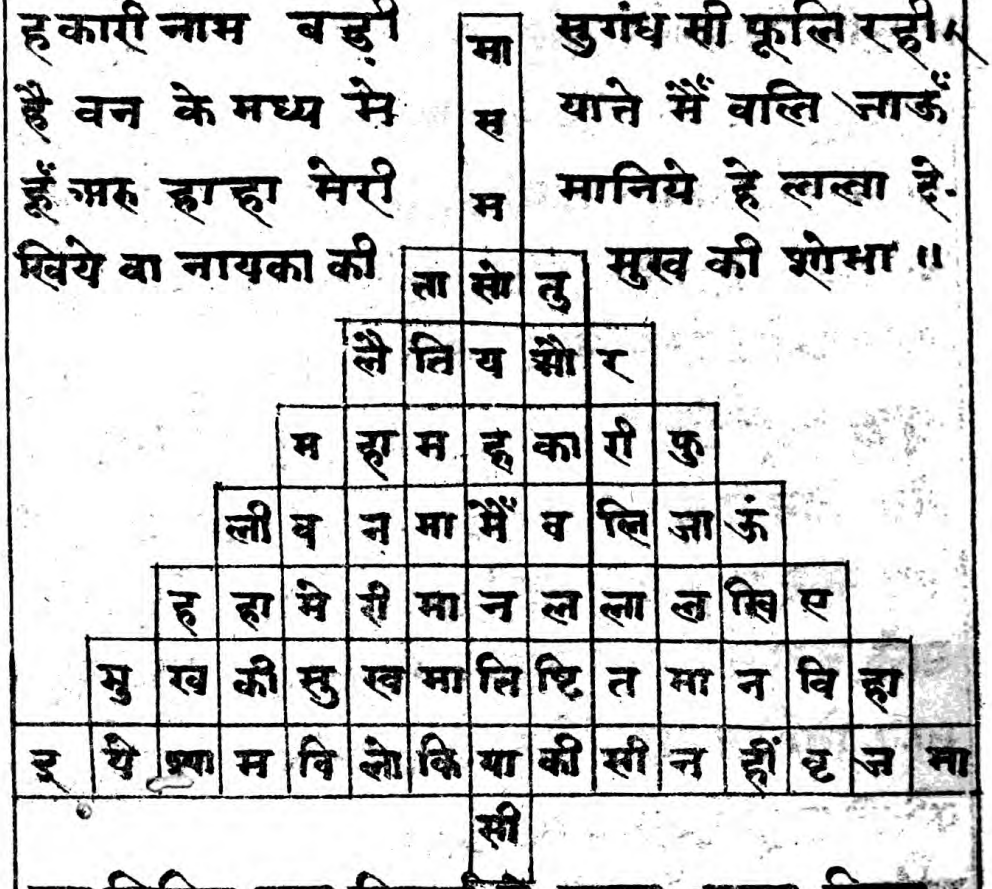
पर्वताकार बंध लक्षणं दोहा ॥ मध्य पंक्ति पहु सिखर सौं सुलटी उलटी मित्र। सूधे पढ़ पुनि सिखरले पर्वत बंध विचित्र ॥ २५॥

टीका ॥ मध्य पंक्ति जो सिखर की है ताकों खड़ी रीति सो गता गत बाँचिये फेरि शिखर के तीन अक्षर मिलाय के पंक्ति की रीति सों बाँचिये ऐसे ताकौं पर्वत बंध चित्र जानिये ॥ २५॥

यथा सवैया ॥ मास मसो यह मैन तियासी सीया सिन मे हय सोम समा। मास मता सो तुलै तिय और महा मह कारी फुली वनमा ॥ मैं वलि जाऊं हहा मेरी मान लला लखिए मुख की सुखमा। लिहित मान विहार्द ये स्याम विलोकि या की सी नहीं रजमा ॥ २६॥

टीका ॥ यहाँ दूती को वचन मान मोचन करावे में नायक सौं मास मसो यह नाम यह नायका लक्ष्मी के समान है सो नायका कहा कामदेव की स्त्री सी कहिये यह काकु है कामदेव की स्त्री कौन परार्थ है अरु स्वकीया तियन में है चन्द्रमा के समान मास मता सो तुलै

त्रिय और नाम और जो नायका पर कीया सा-
मान्य हैं ते याकी समता सौं नहीं तुले हैं यहां
मा शब्द निषेध अर्थ में जानिये अरु महा म-
हकारी नाम बड़ी सुगंध सी फूलि रही।
है वन के मध्य मे यातें मैं वलि जाऊं
हूं अरु हा हा मेरी मानिये हे लाला दे-
खिये वा नायका की सुख की शोभा ॥



अरु तिष्टित मान विहाई ये स्याम नाम स्थिर।
मान को दूरी कीजिये हे स्याम विलोकनि या
नायिका कीसी नहीं है इनकी और नायका
नि मैं यह नायका परकीया वाचक स-
ज्ञा ॥ ७६ ॥

चकाकारबंधलक्षणं दोहा अरवर्ण

को जोड़िये अरु चारि दू मित्र । मई नेमि में वा
चिये चक्रबंध सो चित्र ॥ २७ ॥

टीका ॥ पहिला को जो मूढा है ताको जो व-
र्ण ताको नाम अरासौं मिलाय के पढ़िये पु-
नि मूढ़ा को अक्षर नीचे के अरा सो मिलाइ
ये पुनि मूढ़ा की अक्षर दक्षिण अरासौं मि-
लाइ के पढ़िये पुनि मूढ़ा को अक्षर शिखरसौं
मिलाइ के पढ़िये आधो दोहा नाहअरु अरा मे-
ढ़िये अरु आधो दोहा पूढ़ि में पढ़िये सो चक्र बं
ध चित्र जानिये ॥ २७ ॥

यथा दोहा ॥ सुनत हिये सुख लहति सुभ
कही न सुधा सुबैन । मत पाये मैं कहति हूं सो व-
न लाला चैन ॥ २८ ॥

चक्रबंध चित्रम्



टीका ॥ यहाँ सखी को वचन नायक सौं यह है कि सुनत हीं हृदय मैं सुख कों प्राप्ति होत है भले प्रकार सौं अरु कही नहीं है वा नायका ने अमृत रूपी वचन अर्थात् मुख ते तो कछू नहीं कह्यो है परन्तु तुमारे गुण सुनि के सुख पावति है अरु मन की बात यह पाई मैं ने चेष्टा सूं यह बात मै तुम से कहतिहूं हे लाला अब चैन सूं वा नायका के संग सयन करो क्यों नहीं यह नायका विश्वस्त नवोढ़ा॥ २८॥

द्विचतुष्क चक्र बंध लक्षणं दोहा ॥ संधि अरनि से अई पदि अई नेमि मे वांचि। चक्र बंध द्वि चतुष्क को कहत सु कवि जन जांचि ॥ २९॥

टीका ॥ द्वि चतुष्क चक्र बंध मे दोय मंडल चार कोने के कीजिये ताके ऊपर दोय गोल मण्डल कीजिये तहां नेमि तो गोल मण्डल है अरु अरा चतुष्कोण मण्डल है इन के मध्य के वर्ण को अरा के वर्ण ते मिलाइ ये पुनि नेमि मे अरा के चूलि का वर्ण अरा के वर्ण सों मिलाइये या रीति ते आधो छन्द अरानि मैं पढ़िये अरु उत्तरार्द्ध में संधि के अक्षर को नेमि के अक्षर सौं मिलाइ ये

पुनि नेमि पुनि नेमि पुनि संधि पुनि नेमि पुनि संधि पुनि नेमि पुनि नेमि पुनि नेमि पुनि संधि पुनि नेमि पुनि नेमि यह चक्र सुकवि जन न ने विचारि के कह्यो है ॥ २९ ॥

यथा चौपाई ॥ विन रघन वरसि नचत शिखिद रस । विशद भान रस होत देखि रस ॥ ३० ॥

द्वि चतुष्क चक्र बंध चित्रं



टीका ॥ यह उद्दीपन विभाव है विन रघन व रसि नाम विशेष नाद करिके घन वरसत भये। ताकों देखि के मयूर नाचत भये अरु विसद भान रस नाम मनुष्यन की कांति नि र्मल हो तभई रस नाम जल को होत नाम वर्षतो देखि के ॥ ३० ॥

विविडित चक्र बंध लक्षणं दोहा ॥

शिखर गुंथि पुनि गुंथि भनि सिखर गुंथि पद वक्र। उत्तरार्द्ध लिखिनेमि मे विवि डित बंध सु चक्र ॥ ३१॥

टीका ॥ शिखर के वर्ण को गुंथि तैं मिलाइये। पुनि गुंथि पढ़िये वक्र नाम देही रीति से पढ़िये या रीति ते सिखर गुंथि में अर्द्ध छन्द पढ़िये अरु उत्तरार्द्ध नेमि में पढ़िये सो विविडित चक्र जानिये विविडिता नाम की एक देवी है तासे आयुध कों विविडित चक्र कहत हैं ॥ ३१॥

यथा दोहा ॥ समर पीति यत्यौंभा मानो रक्ति मय भास। सरसा नोवर पीति मैं मन रात्यो यों हास ॥ ३२॥

विवि डितचक्रबंधचित्रं



टीका ॥ यहां सखी का वचन सखी सों नायका नायक के संयोग वर्णन में समारणी नाम काम। करिके सहित पीनम है अरु तिय त्यों भा नाम तैसे ही तिय की कांति है मानो रति संयुक्त काम देव राजत है अरु सरसानो नाम सर साय रह्यो है श्रेष्ठ प्रीति में मन जाको अरु मन पर यहाँ देहली दीपक न्याय रीति करिके मन अनुरक्त होय रह्यो है हास्य में या प्रकार ते यह नायका प्रौढ़ा ॥ १२ ॥

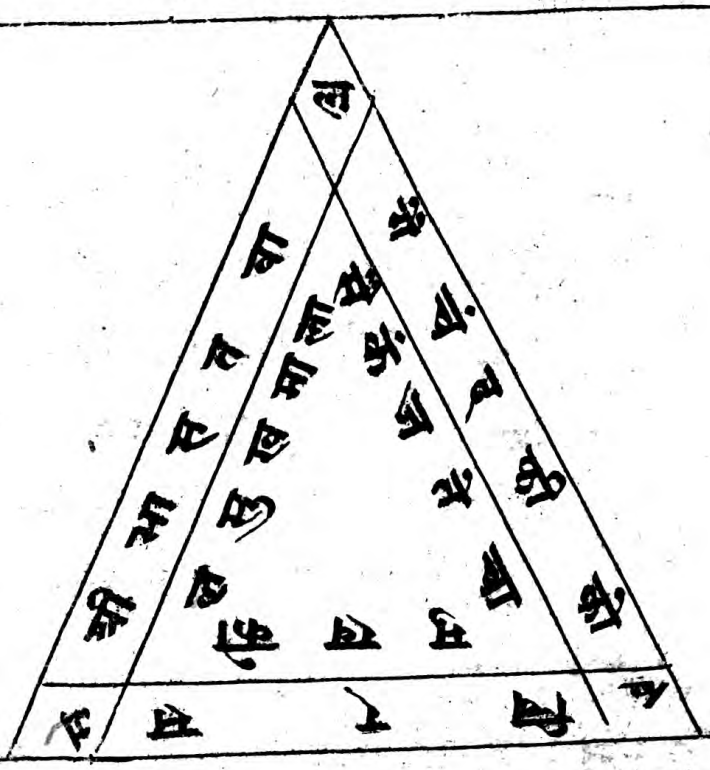
वीदी बंध लक्षणं दोहा ॥ कोण मध्य पुनि कोण में अई धारिये छन्द। उत्तरार्द्ध धरि नेमि में वीड़ी बंध अमंद ॥ १३ ॥

टीका ॥ कौण के वर्ण को मध्य की पंक्ति सौं मिलाइये पुनि कोण के वर्ण कौं मध्य की पंक्ति सों मिलाइये पुनि कोण पुनि मध्य पुनि प्रथम कोण ऐसे अई छंद जानिये अरु उत्तरार्ध नेमि में पढ़िये यह वीड़िका बंध चित्र जानिये ॥ १३ ॥

यथा दोहा ॥ लसै कञ्ज ते चारु मुख कोमल सुख मा लाल। लगै चन्द फीको रुचिर सम श्री भासत बाल ॥ १५ ॥

चित्र ८२

बिडिका बंधचित्रं॥



टीका ॥ यहां सखी का वचन सखी सों नाय का नायक के संयोग वर्णन में शोभित है कम ल ते चारु मुख जाको अरु कोमल शोभा है लाल की अरु चन्द्रमा की रुचिरता फीकी लगी है ऐसी बाल लक्ष्मी के समान भासत है यह नायका पौढ़ा ॥ ३४ ॥

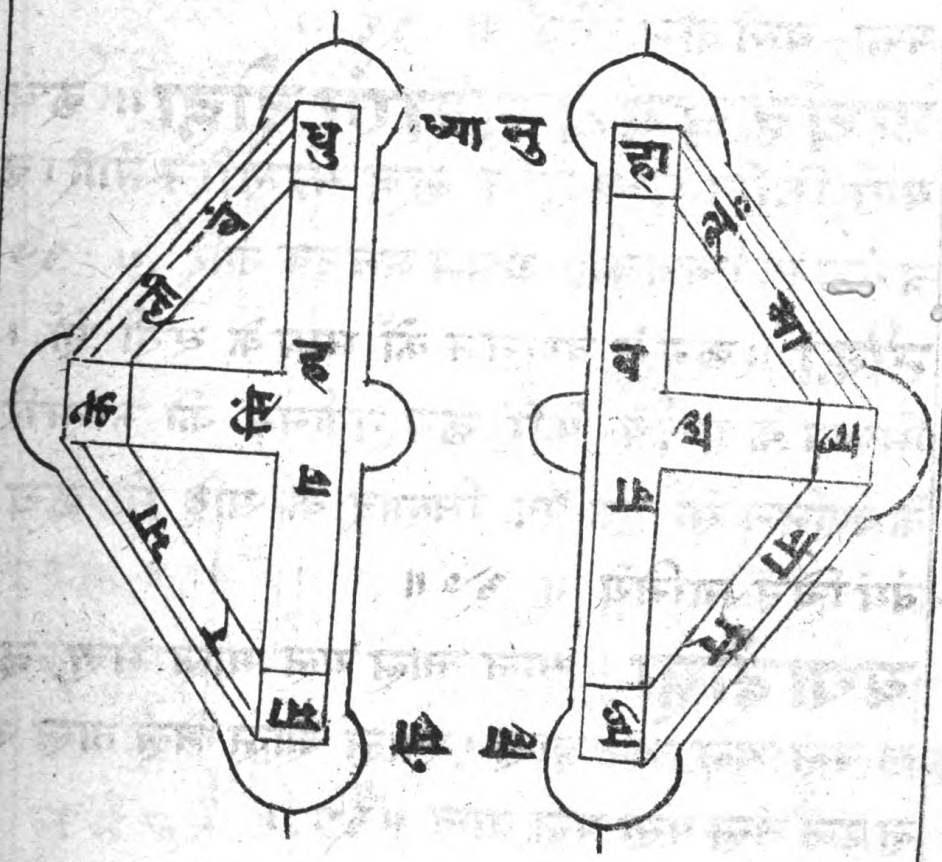
द्वि शृंगाटक बंध लक्षणं दोहा॥

द्वादश अक्षर धारिये शृंग ग्रंथि में मित्र। शेष भेदि में पूरियो द्वि शृंगाटक चित्र ॥ ३५॥

टीका " शृंग के वर्णी कौं गुंथि के वर्णी सों मिलाइये पुनि शृंग पुनि गुंथि या क्रम सौं बारह अक्षर पढ़िये बाकी के अक्षर नेमि में पढ़िये सो दो सिंघाड़ा बंध चित्र जानिये ३५

यथा दोहा " हावनु लहुवा मान के सिंधु हहा तूं मानु । नारि हुलासो मारभा केली बंधु ध्यानु " ३६ "

द्वि शृंगाटकबंधचित्रं



टीका ॥ यहाँ सखी की उक्ति मानी नायक सौं हावनु लहुवा नाम वा नायका के अनेक प्रकार के जे हाव हैं तिन्हैं तुम लहो हे मान के समुद्र हारा मेरी मानिके वा नायका कौं हुलास देहु अर्थात् आनंद युक्त करो अ रु मारभा नाम है कामदेव समान कांति तु- मारो ध्यान केलि को बंधु है नाम क्रीड़ा को मित्र है या हि शृंगारक बंध चित्र में गुंथि गुंथि के ष वर्ण में कवि को नाम कहत है ॥

यथा बलवान सिंह ॥ ५६ ॥

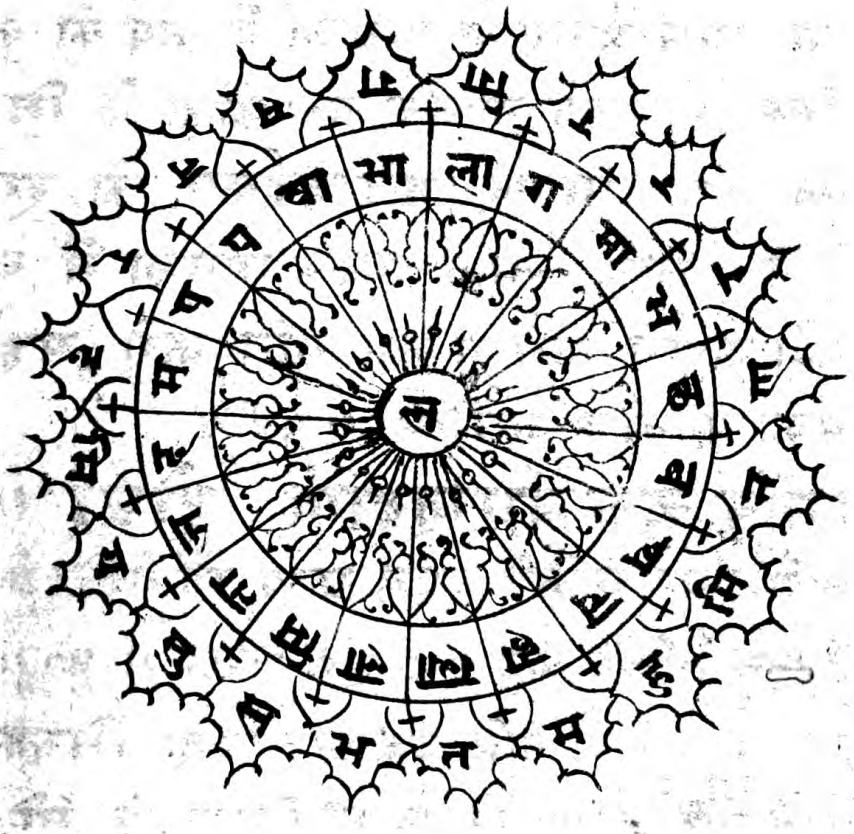
अथ छत्रबंध लक्षण दोहा ॥ छत्र वर्ण मिलि मध्य पुनि छत्र झालरिन जोरि। छ त्र बंध सो चित्र कहि ग्रंथन मत दक टोरि ॥ ५७

टीका ॥ छत्र के वर्णनन कौं मध्य के वर्ण सौं मिलाय के पढ़िये फेरि छत्र वर्णनन को झालरि के वर्णनन सौं एक एक मिलाइ के पढ़ि सो छत्र बंध चित्र जानिये ॥ ५७ ॥

यथा दोहा ॥ भाल लाल गल माल भल छ- ल बल पल चल हाल । ख्याल लाल मिल ताल ज ल दल मल पल पल वाल ॥ ५८ ॥

द्वितीय यथा ॥ भाग लालि गर माल भर। कण वन यमि चहु हास। ख्यात लाभ मिस तासु जय रमि मद पर पनवास ॥ २६ ॥

छत्रबंध चित्रं



टीका ॥ यह नायक मानी है तासों सखी की उक्ति मान मो न मैं वा नायका के भाल में लाल मणि है अरु गले में भली माला है यातें कल बल नाम कपट की अमेठन कोड़ि के संकेत स्थल में चलो शीघ्र हे लाल ताल के जल में मिलि

के ख्याल करो वा बालकों सण सण में दल म-
ली नाम दृढ़ आलिंगन करो ॥ ५८॥ अरु भाग्य सौं
गोरे में लगि के मारभा नाम है काम भार युक्त ।
सण मात्र वन में थमि के हास्य कौं चाही अरु
ख्यात नाम प्रसिद्ध वा नायका के जय को ता-
भ मिस सौं होयगो अर्थात् जल क्रीड़ा के मिस
करिके अरु दमि मद नाम अहंकार को दमन
करि के परपन नाम उत्कृष्ट प्रतिज्ञा में वा-
स करो अर्थात् प्रतिज्ञा भंग मति करो यहाँ
नायका पर कीया जानिये ॥ ५९ ॥

द्वितीय छत्र बंध लक्षणं दोहा ॥

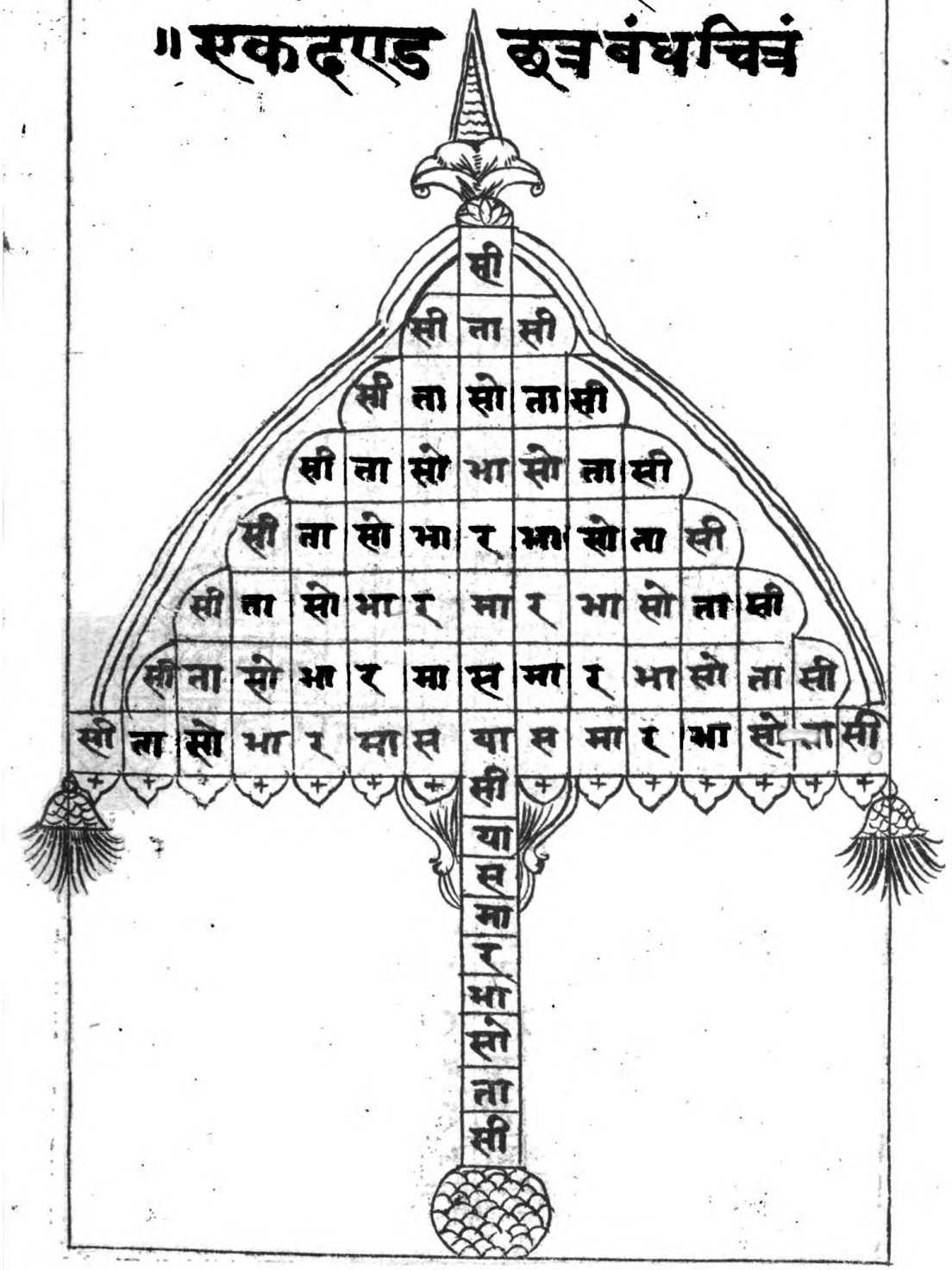
छत्र पंक्ति को मेलिये दण्ड ग्रन्थ सों मित्र। ग्रंथि
दण्ड पुनि वाँचिये छत्र बंध यह चित्र ॥ ६० ॥

टीका ॥ छत्र की पंक्ति दंड की ग्रंथि सों मिलाइ
ये पुनि ग्रंथि के वर्ण को दंड सौं मिलाइ ये सो
छत्र बंध जानिये यह एक दंड को छत्र है यामे
एक चौपाई को न्यास है अरु याही क्रम सों
दोय दंड को छत्र बनाइये तामें दै चौपाई भरिये
अरु वाही दै दंड छत्र कौं अर्द्ध लिखिये सो पता-
का बंध चित्र जानिये ॥ ६० ॥

चित्रं. ८७

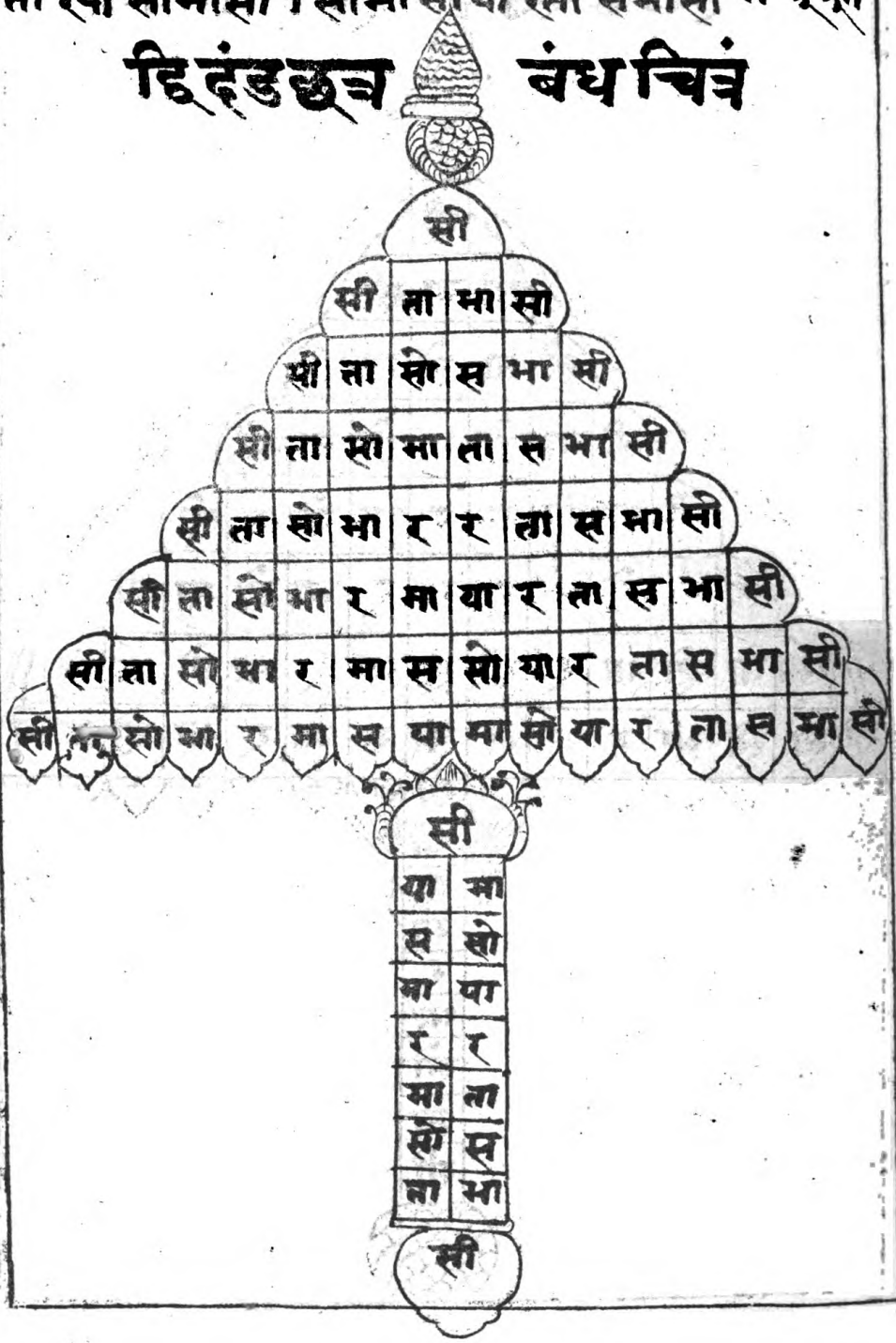
यथा चौपाई ॥ सीता सोभा रमा सयासी ।
सीया सभा रमा सो तासी ॥ ५१ ॥

॥ एकदण्ड छत्रबंधचित्रं



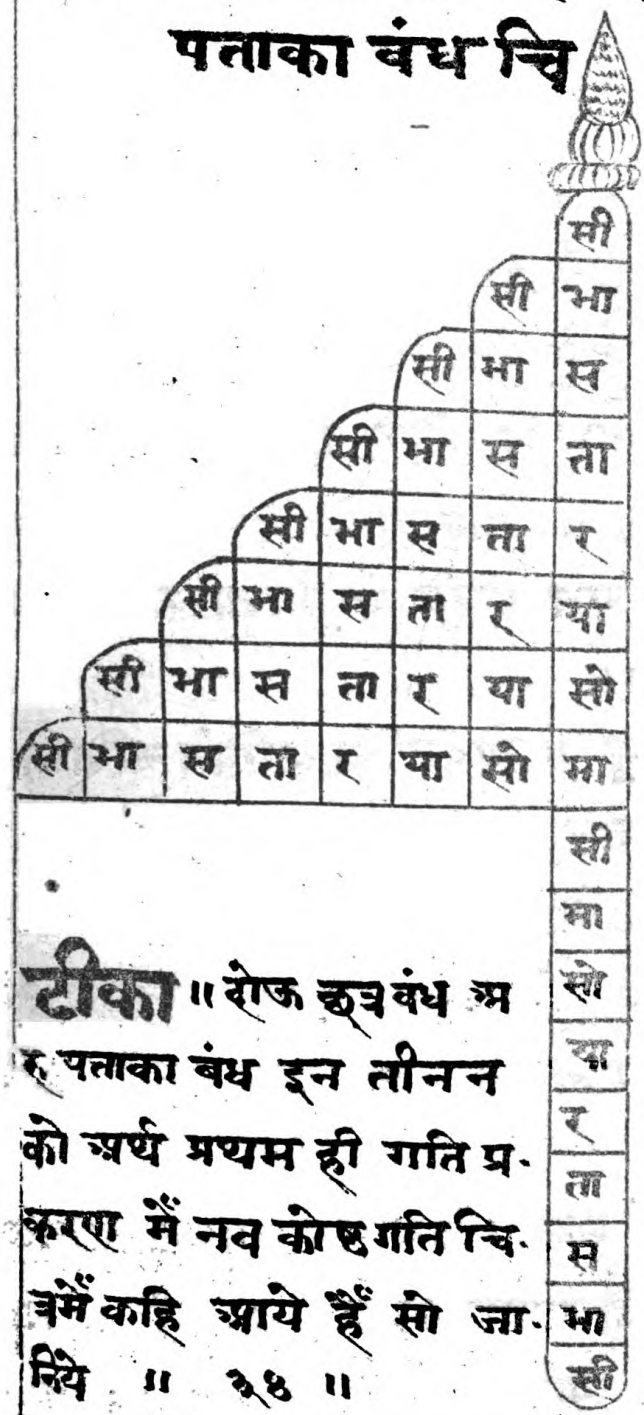
द्वितीय यथा चौपाई ॥ सीता सोभा रमा स
यासी । सीया समा रमा सो तासी ॥ ३२ ॥ सीमा स
ता रमा सोमासी । सीमा सोया रता सभासी ॥ ३३ ॥

द्विदंडछत्र बंधचित्रं



पताका बंधो यथा चौपाई ॥ सीमा सतार या सो मासी। सीमा सोया रता सभासी ॥ ३४ ॥

पताका बंध चित्र ॥



टीका ॥ रोऊ छत्र बंध अ र पताका बंध इन तीनन को अर्थ प्रथम ही गति प्रकरण में नव कोष्ठ गति चित्र में कहि आये हैं सो जानिये ॥ ३४ ॥

ध्वजाबंध लक्षणं दोहा ॥ डेढ़ चरण धरि दंड में डेढ़ ध्वजा में होइ। एक चरण पदु कार को ध्वजा बंध यह जोइ ॥ ३५॥

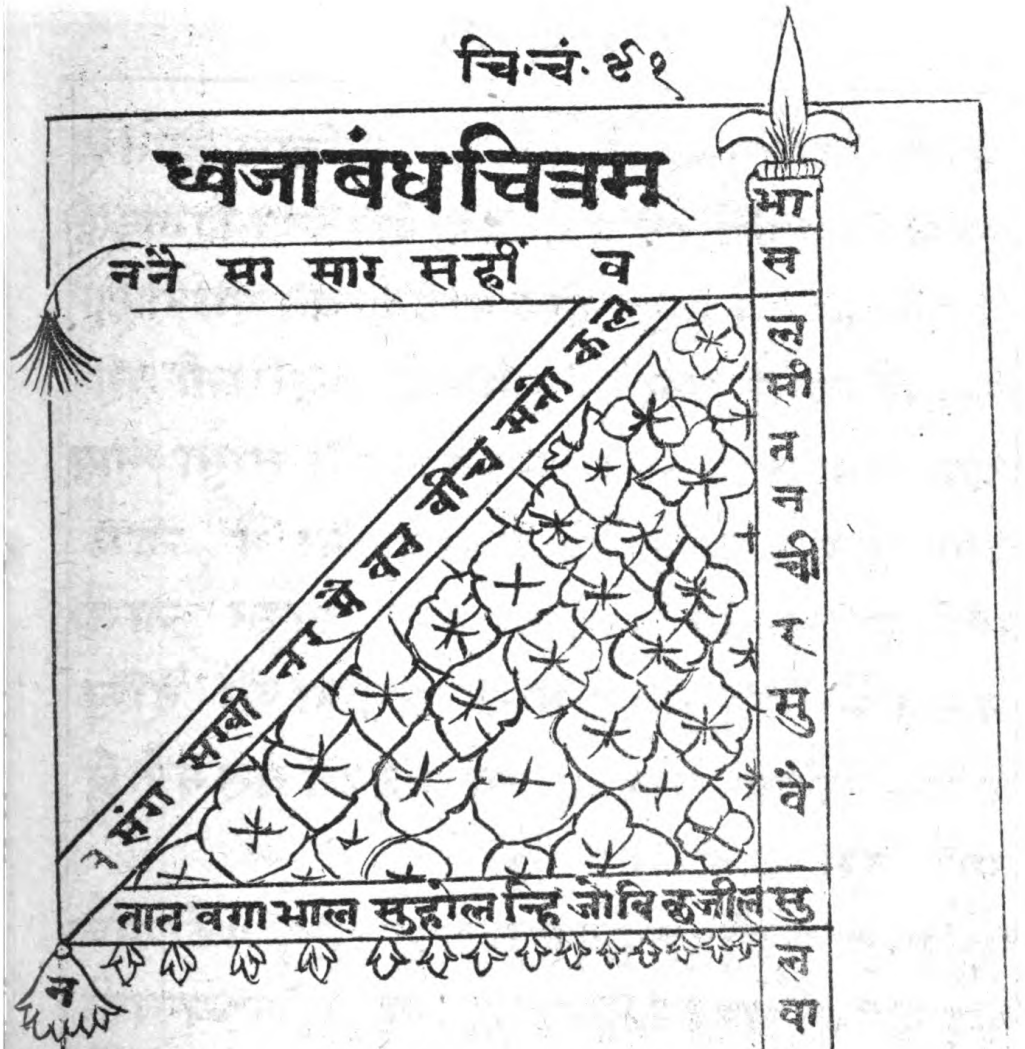
टीका ॥ दंड में प्रथम चरण ऋजु पढ़िये पुनि अर्ध चरण दंड में उलटो पढ़िये या भाँति डेढ़ चरण दंड में जानिये पुनि ध्वजा में डेढ़ चरण पढ़िये फौंदा के वर्ण को दो वार पढ़िये अन्त के वर्ण को कलश में पढ़िये पुनि कलश को वर्ण एक वर्ण दंड को मिलाय के पदुका में एक चरण गता गत रचिये सो ध्वजा बंध चित्र देखिये ॥ ३५॥

यथा सवैया ॥ मोहन जू लखिये चलि बाल सुबै सुर चीनत सील सभा। भास लसीतन चीर सुबै सु लजी छवि जोन्हि लहो सुलभा॥ गावत तानन संग सखी नरमै बन बीच मनोकलभा। भासबही सरसा रस नैननि ने सर सार सही वसभा ॥ ३६॥

टीका ॥ यहाँ सखी को बचन नायक सौं नायिका पर कीया को रूपाधिक्य वर्णन करिके नायक कौं लेजायो चाहति है हे मोहन जू या

चित्रं ४१

ध्वजाबंधचित्रम्



वाल कौं चलि के देखिये कैसी है वह वाल कि सुवेस नाम भली है अवस्था जाकी अरु रुचि रही है नम्रता की सुशीलता की सभा मैं अर्थात् नम्रता सुशीलता या नायका कीसी और नायका मैं नाहीं है अरु भास नाम दीप्त लसित है रही है तन मैं सुंदर चीर

करिके जा चीर करिके तोन्हि लज्जित होति है ता नायका कौं सहज ही प्राप्त होतानन कोगाढ़ही है अरु संग में सखी कोऊ नहीं है अरु रमि रही वन में मानो कलभा नाम छौना हथिनी सी अरु भास वही नाम सम्पूर्ण कांति सरसा नाम सरस है अरु रस है नेत्र में जाके अरु नै नाम नीति रूपी सर जो है सरोवर ताके सारस नाम कमल है नेत्र जाके ऐसी नायका कौं देखि करिके मेरोही वस भा नाम हृदय वस भयो है यातैं तुम चलो ॥ ५६ ॥

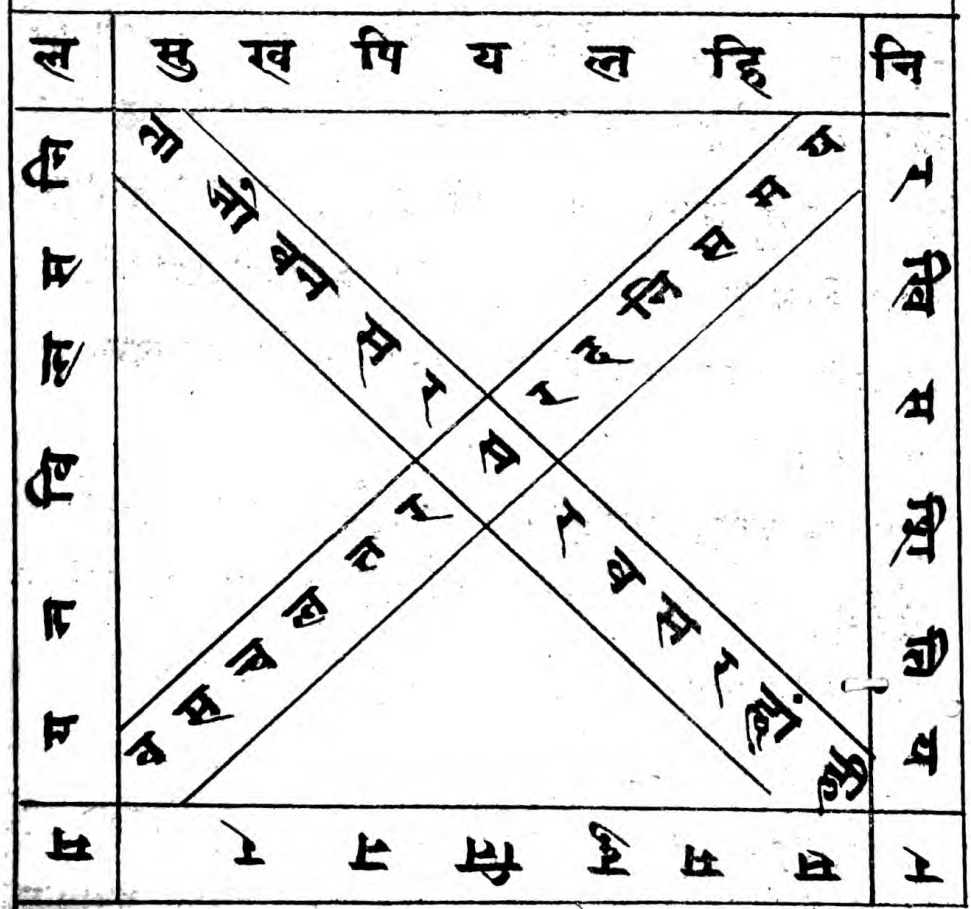
चौपड़बंध लक्षणं दोहा ॥कोणगता गत वाँचियें नाद पंक्ति ऋजु होइ । मध्य वर्ण आद्यांत में चौपड़ बंध सुजोइ ॥ ५७ ॥

टीका ॥ कोण की जो पंक्ति है तिन्है गता गत पढ़िये अरु नाद नाम ऊपर को मंडल है ताकौं सूधी रीति सौं पढ़िये अरु मध्य के वर्ण कोचरण के आदि अंत में पढ़िये ताकौं चौपड़ बंध चित्र जानिये ॥ ५७ ॥

यथा सवैया ॥ सरस नव जो ताल सुख पिय लहि नियम सनि दरस । सरद नि समय निरखि

ससि तिय रही ह्वांस वस्त॥ सरव सर ह्वांही रस॥
मदुति नरस वस चलत रस। सर तल चसव म
यन विल सनि लता जोवन सरस ॥ ३८॥

चौपड़बंधचित्रं


ल सु ख पि य ल हि नि
लि म ल पि म ल
म ल पि म ल पि
ल पि म ल पि म
प म ल पि म ल
ल पि म ल पि म
म ल पि म ल पि
प ल पि म ल पि
ल पि म ल पि म
म ल पि म ल पि
ल पि म ल पि म
प म ल पि म ल
म

लहु ॠरु नियम सनि नाम ॠपनी प्रतिज्ञा में ।
पगि के दश नाम दर्शन करु सरद ऋतु की रा-
त्रि को जो चन्दुमा है ताको हेतिय तू देख ॠरु
वहाँ रस की वर्षा हो रही है ॠरु सरवस नाम
सम्पूर्ण सरोवर में वहाँ हीरा के समान दुति है ॠ-
र्थात् ॠति स्वच्छ है याते नरस नाम क्रीड़ा के वस
है के चलु तरस नाम शीघ्र ॠरु सरतलच नाम
सिद्ध होत है तेरे नम्र भये ते सम्पूर्ण काम के वि-
लास है सरस योवन की लता याते तू चल ॥

॥ ३८ ॥

चरण गुप्त गुप्तोत्तर निरोष्ठ लक्षणं ॥

दोहा ॥ नव कोष्ठन ते कादिये चरण ॠदि ॠ-
रु ॠन्त । सरण किये उत्तर कहे ॠरु निरोष्ठ क
हि संत ॥ ३९ ॥

टीका ॥ नव घर मेते चरण निकालिये यह च-
रण गुप्त का कम है ॠरु काढे चरण के ॠक्षर
न को ॠयस द्वितीय तृतीय या कम ते ॠंत के
मिलाय के होय ॠक्षर को उत्तर दीजिये सो
व्यस उत्तर ॠरु समस्त चरण को एक उत्तर दी-
जिये सो समस्त उत्तर यह गुप्तोत्तर जानिये ।

अरु या छन्द में उकार वकार पवर्ग नहीं हैं यातें निरोष्ठ्य जानिये हे संत नाम हे पंडित ॥ ३९ ॥

यथा दोहा ॥ तार नहर कहि अथर जसन रहित हित रण रंग । नित्त सरस रस कहत कहँ हरित लहन जस अंग ॥ ४० ॥

छपिहि करत किहिं तजि सजन ससि दिन दिन जिय दीन । लस तरिसहि गण छीजि कहि जग धरत रिस छीन ॥ ४१ ॥

चरण गुप्त निरोष्ठक गुप्तोत्तर

ता	र त ह	र	क हि अ	ध
र	ज स न	र	हि त हि	त
र	ण रं ग	नि	त त स	र
स	र स क	ह	त क ह	ह
रि	त त ह	न	ज स अं	ग
छ	षि हि क	र	त कि हिं	त
जि	स ज न	स	सि दि न	दि
न	जि य दी	न	त स त	रि
स	हि ग ण	छी	जि क हि	ज

टीका ॥ ए दोउ दोहा नि मै प्रश्न अरु उत्तर जानिये अंत के चरण मैं उत्तर अरु सर्ब चरण मै प्रश्न तार तहर कहि नाम महादेव को न कौं तारे है तहाँ उत्तर जन अर्थात् भक्त जन को अथर जस नाम श्रेष्ठ को जस कहा उत्तर गन अर्थात् अगन न बोलनो नर हित नाम मनुष्य को हित कहा उत्तर धन हित रणरंग नाम रण मैं रंगे हैं जे शूर तिन को हित कहा उत्तर रण अर्थात् संग्राम नितत सरस रस कहत कहैं नाम निरंतन करिके वीणादिक जो वाद्य है सो सरस रस कौं कहौं कहै है उत्तर तान अर्थात् ताना दिक कर्म मैं हरित लहन जस अंग नाम कौन्ह पदार्थ के हरि लेवे मैं जस को अंग पावत है उत्तर ऋण अर्थात् कर्ज दूर करिवे मैं कृषि हि करत किहिन जिस जन नाम सज्जन प्राणी कहा वस्तु छोड़िके खेती करत है उत्तर सन अर्थात् सन नहीं बोये प्राणि दिन दिन जिय हीन नाम चन्द्रमा दिन दिन प्रति क्यों हीन है उत्तर छीन अर्थात् क्षयी व्याधि करिके लस तरि सहि गण छीजि कहि नाम कोध के समुद्र

दायते छीन अर्थात् नहीं हैं क्रोध जामे ऐसो कौन पुरुष सो तू कहु उत्तर जग धरता सिव छीन अर्थात् संसार के धारण करने वारे ऐसे जो ईश्वर हैं तिनमें क्रोध नहीं है ॥ ४१ ॥

मुरज बंध लक्षण दोहा ॥ आदि अन्त में इक वरण युग युग वरण जु एक । दूली क्रम ते बाँचिये मुरज बंध कहि टेक ॥ ४२ ॥

टीका ॥ जो वर्ण आदि मे है सोई अक्षर अंत्य में आवै अरु सम्पूर्ण छन्द में एक अक्षर को दो दो वार धरिये दूली नाम मृदंग की सिकंजा की जो रस्सी है जैसे वह खिचै है ताही क्रम सौं अक्षर पढ़िये ताको कवि जन मुरज बंध कहत हैं टेक करिके ॥ ४२ ॥

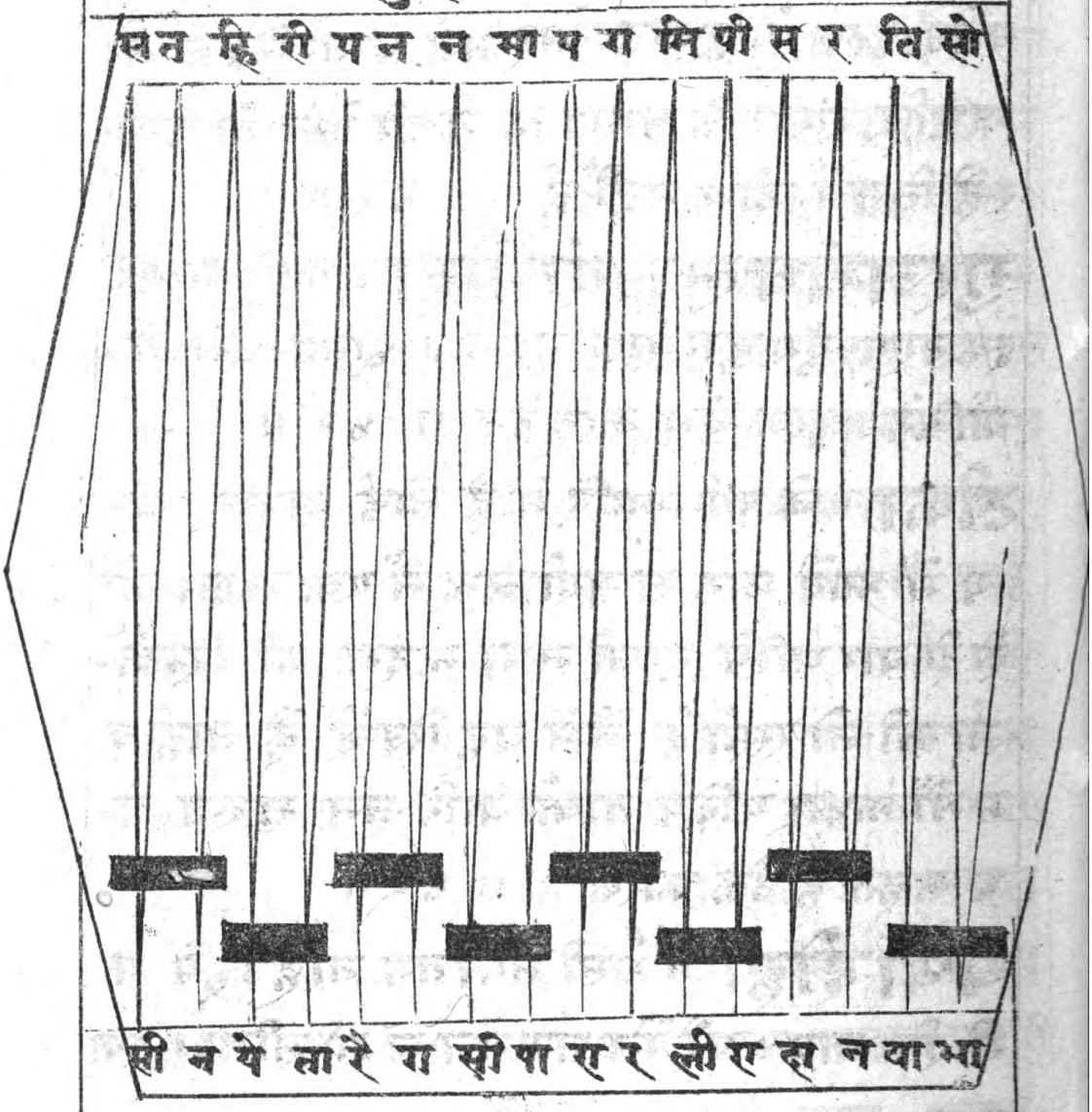
यथा दोहा ॥ ससी सीत तन नहिं हिये ये री रीता ताप । परै रैन नग गन न सी सीमा मा पा पाप ॥ ४३ ॥

परा गा गर रमि मिली लीपी पीत रास । सदा हार रन नति तिया यासो सोभा भास ॥ ४४ ॥

टीका ॥ यहाँ नायका को वचन सखो सौं प्रलाप अवस्था में ससी सीत तन नहीं हिये ।

चित्रं. ४८

मुरजबंधचित्रं



एसी नाम एरी सखी चन्द्रमा को तन हृदय तो सीतल नहीं है अरु यामे रीता ताप नाम गुण तैं केवल संताप रूप है पैरैन नग गनन सी नाम याके संयोग को एत्रि

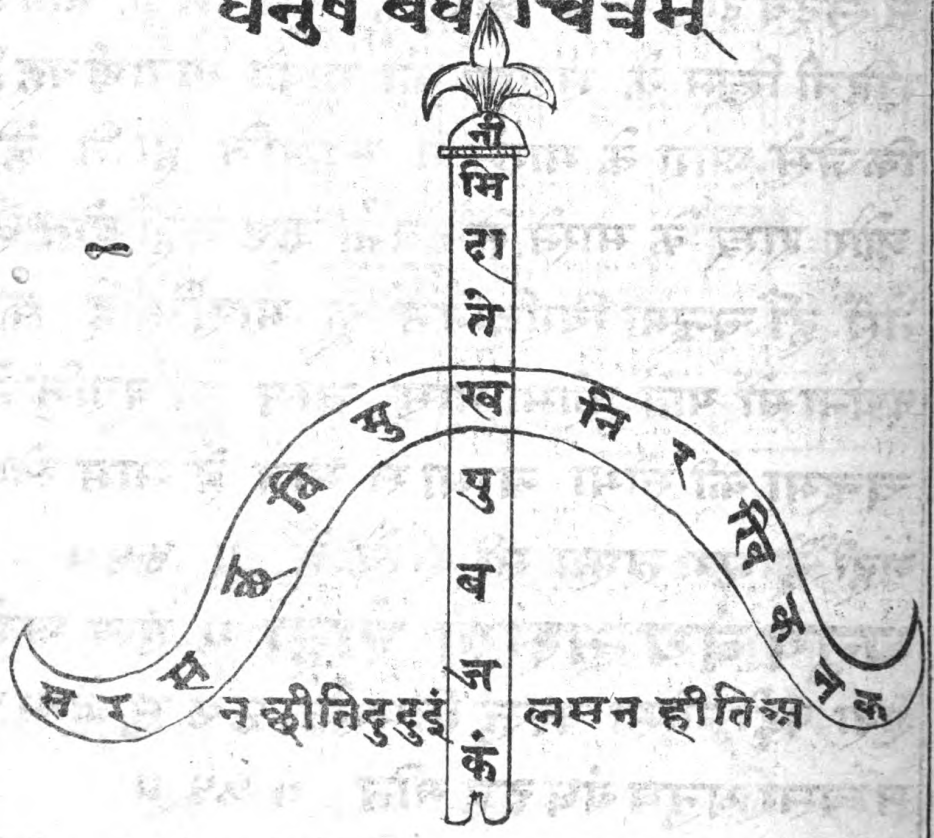
पर्वत संमुदायसी कठोर व्यतीत होति है यातें सीमा मापा पाप नाम यह चन्द्रमा पापकी न पी भई मर्यादा है ऋरु परा नाम उत्कृष्ट राग रंग रमि मिली नाम याको उत्कृष्ट स्वेत रंग देखिवे में है परंतु यामे विष रमि करिके मिलि रह्यो है मानो लीपीपीरा रस नाम जैसे दुःख को समूह लिप्यो भयो नाम छिप्यो भयो है तैसें ही स्वेत रंग चन्द्रमा को देखिबे मे है परन्तु भ-ह्यो बिषही है ऋरु सदा रार रन नति तिया नाम सदैव हार नाम ऋारा है नम्र तिया नाम बि रहिनी स्त्रिन के संग्राम को याको भावार्थ यह है कि जैसे ऋारा के मारने में मासति होति है ऋौर शस्त्र के मारने से इतनो कष्ट नहीं होत है तैसें हीं चन्द्रमा बिरहिनिन कूं मारति है कदर्थना सों यातें शोभा भास नाम या बर्णन ते चन्द्रमा की सोभा ऋाभा स मात्र है नाम सोभा नहीं है मृग तृस्ना सी दीखे है ॥ ५५॥

धनुष बंध लक्षणं दोहा ॥ पुंख ऋई दोहा पढ़ो गोसा चरनु बिपरीत। एह सु गोसा पन चसर धनुष बंध इह मीत ॥ ५५ ॥

टीका ॥ मुख नाम सर की फोंक ताको अक्षर प्रथम पढ़िये पुनि आधो रेफ पढ़िये अरु कमान के गोसा के तीनो वर्ण कों गत्ता गत्त पढ़िये पुनि दृष्टि पढ़िये प्रथम क्रम सों द्वितीय गोसा अर्द्ध रेफ सम्पूर्ण तीर पढ़िये सो धनुष बंध चित्र जानिये हे मित्र ॥ ५५ ॥

यथा सोरठा ॥ कज्जल इन्दु द्युति छीन सरस सरस छवि मुख निरखि। कनक कनक अति हीन सत्त जब पुष ते दामिनी ॥ ५६ ॥

धनुष बंध चित्रम्



टीका ॥ सखी को बचन सखी सौं नायका के रूपाधिक्य वर्णन में कमल चन्द्रमा की कांति छीन है नाम लघु है सरस सरस नाम अधिक रस सहित मुख की छवि है सखी तू देख । अरु कनक कनक नाम सुवर्ण के जो टूक हैं ते तौ अति ही दीन हैं नाम तुच्छ हैं सलज वपुष ते दामिनी नाम जाके शरीर ते बिजुली लज्जित होति है ताके आगे सुवर्ण को टूक कहा पदार्थ है ॥ ४६ ॥

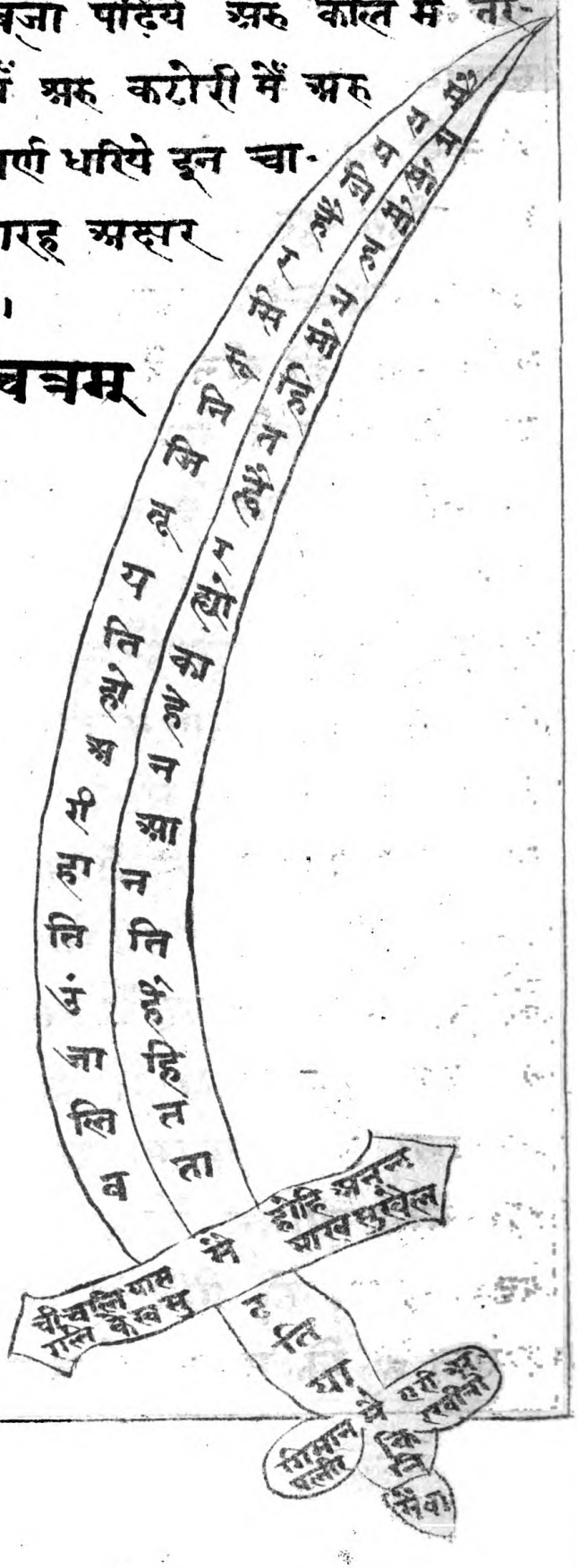
खड्ग बंध लक्षण दोहा ॥ आदि अंत्य चारे चरण तृतिय चरण के बीच । बारह पाँच उनीस वां अंत्य चरण मे सीच ॥ ४७ ॥

एक बर्ण एते रचो चित्र रीति पहचानि । कील डारकब जा पदो खड्ग बंध सो जानि ॥ ४८ ॥

टीका ॥ चारो चरण के आदि अंत्य में अरु तृतीय चरण के मध्य में अरु चतुर्थ चरण को पाँचमा अक्षर बारमा अक्षर उनीस वाँ अक्षर इतने स्थानन में एकही अक्षर धरिये । यह खड्ग बंध की रीति है अरु बाँचिबे कीयह रीति है कि प्रथम कील पढ़िये पुनि डा-

पढ़िये पुनि कबजा पढ़िये अरु कील में तरवार की नौक में अरु करोरी में अरु घुंडी में एकही वर्ण धरिये इन चारि अक्षरन में बारह अक्षर जानिये ॥ ४८ ॥

खड्ग बंध चित्रम्


ह ति ना
ह ति ना
ह ति ना

यथा सवैया ॥ मैं बलि जाउं तिहारी अहो ति
य तू जिनि रूसि रहै जियरा में । मैं न सो मोहन मोहि
तहै रह्यो काहू न जानति है हित तामें। मैं सुख के
लि रची चलि या समय हौंहि आनन्द लखै सुखमा में । मैं
रतिया में रली परिमान में एरी अनोखी रमै किन
वामें ॥ ४९ ॥

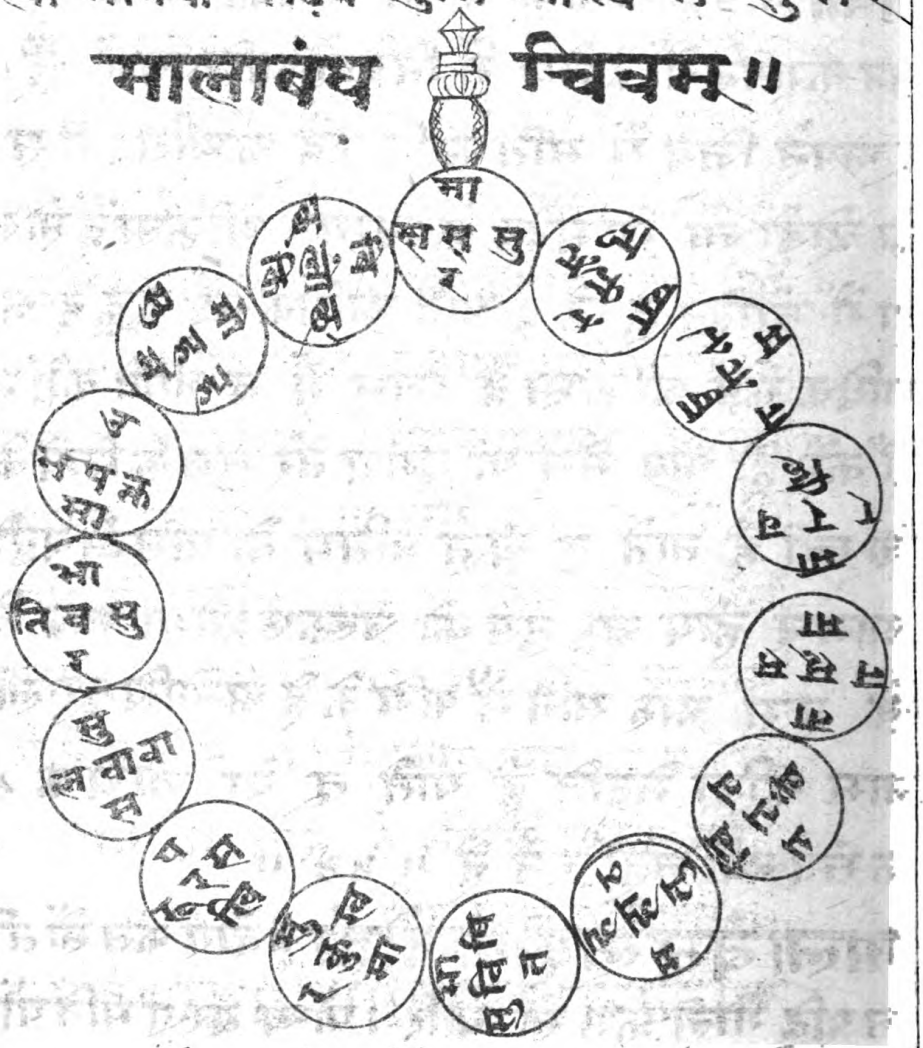
टीका ॥ यहां सखी को बचन नायका सों मान मो
चन करायबे में हेतिया में तिहारी बलि जाउं हूं।
तू अपने जिय में मति रूसि रहै अर्थात् रिस
को छोड़ो जो कामदेव के समान श्रीकृस्न हैं सो उ
तो में मोहित ह्वै रहे हैं यातें अधिक रूप तुहू है अरु
अधिक रूप श्रीकृस्न हैं तिन में तू प्रीति क्यों न
हीं करै है अब मैंने या समय तेरे सुख के लिये के
लि रची है नाते तू चल प्रीतम के पास तो बड़ो
आनन्द होय अरु तुम को उत्कृष्ट शोभा मय ह्वै
रैहै हम अरु मान में परि के हे अनोखि तू रली
नाम क्रीड़ा मेटति है यातें तू वा नायक
के संग क्यों नहीं रमै है ॥ ४९ ॥

माला बंध लक्षणं दोहा ॥ डोए क्रम सों ती
नि पढ़ि गोल क्रम सों चारि । पांच बरण मनियों

धरे सात पढ़ो निरधारि ॥५०॥
सूधे प्रथम सुमेर सौं मनियां वाँचो सिव। पुनि सुमेरउ-
लटो पढ़ो माला बंध सुचित्र ॥५१॥

टीका ॥ डोरा की रीति सौं तीन अक्षर डाढ़े पढ़िये पुनि मध्य का अक्षर छोड़ि के दक्षिणा वर्त करिके चारि अक्षर पढ़िये याही क्रम ते सुमेरु सौं एक एक मनियां पढ़िये पुनि अन्त्य से सुमेर

मालाबंध चित्रम् ॥



कीजेए उलटो पढ़िये पुनि दक्षिणावर्त सुमेरु के चार अक्षर पढ़िये सो माला बंध चित्र जानि-ये ॥ ५१ ॥

यथा दण्डकं ॥ मास रक्षमा सुर बिलोकि छ-वि छकि मोहन सु मोहन उपमान उक्त ना। भाव रति भा सुर सुवास लसु वास पखि रूप सरिव सु-कुमार सुखमा ॥ भावित सुभाषित हहा तुम दृढ तु चित बैन चित वै तासु मान ना समा। मार हिर मा रहिन तेरे प्यारे प्यारी ते नु प्यारे तर समा सुर समा ॥ ५२ ॥

टीका ॥ यहाँ सखी को बचन नायका सों मा-न मोचन कराय बे मैं मास्र नाम तू लक्ष्मी के समान है रमा सुर नाम शान्ति के देवता हैं अ-र्थात सतो गुण विष्णु में है सो विष्णु श्रीकृष्ण हैं या कहने ते यह फल सिद्ध भयो कि शान्ति प्रकृति सों क्रोध नहीं चाहिये तिन की छवि विलोकि के तू छकि कैसे है मोहन की सु मोहन नाम भ-ले प्रकार सों मोहन वारे हैं अरु याही ते उपमा उन की कहिबे में नहीं आवै है अरु कैसे हैं। भाव रति भा सुर नाम इच्छा के अनुसार प्रीति

मैं देदीप्य मान हैं अरु सुगंध करिके लसि र
हो है वस्तु जिन को या रूप को हे सखी तू प
रिचै नाम पहिचान अंतरंग सखी नायिका
हू को सखी करिके बोलै है अरु सुकुमार सु
खमा नाम कोमल है उत्कृष्ट शोभा जिनकी
या कहने ते नायक की किशोरावस्था व्यंग्य
भई अरु भावित सु भाषित नाम तेरे हित
करिके युक्त है मेरे कथन अर्थात् मानबे यो
ग्य है याते मैं इहा करति हौं तुम हू रटया क
रति हौ चित बैन चित वै नाम वेतो चितवत है
परन्तु तू नहीं चितवै है तातों मानता खमा नाम
ता समय में ताहू मान चाहिये यह काकु अर्थात
न चाहिये वे कैसे हैं मार हिर मावहि नाम।
काम देव के रमा वमे वीर हैं न तेरे मन प्यारे नाम
पीरे जो प्यारे हैं सो तेरे मन में नहीं यह प्रश्न में
काकु अरु प्यारी ते जु प्यारे ते नाम नायका
ते अरु नायक ते जो रस है ताके बीच में सुर
खमा नाम देवता कीसी खमा चाहिये अर्था
त् नायका अरु नायक दुहून को खमा
चाहिये याते रस बन्यो रहत है यह दृष्टान्त

सर्व नायका नायकन को सखी नें वा नायका को दरशायो ॥ ५२ ॥

मयूर बंध लक्षणं कुंडलिका ॥ नाभी जंघा अंगुली जंघ नाभि विपरीत। याही क्रम दू-जो चरण हृदय कंठ मुख मीत ॥ हृदय कंठ मुख मीन सीस पुनि चोंच चोंच शिर। सिखा सीस पुनि कंठ पक्ष चरनु उलटो पढ़ि फिर ॥ पीठ पुच्छ की गंथि पुच्छ के वर्ण विनाभी। पुच्छ गंथि ते जोड़ि नाभि तल पुनि पढ़ि नाभी ॥ ५३ ॥

टीका ॥ प्रथम नाभि को वर्ण पढ़िये पुनि जंघा पुनि अंगुली पुनि जंघा के वर्ण उलटे पढ़िये पुनि नाभि याही क्रम ते द्वितीय चरण पढ़िये पुनि नाभि हृदय पढ़िये अरु कंठ के वर्ण पढ़िये पुनि सीस का अक्षर पढ़िये पुनि चोंच पुनि चोंच पुनि सीस पुनि शिखा के अक्षर पढ़िये पुनि शीस पुनि कंठ के वर्ण कों उलटो पढ़िये पक्ष के वर्ण गता गत पढ़िये पुनि पुच्छ के वर्ण अरु पुच्छ की गंथि को वर्ण पढ़िये पुनि पुच्छ के एक एक पंख के वर्णन कों पुच्छ की गंथि सों मिलाइ के पढ़िये पुनि

नाभि के नीचे के वर्ण पढ़िये पुनि नाभि में समाप्ति कीजिये सो मयूर बंध चित्र जानिये ॥ ५३ ॥

यथा सवैया ॥ मासम सोहित सोम समा रस सो लखिबे सरसा परसा । सारस नैन ननै सुवनै सरसा सब वासु सुगंध समा ॥ मैं बलि मोहन के तन सोहन सैनन बैनन त्यो वनराण । मानहु गानहि मैन सुज्ञानन गौन करे नव प्रान रसा ॥ ५४ ॥

मयूरकाबंधचित्रं



टीका ॥ नायक मानी सों सखी का वचन मा-
न मोचन कराय वे में कैसी है नायका की मास
मसोहित नाम लक्ष्मी के समान सोभित है रही
है ऋ सोममा रस नाम चन्द्रमा के समान है
रस जामें अर्थात अमृत मय है सो नायका कों
लखिये सरमा सरोवर नाम के बीच में ताकी
परमा नाम उत्कृष्ट शोभा सारस नैमन नाम
नेत्रन करिके तुम कमल ही ऋ नै सुवनै ना-
म यह नीति सुंदर बनै है याको अंतरार्थ यह
है कि वह नायका या समय सरोवर में है ऋ ।
तुम हू कमल नेत्र हो याते तुमारो ऋ बाको संयो
ग बनै है ऋ सरसा सब पासु नाम रस करिके
सहित सम्पूर्ण पदार्थ पास है रह्यो है ऋ या
समय में उद्दीपन विभाव हू है की सुपाव समा
नाम सुन्दर पावस ऋतु की मा नाम सोभा है
रही है मैं बलि मोहन के तन सोहन नाम मोह
न के तन सुहावने पर मैं बलि जाऊं हूं अब ली-
जिये चलि के वनमा नाम जल के बीच में क-
रासन करिकै बचन करिकै वा नायका को मे-
रे गान नाम कथन की मानो है मेन सु आनन

नाम कामदेव सौं सुंदर मुख तिहारे गौन करौं।
नाम चलो नव प्रान रसा नाम है सूवन प्राण
के रमावने वाले ॥ ५४ ॥

काम धेन्वाकार लक्षणं दोहा "युग युग अक्षर पुच्छ ते छोड़ि पढ़ो नहिं मित्र। एक छन्द बहु रूप धरि कामधेनु सो चित्र ॥ ५५ ॥

टीका "दो दो अक्षर पुच्छ ते छोड़ि के बाँचिये छोड़े अक्षर अंत्य में जोड़ि दीजिये तहाँ छन्द तो एक हि अनेक प्रकार के रूप धारण करिके प्रगटै है सो कामधेनु चित्र जानिये ॥ ५५ ॥

कामधेन्वाकारबंधचित्रं



यथा सवैया ॥ प्रथम अहो बन रैन किये अब । प्रीति करी सुख पाय लली जनि। धाम गहो सुन चैन लिये भव रीति रची सुख गाय भली सुनि ॥ वाम लहो तन मैन हिये तब भीति खरी सुख भाय रली गुनि। नाम चहो पन बैन दिये सब भीति टरी दुख जाय बली पुनि ॥ ५६ ॥

टीका ॥ या काम धेनु को अर्थ आगे सत धेनु में कहैंगे सो जानिये ॥ ५६ ॥

इति श्री मत्काशिराजविरचित चित्र चन्द्रिका यां आकार चित्र वर्णनो नाम षष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

अथ गुण बंध चित्र लिख्यते दोहा ॥

काहू गुण को बाँधि ये जहँ आकृति को छोड़ि । सो गुण बंध विचित्र यह चित्र कहत कवि जोड़ि ॥ १ ॥

टीका ॥ जहाँ आकार तो काहू को लिखिये नहीं परन्तु कोऊ एक गुण को बखाय छन्द में बाँधिये ताको कवि जन जोड़ि के नाम बनाय के गुण बंध चित्र कहत हैं यह परम विचित्र चित्र जानिये ॥ १ ॥

नामेक गुण बंध लक्षणं दोहा ॥ एक देश के नाम सौं छन्द बंध करु मित्र । ताहि सु कवि जन कहत हैं नाम बंध सो चित्र ॥ २ ॥

टीका ॥ एक देश के नाम सौं नाम एक जाति के नाम न करिके अर्थात् पशु जाति पक्षी जाति अरु वृक्ष जाति इत्यादिक जाति जानिये तिन के नाम न करिके जहां छन्द रचिये ताको नाम बंध चित्र जानिये अरु नाम गुण बंध को यह अर्थ है कि पदिवे में पशुन को नाम आवे अथवा पक्षिन को नाम आवे अरु वृक्षनको नाम आवे इन को अर्थ और होय सो नाम बंध जानिये ॥ २ ॥

यथा वृक्ष नाम गुण बंध ॥ सवैया ॥

नीम हरै इतनी तिय मान की चूकन लाला कि तू ने विचारी । काणी के राज अनार पने ते रही बरसौं अमिली है पियारी ॥ बेर दुते कपै औरनि या की पिया पकरी कर भूलि के नारी । जामुनि सेवै सदा फल पावै सो तासूं न रूसिये बंध लता री ॥ २ ॥

टीका ॥ यह नायका माननी है ताकौं सखी

मान मोचन करावे है हे तिय तू जनै लाला ।
नाम श्री कृष्ण की चूक नाम तक सीर न ।
विचारी एती बड़ी मान की नीम दीनी नाम
तू ने काशी के राज कवि को नाम है अनार
पने ते नाम अपने अनाड़ी पनें ते है ।
प्यारी तू अपने बरसों नाम पति सों अमिली
नाम अन मिली है रही है बैर एतेकपै नाम
विरोध इतनी बात पर और तिया की पिया ने
भूक्ति के कर पकरी नाम गही है नारी जा
सुनि सेवै नाम जाकृष्ण को सुनि सेवा करै हैं
सदैव फल पावै हैं तासों न रूठिये हे चंपलता-
री या सवैया में एतेक रत्नन के नाम कढ़त हैं
नीम चूक लाला अनार बर अमिली बैर पक-
री नारी जासुनि सेव सदा फल रूस चंपल-
ता ए चौदह नाम जानिये ॥ २ ॥

तृतीय ग्राम नाम बंधो यथा दण्डक ॥

राखिये बनारसन पानी पति ऐसो आली वेतो त-
खतौर यह मेरठ सुमानिये । वास तू जो मैन
पुरी गुन आगरो सुनाही कालपी सौं लड़ि आई
कानौज बुद्धि जानिये ॥ काश्मीर ऐसो रंग मानि

कपुर दीजे अंग कान पूर दिये काहू चित और नहानि ये । हाँसी करैं सखियाँ बिनती करूं काही राज मा न तन प्यारी चलि पिय को मल आनिये ॥ ५ ॥

टीका ॥ यह मानवती नायका है ताको सखी मान मोचन करावति है राखिये बनारस नाम रस को बना राखिये न पानी पति ऐसो आली ना म है आली ऐसो पति फेर न पावैगी वेतो ल ख नौर नाम वे नायक तो और तिया को नहीं दे ख्यो है यह मेरद सु मानिये नाम यह मेरो भलो कहनो मान बाल तू जो मैन पूरी नाम है बाल तू तो काम देव करिकै पूरित है अर्थात मोदा है अरु गुन आगरो सुनी ही नाम मैने तोकौं गुनी मे आगरू सुनीही कालपी सो लड़ि आई नाम का ल के दिवस तू पीतम सौं लड़ि आई कानौज बुद्धि जानिये नाम कहा तिहारी नौज बुद्धि जानी ये अर्थात पीतम सो लड़ि आई तिहारी बुद्धि की अगुता कहा जानिये अरु काश्मीर ऐसो रंग ना म काश्मीर जो केसर तहत हैं रंगति हारो तासैं मानिक पुर दीजे अंग नाम ता अंग मैं मा णिक मणि के पूरै नाम जड़े भये जो आभरण

हैं दीजिये अर्थात पहिले ये कानपूर दिये कानू नाम कानू के कान भरि दिये तैं चिंतो रन रानि ये नाम चित्त में और बात न विचारिये हाँसी करै सखियां नाम इन बातन में सखी हास्य करै हैं यातें मैं विनती करूं हूं कि मान छोड़ि के पीतम कौं गरे सूं लगाइये या कवित्त मे दूतने ग्राम के नाम कहत हैं बनारस पानीपति लखनौ रसेरह मैनपुरी आगरा कालपी कन्नौज काश्मीर रेवा मानिकपुर कानपुर चित्तौर गढ हाँसी ए तेरह नाम जानिये ॥ ४ ॥

भाषा छल गुण बंध लक्षणं दोहा ॥

पढ़िवे में भाषा अवर अर्थ सुनाया और । भाषा छल गुण बंध सो चित्र कहत कवि मौर ॥ ५ ॥

टीका ॥ जहाँ पढ़िवे में भाषा और होय अरु अर्थ में भाषा और होय ताकौं भाषा छल गुण बंध चित्र कहत हैं जे कबिन के मुकट हैं ते ॥ ५ ॥

यथा दोहा ॥ आसमान लाल बुरो सुलह सुभावन बाल । बार रू बायन बीस मा जाय जाय वक माल ॥ ६ ॥

टीका ॥ सखी का वचन शिक्षा रूपी नायक सौं आसमान नाम सनमान की जो आसा है सो तो बुरे नाम बुरी है सुलह नाम भले प्रकार सौं लहो अरु सुभा नव बाल ना म सुंदर है भा नाम कान्ति जाकी ऐसी जो नूतन बाल है अर्थात् न बोढ़ा के मना प वे की आसा करनी तो बात बुरी है यातैं तुमही वांकुलहो अरु उद्दीपन विभाव हूं या समय ह्वै रह्यो है कि बादरुवाय नाम बादर अरु वायु इन करिके नवी समा नाम वर्षा को समयो रुकि रह्यो है तामैं जाय जाय बक माल नाम जाँय है जाँय है बगावली की मा ला नाम पंक्ति अर्थ तो याको भाषा में भयो परन्तु यदि वे मैं फारसी सी दीखे है ॥ ६ ॥

अनेक भाषा गुण बंध लक्षणं दोहा

एक छन्द रचिये जहाँ बहु भाषा तेमिव । कविको विद सब कहत हैं भाषा बंध विचित्र ॥ ७ ॥

टीका ॥ एक छन्द में जहां अनेक देश की भा षा धरिये सो अनेक भाषा गुण बंध चित्र जानिये ॥ ७ ॥

हि भाषा गुण वंध यथा धृति छन्दभेद

कंज सो मुख नैन खंजन अब रूपे चुक जू कमों की
र के सम नासिका दुति गे सुये दामे ज़मों ॥ दंत दा
डि महा स्व बिद्युत लाल लव अमनो असों । आजु
सो तिय तोहि जोवत गहन दीदै आसमों ॥ ८ ॥

टीका ॥ दूती का वचन नायक सों नायका को
रूपाधिक्य वर्णन करिके नायक को तेजायो
चाहति है कि कमल के समान है मुख जाको
अरु नेत्र हैं खंजन सें अरु अब रूपे चूं कज़ाक
सों नाम भौंहैं जाकी टेढ़ी कमान के समान हैं
अरु सुकाके समान है नासिका की दुति अ
रु गे सुये दामे ज़मों नाम बाल जाके जाल
संसार को है अर्थात् जिन बालन मैं मनुष्य फ
सि जात हैं अरु दंत हैं अनार से अरु हंसी जा
की बिजुली सी अरु लाल लव अमनो अमा ना
म अरुण ओष्ठ जाके वे आफत हीन हैं नाम दु
ख नहीं है जामें अर्थात् सुख रूपी हैं सो तिया आ
ज तुम को जोवत नाम देखत है गहन दीदै
आसमों नाम ऐसी नायका कबहूं आकाश
हू ने नहीं देखी है अई अई चरण में भाषा

ऋ ऋ ऋ चरणान में फारसी जानि-
ये ॥ ८ ॥

**द्वितीय चतुर्भाषा गुणबंध यथा रु-
ति छन्द भेदा ॥** प्रेम पालत प्रीति तोरे अपुन
ते वह नारिको । अन्नए भणि अंपुणो सहि सोस
वति व सणु ओ ॥ किं करोषि मुधा श्रमं रयितोमयि
हर तोपिनो । गर्व आवै आप से रफतन न खा-
हम हो हु हो ॥ ९ ॥

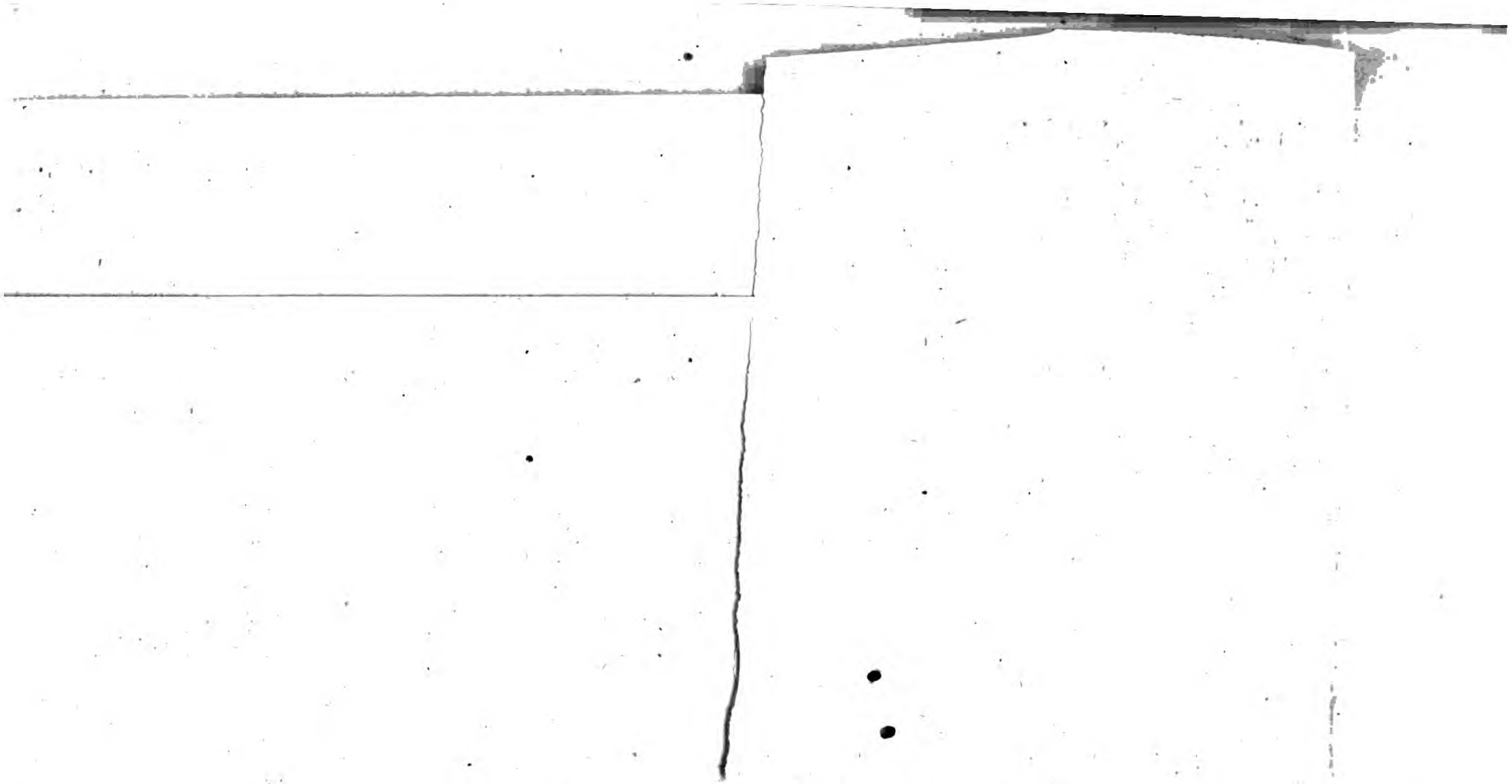
टीका ॥ यहाँ नायका को वचन सखी सौं
आपुही तैं प्रीति तोरे प्रीतम के प्रति पालत भ
ये हुं ऐसी संसार में नारि कौन है यह कासु
अर्थात् कोऊ नहीं है यातैं अन्नए भणि ओ
नाम अस्माभि भणितं अरु पुणो नाम
पुनः सहि नाम सखि सो नाम सहना
यकः सवति वसाणु ओ नाम सपत्नी वसा
नुगः यातैं हे सखी मैं वार वार तो सौं कहति
हौं कि नायक मेरो सौतिन के वस है रह्यो है
किं करोषि मुधा श्रमं नाम हे सखी तू रु-
था श्रम क्यों करैहै रयितो मयी हर तोपि
सो नाम रयित जो नायक है मेरो सो

मोमें अनुरक्त हू नहीं है गर्व आवै आप से ना-
म जो कदाचित् आपुही ते आवै तो आवो एक
तन न ब्याहम् हो मुहो नाम जायवो में नहीं चाह-
तिहूं यामें होनी होय सु होय अर्थात् पति के
पास मैं न जाऊंगी यामे तेरी उपाय कथा
है वह आवेतो आवो प्रथम चरण भाषा दि-
तीय चरण प्राकृत तृतीय चरण संस्कृत च-
तुर्थ चरण उर्दू जबान जानिये ॥ ९ ॥

**तृतीय अष्ट भाषा गुण बंध यथा धृ-
ति छन्द भेदोर्यं ॥** चंद ते मुख चारु सोहै ए
अण तो हरणी जिया । कैड ते वैंन ब जल्ला धूं
कलश जितस्व कुच थिया ॥ चंप काहूनि फार रंगी
आखि तुसी आसि चुकि आ । बार कों ढ हरि क-
ये छोरे बुवीं हज्ज कुल्हिया ॥ १० ॥

टीका ॥ यहां दूती का बचन नायक सौं ना-
यका को रूपाधिक्य बर्णन करिके नायक
को ले जा योचा हति है चन्द ते मुख चारु सो-
है नाम चन्द्रमा ते सुंदर मुख जाको सोहै तू-
है अरुण अण तो हरणी जिया नाम नयन
तः हरिणी जिता अर्थात् जिननेब करिके हरि

णी-जीति लई है अरु कैंड जै बूंन वजला धूं
नाम कैंड जो है कटि नाकी जे बूं कहिये ताके
समान वस्तु नव जला धूं नाम नहीं देखी
मैंने अरु कलश जित्स्वकुच श्रिया नाम
अपने कुच की शोभा करिके जीती है कलश
की शोभा जाने अरु चंप काहूं निफारंगी ना-
म चंपका जो चंपक पुष्प ताहूं तैं फार ना-
म अधिक है रंगी नाम रंग जाको आखि
तुसि असि चुक्किआ नाम यह बात तुसि ना
म तो सों असि नाम मैं आखि चुक्किआ ना
म कहि चुकी वारकों दूहरि करी छौ नाम अब
है हरि वार नाम बिलम्ब काईं नाम काहे कूं
करी छो नाम करे हौ रैवुंवी हज्ज कुल्लिया
नाम याते ये नाम तावो बुंवी नाम देखो हज्ज ना
म आनन्द कुल्लिया नाम परि पूर्ण या को भा-
वार्थ यह है कि नायका अति सुंदर है याते जा
मके वाको सुख देखिये प्रथम अर्द्ध चरण भा-
षा द्वितीय प्राकृत तृतीय गुजराती चतुर्थ संस्कृ-
त पंचम महाराष्ट्री षष्ठ पंजाबी सप्तम मार वा-
ड़ी अष्टम फ़ारसी अष्टभाषा जानिये ॥ १० ॥



कल्पवृक्षगुणबंधलक्षणं दोहा ॥
सूधे क्रम तें बाँचि पुनि काहू काहू रीति । भाषा छन्द अनेक जहँ कल्पवृक्ष की नीति ॥ ११ ॥

टीका ॥ प्रथम सूधे क्रम तें पढ़ि जाइये पुनि काहू काहू रीति के पढ़िवे में अनेक भाषा अनेक छंद कहे जहाँ सो कल्पवृक्ष गुण बंध चित्र जानिये ११

अंतर्गत पाठलक्षणं दोहा ॥ अरुणा सरनिल गावतें निकसत छन्द नवीन । त्योंही पीताक्षरनि पढ़ि यह क्रम जानि प्रवीन ॥ १२

टीका ॥ कल्पवृक्ष चित्र में अंतर्गत छन्द भाषा पढ़िवे की यह रीति है कि अरुण अरुण अक्षर ते मिलापी पंक्ति के हैं तिन के पढ़िवे में एक छन्द कहे अरु तैसेही पीत अक्षरन के पंक्ति मिलापी अक्षर पढ़िये दूसरो छन्द कहत है याही क्रम ते अरुण पीत रंग की मिलापी पंक्तिन के पढ़िवे ते अनेक भाषा छन्द कहत हैं सो जानिये ॥

॥ ॥ १२ ॥ ॥

अथकल्पवृक्षबंधचित्रं

कल्पवृक्षस्य प्रथम दोहा ॥ काशि राज लहि शंभु ते कल्प वृक्ष सो भाखि । मत कवि जगै प्रभाव शिव नर रस वर लहु चाखि ॥ १ ॥

टीका ॥ या दोहा में कल्प वृक्ष वर्णनकीके सो है कल्प वृक्ष कि काशीराज कवि ने लहि शंभु ते नाम शिव कृपा ते पायके भाषत है सो कैसो है कि कविन के बुद्धि को प्रकाश करन वारो है अरु याको प्रभाव शिव नाम कल्याण रूपी है अरु याको श्रेष्ठ रस जो नर चाखैं गे सो पावैंगो अर्थात् याकों जो पढ़ैं गे सो याको रस जानैंगे ॥ १ ॥

द्वितीय सोरठा ॥ खग हरि मनी नबंध ग लगत लर भासत परं । सेजं नए मत धर ची सु रन वसु पलिनव ॥ २ ॥

टीका ॥ यहाँ श्री कृष्ण की माला को कवि वर्णन करत है कि खग हरि मनी न बंध ना म खग जो माला श्री कृष्ण की रत्न मणिन करिके बँधी भई गले में ताकी लड़ी अन्य भ ई भासत हैं परं नाम उत्कृष्ट सेजं नाम ।

सदयं माला नरम तंध नाम नरन के बुद्धि की ग्रंध करन वारी है ग्रर्थात् मनुष्य की बुद्धि यामें प्रवेश नहीं करै है काहेते कि स्वी सुरन व सु पालिनव नाम देवता नि मे बनाई है नूतन द्रव्य कौं संचित करिके ॥ २॥

द्वतीय दोहा ॥ जलज सुवास वर देव नुप रम सु ग्रद्भुत मंत्र । भुवन संभारन बसि हृदय । द्यावा भूमी तंत्र ॥ ३॥

टीका ॥ यहां कवि ब्रह्मा जू को वर्णन करत हैं जलज सुवास वर देवनु नाम कमल में सुंदर है स्थिति जाकी ऐसे देवतनि में श्रेष्ठ जो हैं ब्रह्मा तिनको परम सु ग्रद्भुत मंत्र नाम उत्कृष्ट सुंदर ग्रद्भुत मंत्र यह है कि भुवन संभारन बसि । हृदय नाम लोक को बनावनो जाके हृदय में बसि रह्यो है द्यावा नाम स्वर्ग भूमी नाम एथ्वी तामें तंत्र नाम ग्रक्षर ग्रर्थात् निरंतर करिके ॥ ४ ॥

चतुर्थ बिरगाहा छन्द ॥ प्यारु भद्र तोरे कह लाला को वापरा ग्रमित्रि । मनो साधि काम सर लायो हूं जो लायक मी रस तचि ॥ ५ ॥

टीका ॥ यहाँ दूती का वचन मानी नायक सौं नायका पर कीया है लाला प्यारे तु भै नाम प्रीति लगाय कै तोरै नाम तोरि डारै कहो ऐसो को वा नाम कौन पर ग्रमिति नाम उत्कृष्ट पाव । है यहाँ वक्रोक्ति है ग्रर्थात् ऐसे पाव तुमही हौ मनो साधि काम सर लायो नाम ऐसी तुमारी प्रति लगी कि जैसें काम देव को सध्यो भयो सर लगे है ग्रर्थात् कामी दीपन करिके हे नायक तूं जो तहां नीर सना करै है या कहने ते संयोग करायबो व्यंग भई ५

पंचम विग्गाहा छन्द ॥ वारिद इंदं हट कभला जसे भला कुहुर्वली है ॥ सा लुल ग्राइ लीन सालग्गा के लिग लाला तनेचे ॥ ५ ॥

टीका ॥ यहां स्वयं दूती नायका को वचन नायक सौं वारिद इंदं हट नाम मेघ समुदाय हट करिके भजो नक्षत्र तिन कूं लाज से नाम लज्जित सौं करो ग्रर्थात् ग्राच्छा दित कियो कुहुर्वली है नाम ग्रंधकार रूपी लता है के सा घटा सूल रूपी ग्राइता में लीन भई पुनि सा नाम सोई लगातनेचे नाम तन के चुवन लगी केलि गलाला नाम हे केलि

चतुर या मेघ के वर्नन ते अंध कार संकेत द्यो नन भयो ॥ ५ ॥

षष्ठ उग्गाहा छन्द ॥ राम वरं नर जक्क धरं जय जब वंदं सदौ तारे । स्फुरंते मुख चन्द्रोप-काम को दिना सा छत्रं प्यारे ॥ ६ ॥

टीका ॥ यहाँ कवि राम चन्द्र की स्तुति करैहै कैसे हैं राम वरं नर नाम पुरुषोत्तम हैं पुनि जक्क धरं नाम जगत के पालन कर्ता हैं जय नाम तिनको मैं नमस्कार करूं हूं जब वंदं सदौ तारे नाम ज-वहीं वंदना कीजिये तब ही तत्काल मोस कूं देतहैं पुनि स्फुरंते मुख चन्द्रोप काम नाम प्रसिद्ध मुख चन्द्र है जिनको उप काम नाम समीप है काम जाके अप्राप्ति जाके मुख देखेते सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होत है को दिना सा छत्रं प्यारे नाम अ-स्मात् नाम या रामचन्द्र से दीन को छत्र अरु पीति करन हारो कौन है ॥ ६ ॥

सप्तम दोहा ॥ वरसव गीत वनत अद्भुत सुलभ गंग के द्राव । धी अंकुर प्रगटे द्रहाँ खात छापु भव भाव ॥ ७ ॥

टीका ॥ यहाँ कवि गंगा जीकी स्तुति करत है

कैसी है गंगा जिनके द्रव कहे करुणा तैं श्रे-
ष्ठ सम्पूर्ण गीत कहे मंगल सहज ही वन
त है अहत नाम विघ्न करिके रहित पुनि
इहाँ नामथलोक में धी नाम बुद्धि के अंकुर प्र-
गट होत हैं अरु पर लोक में रँगत छाप भव
भाव नाम भव जो है महादेव तिनके भाव
नाम रूप के छाप में नाम मुद्रा में रँगि देति है
अर्थात् शिव रूप करि देत है ॥ ७ ॥

अष्टम दोहा ॥ मनुज्ञो पल्लव अरु
ण से नावक भरी कि तार । तरणि सु अव पद
अडिव सो किरण तुंड सा कार ॥ ८ ॥

टीका ॥ यहाँ राधिका के चरण के महावर
को वर्णन जानिये मनुज्ञो नाम मानो अ-
रुण पल्लव से जो चरण हैं तिन में नावक
जो महावर तिनकी कितार नाम पंक्ति भ-
री भई या भाँति सोहति है कि जैसें तरणि
सु अव पद अडिव सो नाम सूर्य्य अवस्थिर
है कै चरण में वास कियो है किरण तुंड सा
कार नाम किरण को मुख आकार सहित है
रहे हैं अर्थात् किरण महावरी सादृश्य तै

चरण सूर्य सादृश्य की दृढ़ता भई सो जानिये ॥ ८ ॥

नवम दोहा ॥ गणि का गति ऋसैं दृभ ससुयौं पुल की भद्र लाभ । मदम तागी पिक सुवदु डुवये चख ए णा भ ॥ ९ ॥

टीका ॥ यहाँ सखी को वचन सखी सौं सामान्या नायका को रूप वर्णन मैं गणिका कीजो चाल है सो ऋस नाम या भाँति दृभ नाम हाथी ताडूते ऋधिक गति मंद हैं सो गणिका लाभ पाय के या भांति पुलकित ह्वै के मद मतागी नाम मद में उन्मत्त ह्वै के ऐसी गी नाम वानी ता करि के पिक जो है कोकिला तिन्हैं डुवो यदि ये ऋर्थति निरादर किये ऋरु देहरी दीप कन्या यकरिके नेत्र ते ए णाभ नाम हरिण की जो ऋभा कांति है ताहू को डुबोय दई ॥ १० ॥

दशम दोहा ॥ भरि कोधन तव तनि वनि यत्न तु सम करि ऋजानु । ऋव मुणरि जी तनि णि निरो रह्यो है मानु ॥ १० ॥

टीका ॥ यहाँ कस हं तरिका नायका सों सखी को वचन हे वनिय नाम हे व स ही तव तो

तुम क्रोध में भरि के तनी नाम खिचिके त-
ल जो नायक है तासों सम करि नाम वराव
री करी है अजान अब मुरारि जी हू ने रिस
हानि के बल तुमारो मानु जो अहंकार सोई
मात्र रह्यो ॥ १० ॥

एकादश सोरठा ॥ अरुन वसन पिय ल्या-
उ सुघनी रेवन रुर भई । सावन मध्य झूलाउ चलि
वन कुंजन पुंज में ॥ ११ ॥

टीका ॥ यहाँ सामान्या को बचन नायक प्र-
सों है पिय अरुण वस्त्र को ल्याउ काहे ते कि
भली भांति सों घनी मेघ की रुर भई है सावन
के बीच में झूला झुलाइये चलिके वन के कुंज
के पुंजन में ॥ ११ ॥

द्वादश दोहा ॥ बरन बरन घन भया है नी
डा लाग डरानु। दारुन दुख अब गर परो ति-
य विनु जुला समानु ॥ १२ ॥

टीका ॥ यहाँ नायक को विरह रूपी बन
न सखा सों नाना प्रकार के रंग को बादर
भयो है यातें जीव मेरो डरपन लग्यो अरु
अरुण नाम कठिन दुःख अब गरे प-

खो तिय विना नाम तिय के विरह ते जला समान अर्थात् मेघ अरिन के समान दा- हक है ॥ १२ ॥

त्रयोदश दोहा ॥ तिय वानिक लखि जा- ति है साल सगरो गुमान । बल्लभ गल लागी तुही परम सरस भरि तान ॥ १३ ॥

टीका ॥ यहां सखी को बचन सामान्या ना- यका सों यह है कि वानिक जो तेरो बनाव है ताको देखिके और जो तिया हैं सो जरे हैं अ- थवि कुढ़े हैं अरु सालस नाम आलस यु- क्त ह्वै रही हैं अरु गरो गुमान नाम गर्व उनको गरि गयो बल्लभ जो पीतमता के कंठ सों तुही लगी उत्कृष्ट रस भरी तान गाय के ॥ १३ ॥

चतुर्दश दोहा ॥ कहु होद चलि सुख स- रा गुल लाला सी यत्र । सुख दन प्रसून वरण भा समा ललन अब तत्र ॥ १४ ॥

टीका ॥ यहां दूती नायक को संकेत स्थान में ले जायो चाहति है हे नायक जल भरे हो रे के तट में चलि के सदैव सुख करो गुल ला- ला सी यत्र नाम गुल लाला पुष्प की शोभा

है जा ठौर में अरु सुसदन नाम सुंदर भवन। है जहां अरु असून नाम और द्रुपथन की श्रेष्ठ सभा है अर्थात् फुलवारी है हे ललन अब ता स्थान के देखिबे को समय है ॥ १४॥

पंचदश सोरठा ॥ लूटत सुबास दीस गत जल लरजे जुवा सब। करै नादि नय सीस सोदव कस हुसी नाथ नट ॥ १५ ॥

टीका ॥ यहां चीर हरण समय में गोपिन को बचन श्रीकृस्न जी सों लूटत सुबास दीस नाम लूटते भये सुंदर बसन न कूं देखि के गत जल नाम जल में आन भई जुवा जो तरुणी नायका ते लरजी नाम लचिके सीस नवायं के नाद जो पुकार ताकों करत भई कि हे श्री नाथ हे नट सो बस्त्र बकसहु अर्थात देव ॥ १५॥

षोड़स बिगाहा छन्द ॥ तो लूदंदुन मुख सजि आगे रति अति दीसि रतीअ। सो स्यामि लाउ एता सो भा रमा सयानी नारि अीअ ॥ १६ ॥

टीका ॥ यहां नायक को बचन दूती सों तो

लू इंदु न मुख सजि आगे नाम वा नायका के मुख के बनाउ के आगे चन्द्रमा को बराबर न करौं अरु रति अति दीसि रतीश नाम काम पत्नी अत्यंत रती मात्र देखि परै है सो नायका को ल्यायके मिलाउ रता सोभा नाम अनुरक्त होय रही है सोभा जामें यह सुंदर ता की परा काष्ठा जानिये रमा सयानी नारि श्रीश नाम रमा जो लक्ष्मी ताहू ते चतुर ऐसी जो नारि है सो मेरी प्यारी है ॥ १६ ॥

सप्तदश दोहा ॥ है तस्कर तुम हनू मगज ब गोरस लैं बाल। काहू कुटिल हासी निरत हसत नचत करि ताल ॥ १७ ॥

टीका ॥ यहाँ गोपिन का बचन श्री कृष्ण सौं है तस्कर तुम हनू मग नाम तुम चोर हौ के रक्षा मारे हो जब बाल गोरस लेत है अर्थात् जब गोरस लेकै कढ़े हैं तब ही तुम रक्षा लूटे हो है काहू कुटिल है हासी निरत नाम है कुक्षा मैं निरत या उपरांत हंसत हौ अरु नचत हौ ताली बजाय करि के ॥ १७ ॥

अष्टादश दोहा ॥ पर कर गह लतियानि-
रखि जिय तर्फी यों जाय । ईहा नचि वो मोलव
सि वन तन गति लघ गाय ॥ १८ ॥

टीका ॥ यहां नायका गणिका सखी को
बचन सखी सों तिया जो सामान्या है सो प
र कर गहल नाम और नायका को हाथ गहे भ-
ये नायक कूं देखि कैं या भांति जिय में तर्फि जा
य है नाम व्याकुल होति है ईहा कहे हाव भाव
दि चेष्टा अरु नचि वो कहै नृत्य करिबो पद
सब मोल के वस हैं धन पराधीन तासों करति
है परन्तु मन की उमंग सों लघु गति नाम
शीघ्र गति सों गान नहीं वनि सकतु है ॥ १८॥

एकोन विंशति सोरठा ॥ तूं शशि वद-
ना कीन है सलि लज मृग वने सर। अप्सरसुक-
न्या हीन कोकिल कीर मरा राज वर ॥ १९ ॥

टीका ॥ यहां सखी को बचन नायका से है
शशि वदना तूं कहै तैंनैं सलि लज नाम क
मल अरु हरिण अरु वनेसर नाम वने
भये तलाव अरु अप्सरसुर कन्या नाम ह्य
करिके रहित ऐसी देव कन्या अरु कोकिला

करि नाम हाथी अरु मृग राज वर नाम अरु सिंह ले नाम लेवैं हीन किये अर्थात तैंने अपनी अंगा की शोभा करिके जीति लीने हैं ॥ १९ ॥

विंशति तम दोहा ॥ सरस बड़े अंबुज नहीं नहि तुव दृग दीनी हार । सदा जु कोकिल सुम तुसों रटत तुल तन पुकार ॥ २० ॥

टीका ॥ यहाँ सखी की उक्ति नायका सों ॥ रस बड़े अंबुज नहीं नाम रस युक्त बड़े कमल नहीं को तेरे दृग ने हार दीनी अर्थात हराय दिये अरु सदैव जो कोकिला सुम तुसों नाम भले मत सों रटतु है परन्तु तुले नहीं है पुकार अर्थात तेरी वाणी की मधुरता कों नहीं पावै है ॥ २० ॥

एक विंशति तम दोहा ॥ चलन ता मि मे तुम पठै दीसि चलन अब दृग । गजहु गै ल लघु चिसिक तुव आया नहि रे निरुक ॥ २१ ॥

टीका ॥ यहाँ सामान्या नायका कौ वत्सम नायक सों चन की ललानि मैं तुम ने मोहि भेज्यो अब तुमारो चलन अरु दृग दीसि पड्यो

अर्थात् तुमारी प्रीति अरु रहनि दीख पड़ी हमारी गैल छोड़ो लघु त्रिसक तुव नाम तुम्हा ही चसका जो चाह सो लघु कहे ओछी है का हेतें कि तू आया नहीं वहां संकेत में दे निस नाम दे डालो मोहर हमारे मोल की ॥ २१ ॥

द्वाविंशति तम दोहा ॥ कर दीजिय मृग नैनि सब कहत बचन रस खान। दृग लतन गुथे दासने हो तो ह्यों दधि दान ॥ २२ ॥

टीका ॥ यहां श्रीकृस्न को बचन गोपिन सों कर दीजिय नाम हमारी भेट दीजिये हे सम्पूर्ण मृग नैनी यह बचन रस भर्यो तुम सौं मैं कहत हूं दृग लतानि तैं गुथि रहे हैं अत्पन्न करिकें अरु यहां दधि को दान होत रह्यो है अर्थात् सो तुम न देवगी तो हम जोरावरी लैंगे या बन में सहाय तुमारो करन हारो कोई नहीं है ॥ २२ ॥

त्रयो विंशति तम सोरठा ॥ फल तल तनि वर दाख सारित सर वर रस नया । आछे मधे सुभाख य बेए चलि लालन मिलु ॥ २३ ॥

टीका ॥ पर कीया नायका कूं दूती उद्दीपन

विभाव श्रवण करय के अभिसार करयो। चाहनि है फलि रही है लतानि में दारव भेष अरु सारित नाम नदीन का समूह अरु सरोवर में रस जो जल सो नूतन है आके मथे सुभाख नाम अच्छी तरह सूं बिचारे भयो मेरो वह बचन है कि या समय में चलि के ललन जो श्रीकृस्न हैं तिन सों मिलो ॥ २३ ॥

चतुर्विंशति तम दोहा ॥ चलु तहँ लखि मुर कंद पिय हौं जानि दुख पाय। वहै खुभीऊँची अटा सुब सत जहँ जदु राय ॥ २५ ॥

टीका ॥ यहाँ नायका को बचन अंतरंग सखी सों तहाँ चलो हे सखी लखि मुर कंद पिय नाम मुर दैत्य के नाश कर्त्ता ऐसे जो पिय श्रीकृस्न तिन्हे देख्यो हौ हौं जानि दुख पाय नाम मैं बिरह रूपी अग्नि की ज्वारि जो मर ता करिके दुख पाय रही हूं काहे ते कि वही जो अटा खुभि रही है अर्थात् चुभि रही है जहाँ भली तरह सों यदुराय बास करत हैं ॥ २४ ॥

अंतर्गत पंच विंशति तम संस्कृत शि. खरिणी छन्द ॥ भवानी पं बंदे गल ग. रल सोभाद्भुत तरं । भुजं गै रा भांतं सिरसि सुर नद्या सु ललितं ॥ त्रि नेत्रं भस्मांगं दिगम लपटं चंद्र मुकुटं । सुरेंद्रा दै र्वंद्यं भव भय हरं भक्त व. रदं ॥ २५ ॥

टीका ॥ यहां कवि महादेव जी की स्तुति करतु है भवानी पं बंदे नाम पार्वती के प. ति जो महादेव तिन को मैं नमस्कार करूं हूं कैसे हैं महादेव की गल गरल सोभा द्भुततरं ना म गल जो कंठ तामें गरल जो बिष ताकी सो. भा करिके अद्भुत तर हैं नाम अत्यन्त आश्च. र्य रूप हैं पुनि कैसे हैं कि भुजं गै रा भांतं ना म भुजंग जे सर्प तिन करिके आभांतं ना म चारों ओरते प्रकाश मान हैं पुनि कैसे हैं कि सिरसि सुर नद्या सु ललितं ना. म सिरसि कहैं मस्तक के विषे सुर नदी जो गंगा जी ता करिके सु ललितं नाम अतिशय करिके सोभाय मान हैं पुनि त्रिनेत्रं नाम ती न हैं नेत्र जिनके पुनि भस्मांगं नाम भस्म ल

ग्योहै अंग मैं जिनके पुनि दिगंबर लपटं नाम दिशाही हैं निर्मल वस्त्र जिनके अर्थात् दिगंबर हैं पुनि चन्द्र मुकटं नाम चन्द्रमा है मुकुट जिनके पुनि सुरेन्द्र वंद्यं नाम देवेन्द्र आदिक देवता नि करिके नमस्करणीय हैं पुनि भवभय हरं नाम संसार के भय के दूर करन हार हैं पुनि भक्त वरदं नाम भक्त जन के मनोरथ दाता हैं कल्प वृक्ष मैं याके पढ़िबे की यह रीति है कि अरुण अक्षरन ते युग सर्प गति ते बाँचिये ॥ २५ ॥

अंतर्गत षट् विंशति तम अनुलोम अनुष्टुप् श्लोक ॥ रहरे वह लाला से वाला रङ्ग मली मसा । साल कार स लीला सातुं गालं लिक लारत ॥ २६ ॥

टीका ॥ यहाँ नायका पक्ष की सखी को वचन रास क्रीड़ा मैं श्रीकृष्ण सों हे अलिकलारत हे हरे हे दक्षिण नायक श्रीकृष्ण द आश्चर्य लाला से नाम दीप्ति विशिष्ट नृत्य साल का नाम अलके न सहिता साल का पुनः रसलीला नाम रसः शृंगार सान्म ।

थी लीला यस्याः सा रस लीला पुनः तुंगाला नाम अत्युत्कृष्टा उत्तमा इत्यर्थः एवं भूता बाला नायिका इदानीं राहु खलः मान रूप क्रोधा वेश खेन मली मसा नाम मलिना वर्त्तते अतः कारणात् तां बालां वह नाम आवाहय अलि कलात नाम भमर के कला में प्रवीन अर्थात् दक्षिण अरु हरे नाम हे श्री कृस्न ई नाम अचरज है यह किला नाम शोभा लासे नाम नृत्य में अर्थात् रस मंडल की शोभा में वह नायका मानिनी है यह आश्चर्य है कैसी है वह नायका की साल का नाम अलक करि के सहित है पुनि रस लीला नाम रस रूप है लीला जाकी पुनि तुंगाला नाम सब नायकान सों अधिक सा नाम ऐसी जो प्रसिद्ध नायका सो अब राहुमली मसा नाम राहु जो तम अर्थात मान रूपी जो क्रोध तासों मली मसा नाम मलिन मन है रही है यातें तुम वा नायका कूं वह नाम बोला वो कल्प वृक्ष में पीला खरन में गो मूचि का गति सों सरस्वती कंठा भरण को श्लोक कहत है ॥ २६ ॥

अंतर्गत सप्त विंशति तम प्रति लोम प्राकृत अनुष्टुप ॥ तरला कलिला गा तुंसा लाली सर कालसा । साम लीम हु एला वासे लाला ह वेरे हइ ॥ २७ ॥

टीका ॥ यहां इती का बचन श्री कृस्न सों तरला नाम चंचला कालिला नाम रसार्द्रा गातुं नाम गानं कर्तुं सालाली नाम सा प्रिया सरकालसा नाम सर के नाम नृत्य गति विषे आस मंताल्ल सती ति आलसा सामली नाम सामो पाय लीना मधुरालावा नाम मधुरालापा से लाला हव नाम सेल नाम सैलः तस्य आलाह नाम आलभनं तव याति गच्छतीति तत्संबो धनं हे से लाला हव नाम गोवर्द्धनो द्धरण रेहे इ नाम सा नायका राजते: अर्थात चंचल है अरु रस सों भी जी भई है गान करिवे को सो लाड़िली नृत्य गति विशेष में चारों ओर तें सोभाय मान है रही है सामो पाय में लीन है रही है अर्थात तुम सों मिलाप चाहति है अरु मधुर बोलिवे में है हे गोवर्द्धन धारी सो नायका सोभाय मान है रही है याको आशय यह है

कि ऐसी गुणवती रूपवती नायका सों तुम मिलो ॥ २७ ॥

अंतर्गत अष्टाविंशति तम प्राकृत आर्या ॥ भणि ओ वल्ल अव दुए अज्जा सुत पुरी गंता दृअ । भणि अं अताए पिय दव हूं सव ए पुउ एसा ॥ २८ ॥

टीका ॥ यहां काहू एक गोप राज को वचन अरु ताकी पत्नी हू को बचन काहू एक गोप सौं ता बचन कौं ता गोप राज पुत्र की बधू आदर पूर्वक श्रवण करति है सो लखि कै सखी सखी सौं कहति है भणि ओ नाम भणित अर्थात् कह्यो है वल्ल अव दुए नाम बल्लव पतिना अर्थात् काहू गोपिराज ने का हू गोप सौं अज्जा नाम अद्य अर्थात् आज के दिवस सुत नाम सुतः अर्थात् पुत्र मेरो पुरी नाम मधुपुरी को गंता नाम गमिष्यति अर्थात् जायगो अरु दृअ नाम दृश्यं अर्थात् याही रीति सौं भणि अं नाम भणितं अर्थात् कह्यो अताए नाम आर्यया दइया अर्थात् दइ सा सुइनें पिय दव नाम पिवति अर्थात्

आदर पूर्वक श्रवण करै है वहू नाम पुत्र वधू सवण पुडण नास श्रवण पुटने अर्थात कान रूपी दोना करिके सा नाम सो पुत्र वधू सास श्वशुर के बचन और सौं कहत भये पति के विदेश जायवे की बात आप हू आदर पूर्वक सुनति है याते सुदिता जानिये कल्प वृक्ष में याके पढ़िवे की यह रीति है कि पीतारुन तें एक नाग गति करिके अलंकार कौस्तुभ की प्राकृत आर्या कहति है ॥ २८ ॥

एकोन त्रिंशति तम अंतर्गत उर्दू बैत ॥

जरद रंगी बसंत ल्याया है । गुल असफी ने रक रखाया है ॥ २९ ॥

टीका ॥ यहाँ कवि की उक्ति वसंत ऋतु मैं नपका के पीत वस्त्र के वर्णन मै जरद रंग वसंत पंचमी त्योहार ल्यायो है अर्थात पीत वसन सबने धारण करे ताकौं देखिके गुल असफी नाम जरद दाउदी पुष्प ने रक्त खाया है नाम डार खायो है कि ऐसो रंग हमारो नहीं भयो कल्प वृक्ष मैं अरुणा वरन तेतिर्यक गति सौं बाँचिये ॥ २९ ॥

अंतर्गत विंशत तम ज़बान दबरानी नस्र ॥ अरबा होवा मुहति लै हिंदी कत जा ॥ ३० ॥

टीका ॥ यह मूसा पैगंबर ते पहिले शीश पैगंबर भये हैं तिन्होंने सर्प्य के बिष के दूर करिबे के लिये खुदा सों दुआ मागी है यह की अरबा होवा ऐ सफ़ा दिहंद अर्थात हे व्याधि के दूर करन वारे मुहति लै ज़हर मार अर्थात सर्प्य को बिष हिन्दी मुहत लिक अर्थात मृत्यु करन हारो कतजा दफ़ै कुन अर्थात ना बिष को दूर करो या मंत्र कौं जो कोऊ तीन बार पढ़ैगो ताको सर्प्य बिष न चढ़ैगो कल्प वृक्ष में अरुणाक्षरन में तिर्य्यक गति सों दबरानी ज़बान कढ़ति है ॥ ३० ॥

अंतर्गत एक विंस तम फ़ारसी मिस्रा

दंदा नेतु अंद रस्क लुलू ॥ ३१ ॥

टीका ॥ यहाँ कवि दंतन को वर्णन करै है दंदा नेतु अंद नाम दंत तेरे हैं रस्क लुलू नाम डाह है मोती न को अर्थात तेरे दंतन की समता को मोती नहीं पावै हैं यातें डाह करै है कल्प वृक्ष में अरुणा क्षरन तें उलटी तिर्य्य

क गति बाँचिये ॥ ३१ ॥

अंतर्गत द्वा त्रिंस तम पंजाबी भाषा मैं दोहा ॥ चलदी ताडे नालनू जितदा साडा देस । कीकर दा वद नामिदा मोही तुसिदा बेस ॥ ३२ ॥

टीका यहां पर कीया नायका को बचन उपपति सों चलदी ताडे नालनू नाम चलौंगी तिहारे संग मैं जित दा साडा देस नाम जहाँ है तुमारो देश की करदा वदनामिदा नाम कहा करोगी बदनामी मेरो काहे ते कि मोही तुसिदा वेस नाम मोहित भई हूं तेरे स्वरूप पै कल्प वृक्ष में पीता छरन तैं सिखर गति सौं पढ़िये ॥ ३२ ॥

अंतगति त्रय त्रिंसंत्तम जय नागर की भाषा मैं सोरठा ॥ घणी लाग सी बार कौंई छेको गैल थे । ऊभी छें दरजदार जावा दीजे लाल जी ॥ ३३ ॥

टीका ॥ यहाँ गोपी को बचन श्री कृस्न सों घणी लाग सी बार नाम बड़ो बिलंब लगे गो कौंई छेको गैल थे नाम काहे को रोक

न हो रह्या तुम ऊभी छैं ब्रज दार नाम श्री रह ब्रज की स्त्री ठाढ़ि हैं याते जावा दीजै लाल जी नाम या समय में जीने दीजिये हे लाल जी कल्प वृक्ष में अरुणा स्वरन तें नौका गति सौं पढ़िये ॥ २३ ॥

अंतर्गत चतुस्त्रिंसत्तम महाराष्ट्री भाषा में दोहा ॥ सो डुनि कुंज भवन अता घरात याहो राव । एथे चिमन्या बोलल्या दिसूं लागला दाव ॥ २४ ॥

टीका ॥ यहाँ प्रौढ़ा नायका को बचन नायक सों केलि विषय में सो डुनि नाम छोड़िके कुंज भवन को अता नाम अब धरात याहो नाम घर के भीतर आवो राव नाम हे प्यारे एथे चिमन्या बोल ल्या नाम इस स्थान में चिरियां बोल चुकी अरु दिसूं लागला दाव नाम देखिव परन लग्यो रह्या याको भावार्थ यह है कि यहाँ केलि को समय नहीं रह्यो याते भवन के भीतर चलिये केलि कीजिये कल्प वृक्ष में अरुणा स्वरन ते चनुठको

ए मंडल मे पढ़िये ॥ ३४ ॥

अंतर्गत पंच त्रिंस त्तम चौपाई ॥

सीता सोभा रमा सयासी । सीया समा रभा सो तासी ॥ ३५ ॥

टीका या चौपाई को अर्थ गति चित्र प्रकाश में प्रथम ही नव कोष्ट में कहि आए हैं सो जानिये कल्प वृक्ष में अरुणा करन ते गुलेल की रीति सौं बाँचिये ॥ ३५ ॥

अथ सत धेनु गुण बंध लक्षण तोमर छन्द ॥ सत छन्द प्रगट त यत्र । सत धेनु कहित तत्र ॥ वहु अर्थ दायक चित्र । कहि काशिराज पवित्र ॥ ३६ ॥

अथ प्रथम धेनु

ए	म	अ	हो	व	न	रै	न	कि	ये
धा	म	ग	हो	द	न	चै	न	लि	ये
वा	म	ल	हो	त	न	मै	न	हि	ये
ना	म	च	हो	प	न	वै	न	हि	ये

अथ द्वितीय धेनु

अ	व	श्री	ति	क	री	रु	ख	पा	य	ल	ली	उ	नि
भ	व	री	ति	र	री	सु	ख	गा	य	भ	ली	सु	नि
त	ब	नी	ति	ख	री	सु	ख	भा	य	र	ली	पु	नि
स	व	भी	ति	ट	री	दु	ख	जा	य	ब	ली	पु	नि

टीका ॥ सौ छन्द जहाँ प्रगटै एक कबित्त ते तहाँ सत धेनु कहिये अरु नाना प्रका के अर्थ हू दे ऐसो जो चित्र है ताको सतधेनु चित्र जानिये अरु पवित्र है यह काशीराज क- वि कहैहै ॥ ३६ ॥

शतधेनु प्रथम सवैया यथा ॥

श्याम अहो बन रैन किये अब प्रीति करी रुख पाय लली उनि । धाम गहो छन चैन लि- ये भव रीति रची सुख गाय भली सुनि ॥ बाम लहो तन मे न हिये तब नीति खरी सुख भाय रली गुनि। नाम चहो पन बैन दिये सब भीति टरी दुख जाय बली पुनि ॥ १ ॥

शतधेनु गुण बंध चित्रम्

श्याम	अहो	बन	रैन	किये	अब	प्रीति	करी	रुख	पाय	लली	उनि
धाम	गहो	छन	चैन	लिये	भव	रीति	रची	सुख	गाय	भली	सुनि
बाम	लहो	तन	मैन	हिये	तब	नीति	खरी	सुख	भाय	रली	गुनि
नाम	चहो	पन	बैन	दिये	सब	भीति	टरी	दुख	जाय	बली	पुनि

टीका ॥ यह बासक सज्या मुग्धा नायका है यहाँ उत्तम दूती का बचन नायक सौं श्याम ।

अहो बन रैन किये अहो श्याम तुमने बन में
रचि कियो अब प्रीति करी रुख पाय लली ।
उनि उन लली ने अब प्रीति करी है तिहारो ।
रुख पाय कै यासों धाम गहो रुन चैन लिये ।
गह को चलो रुण नाम उत्सव ताके सुख के
लिये भव रीति रीं सुख गाय भली सुनि संसा-
र की रीति मैंने अपने सुख सों गाय के क-
ही सो भली तरह सों सुनो बाम लहो तन मै-
न दिये हे तन मैन बाम को हरै मे लहो तब
नीति खरी सुख भाय रली पुनि तब तुमारी
नीति खरी है अरु सुख भाय की कीड़ा बिचा-
रे नाम चहौ नाम अपने नाम को चाहौ
अर्थात् मुग्धा के बस करने में नायक की
चातुरी ही चै है पन बैन दिये सब भीति टरी
दुख जाय वली पुनि वा नायका ने प्रतिज्ञा के
बचन दिये हैं अब हमारी सब भीति टरी अ-
रु वली नाम बड़ी अर्थात् बड़ोई दुःख दूर होतु
है याको आशय यह है कि मुग्धा नायका सें
तिहारो संयोग होने से हमारी भीति टरै है
अरु पुनि तिहारो दुख दूरि होतु है सो सो अ-

सार छोड़ि के पढ़िये अरु अन्तमें वेही अक्षर योग
करिके पढ़िबे तें द्वितीय सवैया कहै है ।
याही क्रम सों षष्टि सवैया कहै हैं ६० उत्त-
च्च होतु हैं अरु गोमूत्रिका क्रम सों द्वादश स-
वैया कहै हैं अरु अश्व गति करिके द्वादश स-
वैया कहै हैं अरु दो दो अक्षर वृद्धि करके ए-
कादश छन्द कहतु है अरु चरणा कों आद्यंत
कियें सों तीन सवैया कहतु है अरु एकाक्षर
करिके एक एक चरणा कों एक छन्द है अरु ।
चतुर्दशाक्षर चारि चरणा करि दूसरो छन्द है इ
न दोऊ छन्द के संगम कियें तें प्रत धेनु को
स्वरूप कहै है या क्रम सों सौ छन्द कहै हैं सो ग्रंथ
ग्रंथ बाहुल्यात् भीति करिके पृथक् पृथक्
रूप नाही लिख्यो सुकवि जो हैं सो विचारि
लेउ शुभं भवतु ॥ १ ॥

इति श्री मत्काशि राज विरचित चि-
त्र चन्द्रिका यां गुण बंध चित्र वर्णनो
नाम सप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

अथ अर्थ चित्र लिख्यते

दोहा ॥ गण पति पद पंकज सुमिरि बानी चरण मनाय॥ अर्थ चित्र वर्णन करौं सुनहु सु कबि सुख पाय ॥ १ ॥

टीका॥ गणेश के चरण कमल को स्मरण करिके अरु सारदा के चरण मनाय करिके अर्थ चित्र वर्णन करौ हौं हे सु कबि बिसुख पाय कै सुनौं ॥ १ ॥

एकाक्षरादि अर्थ चित्र लक्षणम्

दोहा ॥ एक आदि दै चारि लगि वर्ण अर्थ यह चित्र ॥ एथक् एथक् वर्णन करौं समझि लीजियो मित्र ॥ २ ॥

टीका ॥ एकाक्षर नाम एक अक्षर अर्थ दाता द्व्यक्षर नाम दो अक्षर अर्थ दाता त्र्यक्षर नाम तीन अक्षर अर्थ दाता चतुरक्षर नाम चार अक्षर अर्थ दाता यह अर्थ चित्र है एथक् एथक् वर्णन करौं हौं हे मित्र समझ लीजियो ॥ ॥ २ ॥

एकाक्षर अर्थ चित्र चौपाई ॥

खगराय रै धुरो दानिवा । यल छय टह शंच शोभानिधा ॥ ३ ॥

टीका ॥ ख नाम ज्ञान ग नाम गणेश ए-
नाम स्तुति ए नाम सुवर्ण य नाम पशु रै ना-
म स्वामी अर्थात् इन के पति हैं षु नाम दंपति
ऐ नाम शिव यहां दंपति सहित शिव कहने
को यह आशय है कि अर्द्ध नारी स्वर वर्णन ।
है दा नाम दाता नि नाम मोक्ष वा नाम प-
वित्र अर्थात् पवित्र मोक्ष के दाता हैं य ना-
म यश ल नाम अमृत ढ नाम निर्मल त ।
थ नाम रक्षा द नाम डमरू ह नाम निवास
स्थान अर्थात् इन के घर हैं शं नाम कल्या-
ण अथवा सुख च नाम चन्द्रमा श्री नाम शो-
भा नाम कांति अर्थात् इन करिके सो भि-
त हैं नि नाम आश्रय वा नाम वरुण अर्था-
त् वरुण जाके शरण हैं ऐसे हैं महादेव एक
एक अक्षरन तें अर्थ कह्यो यातें एकाक्षर चित्र
जानिये ॥ २ ॥

अथ हि अक्षर अर्थ चित्र दोहा ॥
पद कर मुख दृग कंज बर राधा ऐसी बाम । क-
ल छल बल करि लहो तुम मानो मेरी स्या-
म ॥ ॥ ४ ॥ ॥

टीका ॥ यहाँ दूती का बचन नायक सों पद ॥ कर मुख दृग कंज बर नायिका के चारों अंग कमल तें श्रेष्ठ हैं राधा ऐसी वाम ऐसी राधा स्त्री है कल छल बल करि लहो तुम मानो ॥ मेरी श्याम हे श्रीकृष्ण मेरी बात मानो काहू कल छल बल करिकै वा नायिका कौं प्राप्त हो ह अर्थात् मिली दो दो अक्षरन तें अर्थ कहे या तें द्व्यक्षर चित्र जानिये ॥ ४ ॥

अथ त्र्यक्षर अर्थ चित्र दोहा ॥ मोहन सोह न एवरो गोहन गहत प्रवीन ॥ फेरन घेरन दोहनो हेरन बिपिन नवीन ॥ ५ ॥

टीका ॥ यह स्वयं दूति का नायका मोहन सोह न एवरो गोहन गहत प्रवीन मोहन सौं भाव मान तुमारो संग गहत हौं हे चतुर या कारण के लिये फेरन घेरन दोहनो हेरन बिपन ॥ नवीन गौअन को फेर ल्यावनो घेर ल्यावनो दु हवाय लन्यो खोजनो नये बन में तीन तीन अ क्षर अर्थ दाता हैं यातें त्र्यक्षर अर्थ चित्र जा निये ॥

अथ चतुरक्षर अर्थचित्र

दोहा ॥ सुरपति जगपति दयापति सीतापति रघुनाथ । सुखपति रसपति गोपपति राधापति ब्रजनाथ ॥ ६ ॥

टीका ॥ सुरपति जगपति दयापति सीतापति रघुनाथ देवता के पति विश्व के पति दया के पति ऐसे सीता के पति रामचन्द्र हैं सुख पति रसपति गोपपति राधापति ब्रजनाथ सुख के पति नव रस के पति ग्वालन के पति ऐसे राधा के पति ब्रजनाथ श्रीकृष्ण हैं चार चार अक्षरन तें अर्थ कह्यो यातें चतुराक्षर चित्र जानिये ॥ ६ ॥

अथ महेलिका अर्थ चित्र लक्षणम्

दोहा ॥ कोऊ बात दुराय के जहाँ बरनिये मित्र। अर्थ चित्र के भेद से जानु पहेली चित्र ॥ ७ दृष्टि कूट शास्त्रोक्त पुनि सहित नाम पुनि जानु । अक्षर में ते कादिये चारि जात उर मानु ॥ ८ ॥

टीका ॥ जहाँ काहू बात को छिपाय के बर्णन कीजिये हे मित्र सो अर्थ चित्र के भेद में महेलिका चित्र जानिये ॥ ७ ॥ पहेली

चित्र के चारि जाति हैं एक दृष्ट कूट। द्वितीय शास्त्रोक्त। तृतीय सनाम। चतुर्थ वर्ण प्रहेलिका। दृष्ट कूट नाम देखी भई पहेली शास्त्रोक्त नाम शास्त्र रीति की पहेली सनाम नाम वाही पहेली में वाको नाम कह देना अक्षर में ते कादिये नाम एक एक वर्ण निकास के नाम निकसै ये चारि जाति उर में आनिये ॥ ८ ॥

अथ दृष्ट कूट प्रहेलिका सोरठा ॥ बिन परसे वह नारि रहत परम आनन्द मय। परसे ह्वै मन मारि नारि नहीं बूझो सु कवि ॥ ९ ॥

टीका ॥ बिना छुए वह नारि उत्कृष्ट आनन्द मय रहत है अरु छुए ते मन कौं मारि लेत है स्त्री नहीं है हे सु कवि बूझौ यह लज्जावंती नड़ी है स्त्री वाचक है ॥ ९ ॥

अथ शास्त्रोक्त पहेलिका दोहा ॥ चरन चारि सत्रह नयन मुख भुज षट परिचानु। काशिराज वर्णन करै रूप सो अद्भुत मानु। ॥ १० ॥

टीका ॥ चारि तो चरन हो बिसु के हो शिव के सत्रह नेत्र हो बिसु के नेत्र पन्द्रह नेत्र।

पंच मुखी महादेव के छः मुख एक तो बिष्णु का पाँच शिव के अरु छः भुजा चारि भुजा बिसु के द्विभुज शिव पहिचानि ये कबि । काशीराज कहै है अद्भुत रूप यह मानिये यह हरि हरात्मक स्वरूप जानिये ॥ १० ॥

अन्यच्च दोहा ॥ एक न्यून मुख बीस हैं पर जानो अड़तीस । भुज बासठ बूझो सु कबि नैन कहे सैंतीस ॥ ११ ॥

टीका ॥ उन्नीस मुख हैं बारह सूर्य के अ- ठ ग्रहों के सात मुख अड़तीस चरण हैं चौ- बीस सूर्य के अष्ट ग्रहों के चतुर्दश बासठि भुजा हैं अड़तालीस सूर्य नारायण के । चतुर्भुजी मूर्ति है आठ ग्रह की चौदह भु- जा बूझो सु कवि है सु कवि बूझो सैंतीस ने- त्र हैं चौबीस सूर्य के अरु एक शुक्र के सात ग्रह के बारह नेत्र यह नव ग्रह पिंड जानिये ॥ ११ ॥

अथ सनाम प्रहेलिका दोहा ॥ कर- ण नहीं गुन करण को पद बिनु चलनोवेस । सुमन सको आहार करि कहि कबि ।

नाम विशेष ॥ १२

टीका ॥ करण नहीं गुन करण को नाम । कौन नहीं है करण का गुन जो सुनमो सो है चक्षु श्रवा बिना चरण भली तरह सौं च- लै है सुमन स को आहार करि नाम देवता को आहार करै है यहाँ बात देवता को आहार करै है ऐसा पवना सन कहि कवि नाम विशेष या प- हेली मैं कवि ने नाम बि नाम विशेष करिकै शेष नाग कह्यो ॥ १२ ॥

अथ वर्ण पहेलिका दोहा ॥ सागर के वह बीच में श्री के ऊपर लेहु । रमा के नीचे बसै श्याम रास सुख देहु ॥ १३ ॥

टीका ॥ सागर नाम समुद्र के बीच का अक्षर कौन मु श्री के ऊपर लेहु श्री ना- म रमा रमा के ऊपर का अक्षर कौन र रा- मा के नीचे बसैं रमा नाम अली ताके नीचे को अक्षर कौन ली श्याम रास सुख देहु । हे श्री कृष्ण तासौं रास में सुख देहु यह मुरली जानिये ॥ १३ ॥

अथ गूढ़ काव्य चित्र लक्षणं

दोहा ॥ सूधी बात जु वरनिये जहाँ फेर सौं मिल । काशिराज वरनन करै गूढ़ काव्य सो चित्र ॥ १५ ॥

टीका ॥ जहाँ सूधी बात कौं फेरसौं वर्णन कीजिये कवि काशीराज कहै है सो गूढ़ काव्य चित्र जानिये ॥ १५ ॥

यथा कवित्त ॥ कपि हित नाममे जो बैंन सुनि होइ सुखी मैन पितु आज मोहि दूती पै पठायो है। कोक अरि अरि सुर वाहन को अरि अरि ताको पति पिता रिपु अधिक सतायो है ॥ मूक क्यौं भई है निशा मुख ते निहारे गृह भूज रव अब वन चाहत सुहायो है। भनि कवि काशी राज आवै की बुलावै वह राजा बैराट की सु कन्या कौं मगायो है ॥ १५ ॥

टीका यहाँ दूती का वचन माननी नायिका सों मान मोचन में कपि नाम बाँदर ताको हित वन ताको नाम कानन तामे वचन सुनिके होइ सुखी अर्थात कर्ण नाम कानों में वचन सुनि सुखी होइ मैन पितु आज मोहि दूती पै पठायो है मैन नाम

प्रद्युम्न तिनके पिता श्रीकृष्ण तिन्होंने मुझे
वृ जो तिय है तापै भेजो है कोक नाम चक्र
वाक ताको अरि चन्द्रमा ताको अरि राहु
तिनके गुरु शुक्राचार्य तिन को वाहन मे-
ढक ताको अरि सर्प ताको अरि मयूर ता-
को पति स्वामि कार्त्तिक तिनके पिता महा-
देव तिनका रिपु कामदेव अधिक सतायो
है नाम या समय कामोद्दीपन है रह्यो है श्री
कृष्ण को मूक क्यौं भई है चुप क्यौं भई है
निशा मुखतें तिहारे यह नाम प्रदोषसमय
से तेरेही घर में हू भूज नाम यलज अर्थात्
त गुलाब ताको रव नाम शब्द बन में सु-
हायो चाहत है नाम गुलाब चटका चाहे
है अर्थात् प्रातः काल हुयो चाहत है कहे है
कवि काशी राज आवै को बुलावै वह यह
श्री कृष्ण पूछ मांगयो है तोसों राजा बैराट
की सुकन्या कों मगायो है नाम बैराट राजा
की सुंदर कन्या उत्तरा अर्थात् उत्तर मगा-
यो है ॥ ॥

अथ सूक्ष्मा लंकार लक्षणम् ॥

दोहा ॥ इंगितते आकार ते जहँ लखिये जिय भाव । सो सूक्ष्मा लंकार है बरनत कवि मे राव ॥ १६ ॥

टीका ॥ इंगितते नाम चेष्टाते अथवा आकार ते जहाँ जिय के भाव नाम आशय को जानि लीजिये ताकौं सूक्ष्मा लंकार कविन में जो राव हैं कहेहैं यह व्यंग प्रधान वहिर्लापिका है यातें अर्थ चित्र में जानिये ॥ ॥ १६ ॥ ॥

यथा दोहा ॥ भानु सासुन्हैं कुमुदिनी लिख भेजी वह नारि । हरि मुसकाय जु भानु पै दियो सविंदु विचारि ॥ १७ ॥

टीका ॥ भानु नाम सूर्य्य तिनके सन्मुख कुमुदिनी नाम कमलिनी लिख भेजी वह नारि नाम भानु और कुमुदिनी वा नायिका ने पति के पास लिख भेजो ताको कारण यह की सूर्य्य समान तुमारो जो विरह है तासे कुमुदिनी सी मूर्छित हौं हरि मुसुकाय जु नाम श्री कृस्न वा कारण को पाय के सुसकाय करि के भानु पै दियो सु विंदु विचारि नाम सूर्य्य

के ऊपर सुंदर एक बिंदु विचारि के दियो या-
को यह कारण कि सूर्य्य पै अंधकार होय गो
अर्थात् रात्रि होयगी तब मिलेगो यह व्यं-
ग करिके जानी गई यातैं व्यंग बहिर्लापिका
जानिये ॥ १७ ॥

**अथ बहिर्लापिकांतर लापिका लक्ष
णं दोहा** ॥ उत्तर बाहर ते जहाँ बहिर्लापि
का जानु । अंतर अंतर लापिका काशी राज
बखानु ॥ १८ ॥

टीका ॥ जहाँ उत्तर बाहर ते आवै पद मेते
न कढ़ै सो बहिर्लापिका चित्र जानिये अरु
जहाँ पद मैंते उत्तर निकसे सो अंतर लापि
का जानिये कवि काशीराज बखानो है १८

अथ बहिर्लापिका यथा दोहा ॥ सब
योनिज मे श्रेष्ठ को बनको राजा कौन । हिर-
ना कुश महलाद हित उदर बिदारो जौन
॥ १९ ॥

टीका ॥ सब योनिज में श्रेष्ठ को सम्पूर्ण जो
चौरासी लक्ष योनि तैं जो उत्पन्न भये हैं ति-
नमें श्रेष्ठ कौन है नर बन को राजा कौन

वन में राजा कौंन है सिंह हिरना कुश यह
लाद हित उदर बिदारी जौंन हिरना कुश दै-
त्य को प्रहलाद के हित के लिये उदर फारो जौं
न पुरुष तैं सो कौन हैं नरसिंह यह उत्तर बा-
हर तें आयो नरसिंह तीनों प्रश्न के उत्तर
याही भैंते कहे यातैं बहिर्लापिका जानि-
ये ॥ १९ ॥

अथ अंतर लापिका दोहा यथा ॥

भानुज ऋषि तैं का चह्यो रन बिचले क्या होइ।
भव भय तारण ग्रंथ को कहि भागवत सु-
जोइ ॥ २० ॥ वर

टीका ॥ भानुज ऋषि तें का चह्यो भानु नाम
सूर्य्य तासों उत्पन्न भयो ताको कहिये भानु-
ज ऐसे जो हैं अश्वनी कुमार सोच्य वन ऋषि
तैं का चह्यो भाग अर्थात् इन्द्र से यज्ञ भाग
हमैं दिलाइ देउ रन बिचले क्या होइ लड़ाई
बिगाड़े पै क्या होइहै भागव अर्थात् भार्गवों
भार्गवों होइहै भव भय तारण ग्रन्थ को सं-
सार के भय दूर करबे कों कौंन ग्रन्थ है क-
हि भागवत सु जोइ कह्यो है सुंदर तरह सैं देखि

के भागवत यह उत्तर भागवत याही मैं तें तीनों ग्रन्थ के उत्तर कहे याही दोहा में उत्तर कह्यो यातें अंतर लापिका जानिये ॥ २० ॥

अथ अंतर लापिका गूढोत्तर लक्षणं ॥

दोहा ॥ उत्तर जाको अति दुरे गूढोत्तर सो जानु । बरनत काशी राज कवि ग्रन्थन को मत मानु ॥ २१ ॥

टीका ॥ उत्तर जाको अति दुरै जहाँ उत्तर अत्यंत छिपाय के दीजिये सो गूढोत्तर अंतर लापिका चित्र जानिये कवि काशीराज बरनन करै है ग्रन्थन को मत मानिकै ॥ २१ ॥

टीकायथा-सवैया ॥ सोभित रूप सुभाव सुहावन जाके भँडार कुबेर नहीं सर । देवर देवस मान लसै सुभ नेह नयो अनकूल नयो वर ॥ सासु भली सुत सोदर भूषन अंबर साज सिंगार भलो घर । रोदन क्यों कहि कामिनि जामिनि मोहन दें बरतु राज सै पर ॥ २२ ॥

टीका ॥ सोभित रूप नाम सोभाय मान तो रूप है जाको सुभाव सुहावन नाम सुभाव जाको भलो है जाके भँडार कुबेर नहीं सर ।

नाम जाकी सम्पति की कुबेर हू बराबरी नहीं
करै है देवर देव समान लसैं नाम जाको देव-
र देवता के समान सोभै है सुभ नेह नयो ना-
म भली भीति नित्य नई है जाके अनुकूल न
यो वर नाम परनारी रत नहीं है पति अरु त-
रुण है पति सासु भली नाम भली है सासु ।
जाकी सुत नाम पुत्र युक्त है सोदर नाम भा-
ई करिके युक्त है भूषन नाम आभूषन करि
के युक्त है अंबर नाम वसन करिके युक्त है सा-
ज सिंगार नाम शृंगार सोरहो की भली है
सज जाके भलो घर नाम भलो है मंदिर जाको
अथवा भलो है कुल जाको मोहन ते रितु रा-
ज लसैं पर नाम मोहन गुण करिके रितु राज ।
नाम वसंत ऋतु ताहूते रम नाम क्रीड़ा में उ-
त्कृष्ट है रोदन क्यों कहि कामिनि जामिनि ना
म ऐसी जो नायिका सो जामिनी नाम रात्रि मे
रोदन क्यों करै है कछु यह प्रश्न तहाँ उत्तर ।
ऋतु राज रमे पर नाम रजो दर्शना नंतर रमण
करै है पति अर्थ राज शब्द का अर्थात स्त्रीन
की राजा पति है ॥ २२ ॥

अथ सास नोत्तर लक्षणम् दोहा ॥
उत्तर मन्त्र अनेक को दीजै एक बनाय । सास
न उत्तर कहत हैं ताहि सु कवि समुदा-
य ॥ २३ ॥
टीका ॥ अनेक प्रश्नन के उत्तर में जहां ए-
क उत्तर दीजिये ताकों कवि समुदाय सास
नोत्तर कहे हैं ॥ २३ ॥
यथा सोरठा ॥ गाउ पीठ पर लेहु अंग रा-
ग अरु हार करु । गृह प्रकाश करि देहु । कौन्ह
कह्यो सारंग नहीं ॥ २४ ॥ टीका ॥ गाउ
नाम गान करो पीठ पर लेहु नाम पीठ ऊपर च-
ढ़ाय लेहु अंग राग नाम उबटनो कर अरु हार
करु नाम माला बनाउ गृह प्रकाश करि देहु नाम
घर में उजालो करि देहु कौन्ह कह्यो सारंग न-
हीं गाँव ने में सारंग नाम वीना नहीं है पी-
ठ पर लेने में सारंग नाम घोड़ा नहीं है अंग
अंग राग में सारंग नाम चंदन यहां नहीं है
हार गनावने में सारंग नाम पुष्प यहां नहीं है
यहां गृह प्रकाश करि देने में सारंग नाम दी-
पक या समै नहीं है बहुत मन्त्र में एक उ-

त्तर दियो यातैं सास नोत्तर जानिये ॥ २५ ॥

अथ प्रश्नोत्तर लक्षणम् दोहा ॥ जोई अ-क्षर प्रश्न के सोई उत्तर होय। प्रश्नोत्तर यह चित्र है वरनत कवि रस जोय ॥ २५ ॥

टीका ॥ जो अक्षर प्रश्न कहैं तेही अक्षरन तें उत्तर कहै सो प्रश्नोत्तर चित्र जानिये वरनत हैं क-वि रस को देखि के ॥ २५ ॥

यथा दोहा ॥ को कहिये जल तें सुखी का-कहिये पर श्याम। का कहिये जे रस बिना को क-हिये सुख वाम ॥ २६ ॥

टीका ॥ को कहिये जल तें सुखी नाम जल ते सुखी कौन है उत्तर कोक नाम चक्र वाक को हृदय जलते सुखी है का कहिये पर श्याम प्रश्न नाम का कहिये उत्कृष्ट श्याम उत्तर काक नाम कौआ ताके हृदय के पर काले हैं का कहिये जे रस बिना प्रश्न नाम र-स ते जो हीन हैं तिन्हें का करै उत्तर काक हिये नाम स्याम हृदय जे रस बिना हैं कोक हिये सुख वाम प्रश्न नायिका को सुख कौहै सो कहो उत्तर कोक शास्त्र जिनके हृदय में

है सो नायक बाम के सुख दाता हैं ॥ २६ ॥

अथ एका नेक उत्तर लक्षणाम् दोहा ॥

एकहि उत्तर मैं जहाँ उत्तर बहुत बखानु । उत्तर ए-
का नेक जो ग्रंथन को मत मानु ॥ २७ ॥

टीका ॥ जहाँ एक उत्तर में अनेक उत्तर कहे
सो उत्तर एका नेक ग्रन्थन के मत तें मानि-
ये ॥ २७ ॥

**अथ एकानेक उत्तर आद्यंत हरण
लक्षणाम् दोहा ॥** उत्तर व्यस्त अनेक हैं एक
समस्त हि मानु । आदि अंत ते हरण करि उ-
त्तर कहै सुजानु ॥ २८ ॥

टीका ॥ व्यस्त नाम टूक टूक करिके अनेक
उत्तर कहै अरु समस्त तें एक उत्तर कहै आ-
दि अंत तें हरण करि उत्तर कहै सुजानु । सु-
जान आदि के अक्षरन कौं क्रम सौं अंत के अ-
क्षर तें मिलाइये दोदो अक्षर का उत्तर कहै है
सो जानिये ॥ २८ ॥

यथा दोहा ॥ तार तहर कहि अधर जसन-
रहित हिरण रंग । नितत सरस कहनक
हं हरित लहन जस अंग ॥ २९ ॥

कवि हि करत किहँ तजि सजन गनि दिन दिन जिय दीन । लसत रिसहिं गुण छीज कहि जग धरता रिस छीन ॥ ३० ॥

टीका ॥ षष्ठ प्रकाश में चरण गुप्त बंध चित्र में प्रथम अर्थ कहि आए हैं सो जानिये ॥ ॥ ३० ॥

अथ एकानेक साँकरीगति व्यस्त समस्त उत्तर लक्षणम् दोहा ॥ जुगा जुग अक्षर जोड़िये साँकर की अनुसार । एक तजि व्यस्त समस्त सौं उत्तर कहै विचारि ॥ ३१ ॥

टीका ॥ दोहो अक्षर जोड़िये जंजीर की रीति सें एक एक अक्षर छोड़ि तहाँ व्यस्त उत्तर कहै है बहुत अरु समस्त से एक उत्तर कहै है विचार जानिये ॥ ३१ ॥

यथा रूपैये ॥ कहाँ बसति है नारि कहा योगी कौं कीजै । कहा विश्व को बन्ध कहा दुर्जन कौं दीजै ॥ पत्रन मैं कहु कहा होत सो सुकवि विचारो । कहाँ लसत हैं कंज कहाँ सुख सूर निहारो ॥ कहु इंद्र त्रास ते वज बधू काको धायगयो चरण । कवि काशि राज उत्तर दियो

जग मैं मन मोहन श्रवण ॥ ५२ ॥

टीका ॥ मन मोहन श्रवण इन अक्षरन तैं । व्यस्त समस्त सौंकरि की गति करिकै उत्तर कहै है कहां वसति हैं नारि नाम स्त्री का वसने का स्थान कौंन है यह प्रश्न उत्तर मन नाम मन में वसे हैं कहा योगी कौं कीजै नाम जोगी को कहा करै है यह प्रश्न उत्तर नमो नाम नमस्कार करै हैं कहा विश्व को बन्ध नाम संसार को बंध कहा है यह प्रश्न उत्तर मोह नाम मोहादिक कहा दुर्जन कौं दीजै नाम दुष्ट जन को कहा दीजिये यह प्रश्न उत्तर हन नाम मारि दीजिये पत्रन मैं कहु कहा होत सो कवि विचारे नाम पत्तो आन मैं कहा होत है हे सुकवि सो विचारो यह प्रश्न उत्तर नस नाम पत्ते मैं नस होहि हैं कहां लसत हैं कंज नाम कमलक हों सोभित हैं यह प्रश्न उत्तर सर नाम सरोवर मैं कहां सुख सूर निहारे नाम सूर पुरुष को सुख कहां देखिये यह प्रश्न उत्तर रण नाम संग्राम मैं कहु इन्द्र त्रासते वज वधू काकोधाय गहो य चरण नाम इन्द्र के भय करिके वज

वधू जो गोपिका हैं तिन्हों ने काको नाम कौन पुरुष को पद गह्यो यह प्रश्न उत्तर कवि का श्रीराज ने यह दियो जग में नाम संसार में मन मोहन शरण नाम मन मोहन जो श्री कृ ष्ण तिनके शरण भई यह उत्तर समस्त ते भयो और सब उत्तर व्यस्त से भये सो जानिये ॥ ३१ ॥

अथ एकानेक साँकरि गति व्यस्त समस्त गतागत लक्षण दोहा ॥ साँकरि गति उत्तर कहै व्यस्त समस्तनि बीच। दोऊ गता गत जानिये कहत सुकबि रस सींच ॥ ३२ ॥

टीका ॥ जंजीर की रीति करिके दो दो अक्षरन ते व्यस्त उत्तर गता गत कहै है अरु समस्त गता गत उत्तर जानिये जे रस के बूड़े हुये जो कवि हैं ते कहै हैं ॥ ३३ ॥

यथा छप्पै ॥ गोपिन में को अधिक पत्र दे कहियत कापुन। शंभु दक्ष है कौन कहा पिक को कहियत गुन ॥ केशी को हरि कियो कहा सो सुमति बताओ। नदी बेग को कहा कहत ग्रंथ न मत पाओ ॥ कहा रस में वहत है रज पति

पदवी को लह्यो कवि कारिगरज बहुप्रश्न मेरा
धा वर उत्तर कह्यो ।। २५ ।।

टीका ।। राधा वर इन अक्षरन ते उत्तर कह्यो है
गोपिनि में को अधिक नाम गोपिनि में कौन
सी श्रेष्ठ है यह प्रश्न उत्तर राधा नाम राधिका
पचदे कहियत का पुन नाम चिट्ठी दे के हर-
कारे से कहा कहैं हैं यह प्रश्न उत्तर धाव ए
नाम जाउ शंभु रुद्र है कौन नाम शिव का
रुद्र कौन है यह प्रश्न उत्तर वर नाम वट वृक्ष
कहा पिक को कहियत गुन नाम कोकिला
को गुण कहा है यह प्रश्न उत्तर रव -
नाम शब्द केशी को हरि कियो कहा सो सुम
तिबतान्यो नाम केशी दैत्य कौं श्री कृसने कहा
कियो है सुमति सो बतान्यो यह प्रश्न उत्तर
वधा नाम मारयो नदी वेग कौं कहा कहत
ग्रन्थन मत पान्यो नाम नदी के प्रवाह को क-
हा कहै हैं सो ग्रन्थों के मत पाय के कहो यह
प्रश्न उत्तर धारा नाम नदी का प्रवाह कहा
एस में वहत है नाम जा समय श्री कृस ने
एस कियो ता समय में कहा प्रवाह वह्यो यह

प्रश्न यह समस्त उत्तर रव धारा नाम सुरा
वर्त्त की धारा वही ब्रज पद पद वी को लहो
नाम ब्रज पति की पदवी किन्हें पाई यह प्रश्न
कवि काशी राज नें बहुत प्रश्न में यह उत्तर
दियो राधा वर नाम राधा के पति जो श्री
कृस्न हैं सो ब्रज के स्वामी हैं यह उत्तर सम
स्त रव धारा राधा वर यह उत्तर गतागत सम
स्त जानिये और उत्तर गता गत साँकरि ग
ति व्यस्त जानिये ॥ ३४ ॥

अथ अपन्हुति लक्षणम् ॥ दोहा ॥

चित्त की बात दुराय के और कै है मित्र।र
सिकन कों अति सुखद यह जानु अपन्हुति
चित्र ॥ ३५ ॥

टीका ॥ जहाँ मन की बात छिपाय के फेर से
दूसरी बात का आरोपण कर दीजिये हे मित्र
रसिकन कों परम सुख दाता यह अपन्हुति चित्र
जानिये याही कों मुकरी कहै हैं ॥ ३५ ॥

यथा कवित्त ॥ मूरी में समात मध्य उर
की नरम अति परम सुखद सो है सगुन प्र
साण की गोसे गोसे ते जो रुकि रुपटि मिल

न जब रविलेत प्रान पन बरनी जहाँन की-
सर मैं सुभाल बर परसे आनन्द होत देखै
बैन काशीराज रंग रुचि खाँन की। काहू गो
प बधू संग रमै कहौ नंद लाल नाहीं तिय रवैं
ची ही कमान सुलतान की ॥ १६ ॥

टीका ॥ मूठी मैं समात मध्य नायिका कैसी है
जाकी कमर मूठी में समात है कमान कैसी है जाकी
मध्य जो है मूठी सो मूठी में समाय है उर की नरम
अति नायिका कैसी है हृदय की कोमल है कमाँन
कैसी है पेट की नरम है परम सुखद सो है नायिका
कैसी है परम सुख की देन वारी सोई है है कमाँन
कैसी है बाँधने वारीं को परम सुख की दाता है
सगुन प्रमान की नायिका कैसी है गुणान क-
रिके युक्त है अरु प्रमान की नाम अप्रमाणा न-
हीं है कमाँन कैसी है गुणा जो चिल्ला ता क-
रिके सहित सोई है है अरु प्रमान की है अर्थात
तोल की है नाम टांक करिके तुली है गोसे गो-
से तेजो रुकि रुपटि मिलत जब रविलेत प्रा-
न पन बरनी जहाँन की नायिका कैसी है गो-
से गोसे तें नाम एकांत स्थल में रुकि करिके रु

परि करिके जबमिलै है तब नायक के प्रान
को रखि लेति है अरु अपनी प्रतिज्ञा को रखि
लेति है ऐसी जहाँन में बर्नानी है कमाँन कैसी है
कमाँन का गोसा गोसा जब झुकि करि कै रुपटि
करिके मिलै है तब धारण करन हारे पुरुष को
प्राण अरु प्रतिज्ञा को रखि लेतहै ऐसी जगत
में प्रसिद्ध है सरमें सुभाल बर परसे अनंद हो
त नायिका कैसी है सर नाम सरोवर में सुभाल
वर नाम सुंदर है माथो जाको ता नायिका के प
रसे ते आनन्द होतहै कमाँन कैसी है सर नाम
तीर तामें सुंदर लगि रही है भाल नाम अनी अ-
रुपर नाम पंख दुस करिके आनन्द होहि है दे-
खे वनै काशी राजरंग रुचि खाँन की नायिका कै-
सी है देखे ईसे वनै है कवि काशी राज कहै है रं-
ग की जो रुचि कहे सोभा ताको खानि है कमा-
न कैसी है देख नेही से वनै है जाके रंग की सो
भा अरु खाँन की नाम ठिकाने की है काहू ।
गोप बधू संग रमे कहो नन्द लाल यह अ ।
नायिका का श्री कृस्न से है श्री कृस्न काहू गो-
पकी बधू के संग में विहार कियो तुम ने ।

नाहीं तिय खैंची ही कमान सुलतान की यह उत्तर श्रीकृस्न को नायिका सौं है तिय काहू गोप की स्त्री के संग नाहीं हम सै हैं ऐसी सुलतान की कमान खैंची ही हम ने नायिका का वर्णन करिके सुकरके श्रीकृस्न ने कमान मे सम्पूर्ण अर्थ आरोपण कियो यातैं मुकरी जानिये ॥ ४६ ॥

अथ श्लेषसभंगा अभंगा लक्षणम् दोहा

पद प्रति एथक श्लेष जहाँ सोसभंगा पहि चीनु ।
आदि अंत अश्लेषइक ताहि अभंगा बरवानु ॥
॥ ॥ ४७ ॥ ॥

टीका ॥ अश्लेष दोभाँति के जानिये एक सभंग अरु एक अभंग जहाँ पद प्रति में नाम चरण चरण में अथवा अर्द्ध अथवा चतुर्थ चरण मेंभिन्न भिन्न श्लेष कीजै तहाँ सभंगा श्लेष जानिये जहाँ आदि से अंत तांई एकही श्लेष होय तहाँ अभंगा श्लेष बखानिये ॥ ४७ ॥

अथ सभंगा श्लेष यथा ह्यर्थकवित्त ॥

सारस बलित माल कमला कर सों छवि रस कल मीन नैन चंचल एस रहै । वासु किलसत जहाँ हरित वसन धारै प्रिय दृष परभृत ध्वनि सुख हर ।

है भूषन अमृत कर कोक नद गति मृग काशी राज द्विज राज राजै तारा वर है । मोहन को अंगय ह सुद्ध सुर ताल सुहै भले वंश की है किधौं बिंब ओषधर है ॥ ॥ २८ ॥ ॥

टीका सरवरपक्ष अर्थ ॥ सारस बलित माल नाम सारस पक्षी की माल नाम अवली वेष्टित है जहाँ कमला करसों छवि नाम कमल की आकर कहौ खानि तासों छबि है जाकी रस क ल नाम जल है गंभीर जामें मीन नैन चञ्चल नाम नैन जाति के मीन चंचल हैं जामे एसर है नाम ऐसा सरोवर है ॥ १ ॥

महादेवपक्ष अर्थ ॥ वासुकि ल सतु जहाँ नाम वासुकि शेष लसै नाम सोभै है जहाँ हरि त बसन धारै हरित नाम दिशा दिशा रूपी वसन धारन किये हैं अर्थात दिगम्बर हैं प्रिय वृष नाम प्रिय है नन्दीश्वर जिनके परिभूत ध्वनि सुख परिभूत नाम स्वामि कार्तिकेय तिन का शब्द सुख है जिन को हर है नाम ऐसे हैं महादेव ॥ २ ॥ ॥ ॥

चन्द्रमा पक्ष अर्थ ॥ भूषण अमृत कर नाम

आभूषण जाको अस्त अरु किरण है कोक न-
र नाम रक्तोत्पल गति नाम क्रिया मृग नाम
सिकार अर्थात् कमल के गति की सिकार करै
है काशी राज कवि नाम द्विजराज नाम ब्राह्म-
णन का राजा है राजै तारावर है ऐसा तारा गण का प
ति सोहै है चन्द्रमा ॥ ३ ॥

वँसुरी पक्ष अर्थ ॥ मोहन कों अंग यह नाम
श्रीकृस्न का अंग है मुरली सुद्ध सुरताल सुद्ध ना
म सुद्ध रागिनी के सुरावर्त अथवा पवित्र सुर है
अरु ताल सुंदर है जामें भले बंश की है नाम भ-
ले वांस की है किधौं बिंब ओष्ठधर है किधौं यह
बिंब कह्यो कुंदरुत दंत है ओष्ठ तापर धरी है ऐसी
है मुरली ॥ ४ ॥

नायिका पक्ष अर्थ ॥ सरस वलित माल स
रस कहे कमल ताकी बेष्टित है माला नाम हार
जाके कमला कर सों कमला कहे लक्ष्मी आकार
सों खँनि सों अर्थात् लक्ष्मी की खँनि सी है अ-
र सबेंही दीर्घ स्वर करिके आकार शब्द निकसै है
कबि रस कल शृंगार रस को मल की कबि है जा
में मीन नैन चंचल एसर हैं सर नाम बराबर

हैं मीन के चंचल नैन जाके वासु किंनसत जहाँ ना
मनाग हार सोहै है जहाँ अथवा सुगंध की सोहै है ज
हाँ अर्थात पद्मिनी हरित बसन धारै हरित नाम हरे
अथवा दुहदुहे वस्त्र धारण किये हैं प्रिय दृष ना
म प्रिय है धर्म जामें अर्थात अप्रिय धर्म नहीं है
जामैं पर भृत ध्वनि सुख हर है परि भृत नाम
कोइल ताके शब्द के सुख कौं हरन वारी है अ
र्थात मधुर स्वर है भूषण अमृत कर नाम
भूषण है अमृत नाम सुंदर हाथ में जाके
को क नद गति नाम कोक शास्त्र का जो नद है
तासे है गति जाकी अर्थात कोक शास्त्र पढ़ी है
देहरी दीपक न्या येन गति मृग मृग कहे हा
थी तांकी है चाल जामे काशीराज कवि नाम
द्विज राजे राजै द्विज नाम रंत ताकी राज नाम
पंक्ति सोहै हैं जाके तारावर है नाम बाल की
जो स्त्री है तास ताहूते श्रेष्ट है मोहन को अंग य
ह नायका मोहन मंत्र के षंडंगा मे एक
अंग है अर्थात मोहने वारी है शुद्ध सुर नाम
पवित्र देवता अर्थात ऐसे श्री कृष्ण ता नाम
तासों लसु है नाम लस रही है भले वंश की है

नाम श्रेष्ठ कुल की है किधौं विंब ओष्ठ धर है एसी विंब समान ओष्ठ धारण किये है ऐसी है नायिका ॥ २८ ॥

अथ अभंग श्लेष यथा सवैया ॥ केसर रंग तिहारे भद्दू लखि लालची नाह अबीर लिये पर । कोस गुलाल लसै यहि औसर छाई सुवास गुलावन के फर ॥ हाथ गहे पिचिका चलि सोहि सो काली के एज गहो तुम हूँ वर गावत ताल सुराग सखी सब तीन तरंगन सौं रस को भर ॥ २९ ॥

टीका होली पक्ष अर्थ ॥ यहाँ नायिका सौं सखी की शिक्षा फागु खेलने में केसर के रंग तिहारे भद्दू है भद्दू तिहारे यहाँ केसर के रंग बन रहे हैं लखि लालची नाह अबीर लिये पर देखु लालची जो नायक पर अबीर लिये है कोस गुलाल लसै यहि औसर या समय मे कोस नाम भंडार गुलाल के भरे सोहैं है अथवा कोस पर्य्यन्त या समय में गुलाल सोभित हो रही है छाई सुवास गुलावन के फर सुगंधि छाय रही है गुलावन की दृष्टि करके हाथ गहे पिचकाच

चकीलेहि हाथ मे लिये हुए पिच का नाम पिच कारी चकि नाम देखे हैं तोको सो काणी के राज गहो तुमहूं वर कारी राज कबि नाम सो तुम हूं श्रेष्ठ ग्रहण करो अर्थात पिचकारी तुम हूं गहो गावन लाल सुराग सखी सब तान तरंग न सो रस को भर गावत हैं सुंदर लाल अरु राग सम्पूर्ण सखी तान की जो है तरंग नाम सुंदरता करिके रस अतिशय हो रह्यो है ऐसी होली मच रही है सो जानिये ॥ १ ॥

अथ मानिनी नायिका पक्ष अर्थ॥

यहाँ मानिनी नायिका के मान मोचन करावने में उत्तम दूती का वचन केसर रंग तिहारो भट्ट नाम है भट्ट केसर रंग नाम कौन है तुमारे संग की बराबरी को लायक लालची नाह अबीर लिये पर नाम लालची जो नाह है सो देखु अबीर नाम नबीर अबीर कालियेहु ए हैं अर्थात अधीरता उच्छृंखलता धारण किये हैं अशक्तता अंग भट्ट कोस गुलाल लसै यह औसर नाम को या समय में लाल के संग में सोहै है यह काकु अर्थात तूही सोहै है और गोपी नहीं

ऊई सुवास गुलाबन के रु काहे ते कि तेरी सु-
वास गुलाब रूपी रु छाइ रही है या पद ते पद्मि-
नी व्यंग भई हाथ गहे पिचका चकितोहि नाम ह्वा-
य गहे हुए है पी नाम पीतम चका चकितो नाम
चकृत होय के तेरे सो काशी के राज गहो तुम्हें व-
र काशी राज कवि नाम सो तुमहूँ ग्रहण करो वर
नामपति कौं अर्थात् अंगीकार करो गावत नास क-
हत हूँ लाल सु नाम ता नायक सौं सोभित होइ ।
राग नाम अनुराग करिके सखी नाम हे सखी
सब तान तरंगन सौं नाम सब तरै सै लानते हुये
रंगन सो अर्थात् अपने तई खैंचते हुए नाम मान
पूर्वक मिलके रस को भर नाम रस की अतिश
यताकर ॥ ३४ ॥

अन्यच्चदूत्यं कवित्त ॥ सीकर ललित
सोहै सुमन समाल पर राजै दिज राज दुति हंस
कलरत जात । कवि काशी राज भनि मृदु सुख दा
नि बानी मैंन सैंन रसन रसाल हि भरत जात ॥
सोभै उर बसी रति सुंदर सुकेशी वेस रसन बल-
य मंजु घीष उचरत जात । रति विपरीति कियौं
जय करि दद्र आज वारन ते मुक्ता हजारन कर

टीका इन्द्र का युद्ध जय पक्ष अर्थ ॥

सीकर लसित सौंहे सुमन समाल पर सी करना-
म अंबु कण सुंदर सोभाय मान हो रह्यो है नाम
प्रसेद बिंदु सुमन सनाम देवतान के नाल नाम
कवली पर जहाँ एजै द्विज राज पद नाम सोभै
है द्विज राज नाम चन्द्रमा को पद जहाँ नाम प्र
सिद्ध जहाँ हंस कल रत जात हंस नाम सूर्य
कल नाम उच्च रत नाम प्रीति करिके सुक-
जात है जहाँ काव्यी राज कवि भनि नाम कहै है
मंजु सुख दान बानी कोमल सुख दाता बानी ज-
हाँ है मैन नाम कामदेव सेन नाम सैन्या काम दे-
व की जो सेना है वसंत ऋतु सो रस करिके
रसाल जो आम्र ताको तरु करत जात है जहाँ
सोभै उर वसी सोभाय मान है उर वसी अप्सरा
जहाँ रति सुंदर नाम सुंदर काम पत्नी जहाँ सु-
केसी वेस नाम भली सुकेसी अप्सरा जहाँ रस
नवलय मंजु घोष उचरत जात रस नव नाम
नौरस की लय नाम सामता करिके मंजु-
घोष नाम मधुर शब्द करिके उच्चार करत जात

हैं जहाँ वारन ते मुक्ता हजारन करत जात वारन नाम हाथी तापर ते मोती हजारन वृष्टि करत जात है अर्थात दान करत जात है जय करि इन्द्र आज आज नाम संग्राम ताको जीति के इन्द्र या रीति करिके सोभाय मान है सो जानिये ॥ १॥

अथ नायिकाविपरीतरति पक्ष अर्थ

सी कर ललित सोहै सी नाम सीत कार करिके ललित सोहि रही है सुमन समान पर नाम सुमन सनाम पुष्प ता की है उत्कृष्ट माला जहाँ राजै द्विज राजदुति द्विज नाम दंत राज नाम पंक्ति ताकी दुति सोभाय मान है जहाँ हंस कलरत जात हंसक नाम पाजेब लरत जात नाम लड़ त जाय है जहाँ अर्थात शब्द करै है काशीराजक वि नाम भनि मद सुख दानि बानी ता समय मैं कोमल सुख दाता जो ऐसी बानी है ताको कहि रही है मैंन सैंन रस नर सालहि भरत जात नाम काम रूपी जो सैंन है कटाछता रस सोंरसालजो नायक ताको दृस करत जाय है सोभै उर बसी उर नाम वक्षस्थल तापर बसी हुई सोहै है नाम बैठी हुई सोहै है रति सुंदर नाम सुंदर

रति समय में सुकेशी वेश नाम सुन्दर हैं केश अरु अवस्था जाकी रसनवलय मंजु घोष उ चरत जात रसन नाम कटि किंकिणी वलय नाम चूड़ी तासमय में कोमल शब्द करत जा त हैं आज वारन ते मुक्ता हजारन करत जात आज नाम आज के दिन वारन ते नाम केश न ते मोती हजारन करत जात हैं यहाँ यह व्य ग सूचित भई कि मण्डन किये जो केश हैं ताको जो ग्रंथ विपरीति समय में छुटि पड़ी है तामें तें मोती करत हैं रति विपरीति किधौं किधौं ऐसी रति विपरीति है ॥ ५० ॥

अथ अभंग श्लेषव्यर्थकवित्त ॥ सुवर ण गरभ हैं गुण गण नरम हैं हंस कल सुपद हैं धुनि सु वसत है । उक्ति मध्य दिजराज राजै वर रीति सज उत्तम सुवोनी करु भूषण लसतु है ॥ धुनि शिव युक्त छाजै पर अर्थी धाम छवि लोक में विदित यह रस को रसतु है । ऐसे लोक नाथ किधौं स्वीया तिय जानु किधौं भनि काशी राज कवि काव्य दरसतु है ॥ ५१ ॥

टीका ब्रह्म पक्ष अर्थ ॥ सुवरण गर्भ हैं

च्यम हिरण्य गर्भ हैं गुण रजो गुण गणन ना
म पार्षदन करिके रम हैं नाम गुण पार्षद
न करिके रमि रहे हैं हंस कलसु पद हैं नाम
हंस एज नाको चरण है अर्थात वाहनु है वृ
त्ति सुवसनु है नाम भली जो ब्रह्म वृत्ति सो जि
न में वसति है उक्ति मध्य नाम लोकोक्ति मे
द्विज एज नाम ब्राह्मणन के राजा हैं एजे वर
रीति नाम श्रेष्ठ रीति रचना की एजे है जिनमें
सज उत्तम सुवानी नाम पवित्र अरु सुन्दर ऐ
सी जो हैं शारदा तिन करिके सजि रहेहैं करु
भूषण नाम जिनके कर में कांक्षान लसतु है
नाम निरपेक्ष हैं धुनि शिव युक्त छाजै शिव
कहिये वेद नाको जो धुनि ताकरिके सोभित
हैं पर अर्थ धाम छवि नाम पराया अर्थ अ
रु तेज ता करिके सोभित हैं लोक में विदितहैं
यह रस कौं रसतुहैं नाम ब्रह्म रस कौं वरसत
हैं ऐसे लोकनाथ नाम ऐसे हैं ब्रह्मा ॥ १ ॥

सीता पक्ष अर्थ ॥ सुवरण गरभ है नाम
सुंदर रंग का गर्भ है गुण गण नरम है नाम
कीड़ा रूपी गुणन को समुदाय है हंसक

नाम पाजेब लसतु पर है चरण में लसि रह्यो है
रति सुवसतु है भली चलन जामै वसतु है
उक्ति मध्य द्विज राज राजै नाम जाके वचनक
हने में द्विज जो हैं दाँत तिनकी राज जो है पंक्ति
सो सोभित है वर रीति सज नाम पति रीति की
है सज जामें अर्थात पति व्रता उत्तम सुवाँनि
क नाम श्रेष्ठ है सुन्दर बनाव जाको रु नाम अ
रु भूषण लसतु हैं गहना सोभित है धुनि मिव
युक्त राजै नाम सुख युक्त शब्द करिके सोहै है
अर्थात मधुर स्वर है पर अर्थ धाम छवि नाम
उत्कृष्ट द्रव्य अरु उत्कृष्ट घर इन करिके सोभि.
त है लोक में यह बात बिदित है रस को रस तु
है शृंगार रस कौं बरसतु है किधौं स्वीया तिय
जानि ऐसी सीता तिय है ॥ २ ॥

अथक वि काव्य पक्ष अर्थ ॥ सुवरण
गरभ हैं नाम सुंदर अक्षर जाके मध्य में हैं
रुण नाम प्रसार ओज माधुर्य्यादि गुण कौं
के युक्त है नरम हैं नाम कोमल है हंस ना.
म सूर्य्य है अर्थात प्रकाशित है कल ना.
म गंभीर है सुपद हैं भले हैं चरण नामें

रति सुबसतु हैं नाम कौमि की आरभटीसा
दि लेके सुन्दर रति जामे वसतु हैं उक्ति म-
ध्य हिन राज एजै नाम काव्योक्ति के विषैं चन्द्र
मासों स्वच्छ सोहै है वा रीति सज नाम वैद
भी पांचाली इत्यादि क श्रेष्ठ रीति से सजि रही
हैं उत्तम नाम उत्तम काव्य है सुवोंनी करु
नाम सुन्दर बानी की करन वाली है भूषणा ल-
सतु है नाम अलंकार जामैं सोभित हैं धुनि शि-
व युक्त छाजै नाम देव रति धुनि शृंगार रति
भाव ध्वनि इत्यादिक धुनि शिव नाम कल्या-
ण युक्त सोहैहै पर अर्थ धाम नाम उत्कृष्ट
अर्थ की गेह है छवि लोक में विदित यह ना-
म या काव्य की सोभा जगत में विदित है र-
स कौं रसतु है नाम शृंगारादिक न बरस को
देत है कवि काशी राज कहै है किधौं ऐसी क-
वि की काव्य दृष्टि में आवत है ॥ ३ ॥ ४१ ॥

अर्थ अभंगा श्लेष चतुर्थ कवित्त

इडा की सोभ मान वर पद भूषण है मधु-
में रुचिर रुचि उर अबेरविये । लसत विमल
भाव दायक परम तंत्र भनि काशी राज जामे

पक्ष छवि पेखिये ॥ राजत है मृग गति छाजत है रूप गिरवा पालि मरजादा जहाँ वसत है लेखिये। ऐसे राम चन्द्र किधौं ऋषि राज चन्द्र किधौं किधौं चारु चन्द्र किधौं चन्द्र मुखी देखिये ॥ ४२ ॥

टीका रामचन्द्र पक्ष अर्थ ॥ दंड कर सोभ मान नाम एथ्वी करिके सोभाय मान है वर पद भूषण है नाम श्रेष्ठ प्रतिष्ठा है जिनकी अरु श्रेष्ट ही है आभूषण है मधु में रुचिर रुचि नाम अशोक वृक्ष में है रुचिर रुचि जाकी उर अचरेखिये नाम उर में यह बात विचारिये लसत बिमलभाव नाम सोभित है सत्ता भाव जिनमें दायक परम तंत्र नाम दाता उत्कृष्ट पराक्रम के कवि कालगी राज कहे हैं जामें पक्ष छवि पेखिये नाम जामें सहाय रूपी छवि देखिये राजत है मृग गति नाम सोभित है सिकार की क्रिया जिनमें छाजत है रूप गिरवा नाम राजत है रूप श्रेष्ठ जिनको पालि मरज्यादा जहाँ वसत है लेखिये पालि नाम पुल सेतु बाँधने की मरज्यादा जिन में वसत है यह लेख है ऐसे रामचन्द्र किधौं ऐसे हैं रामचन्द्र ॥ १ ॥

ऋषि पक्ष अर्थ ॥ इडा करि सोभमान नाम कामधेनु करिकै सोभित हैं वर पद भूषण है वर नाम वरदान पद नाम वाक्य सोइहै आभूषण जिन के मधु में रुचिर रुचि नाम दुध में अधिक है रुचि जिनकी यह वात उर में अब राखिये लसंत विमल भाव नाम सोभित है निरमल पूजा में प्रीति जिन की दायक परम तंत्र नाम दाता उत्कृष्ट शास्त्र के कवि काश्मीरा ज कहे हैं जामें पक्ष छवि पेखिये नाम जिनमें गुरू की छवि देखिये अर्थात गुरू हैं राजत है मृग गति मृग नाम भिक्षा वृत्ति राजत है जिन में छाजत है रूप शिखा नाम सोभित है रूप अ रु शिखा जिन के पालि मरज्यादा जहाँ वसत है पालि नाम चेलन को दियो है विद्या दान जहाँ यह वसत है अर्थात विद्या रूपी प्रसाद दियो है यह लेख है ऋषि राज चन्द्र किधौं ऐसे ऋषिन के राजा चन्द्रमा नाम ऋषि हैं ॥ २ ॥

चन्द्रमा पक्ष अर्थ ॥ इडा करि सोभमा न नाम आकाश करिके सोभाय मान हैं वर पद भू षण है नाम श्रेष्ठ रात्रि है आभूषण जिन को

मधु मैं रुचिर रुचि नाम अमृत मय है रोचक
सोभा जाकी उर अव रेखिये नाम उर मैं लि-
खिये लसत विमल भाव नाम सोभित है
निर्मल पदार्थ अर्थात निर्मल पदार्थ है चं-
इमा दायक परम तंत्र नाम दाता उत्कृष्ट तंत्र
नाम कुलके अर्थात उत्तम चन्द्र बंश उत्पन्न
किया है जिनने कवि काशी राज कहे है जामैं
पख छवि पेखिये नाम जिसमैं शुक्ल पक्षकी
छवि देखिये राजत है मृग गति नाम राजत है
हरिण गति करिके अर्थात हरिण है वाहन
जाके छाजत है रूप शिखा नाम सोभित है
रूप अरु शिखा नाम किरण जाके पालि मर-
यादा जहाँ बसत है नाम लाछन की मरजा
दा जहाँ रहत है लेखिये नाम लिखी है किधौं
चारु चन्द्र ऐसे है सुंदर चन्द्रमा ॥ २ ॥

नायका पक्ष अर्थ ॥ इडा करि सोभ मा-
न नाम बचन करिके सोभायमान है वर पद
भूषण हैं नाम श्रेष्ठ चरण मैं आभूषण है
मधु मैं रुचिर रुचि मधु नाम वसंत ऋतु मा-
मैं रुचिर है रुचि उर अव रेखिये उर मैं लिखि

रह्यो है जाके लसत विमल भाव नाम निर्मल भाव विभाव इत्यादिक सोभि रह्यो है जामें दायक परम तंत्र नाम दाता उत्कृष्ट सुख की कवि काशीराज कहै है जामैं पक्ष छवि पेखिये नाम या नायका के केश समूह में छवि देखिये राजत है मृग गति नाम सोभित है राज कीसी गति जामें छाजत है रूप शिखा नाम सोभित है रूप की शिखा नाम अग्र भाग अर्थात् कांति में मुख्य है पालि मर्यादा जहां बसत है नाम स्तुति कीसी माया में बसत है अर्थात् स्तुति के जोग्य है ऐसी दूसरी नहीं जोखिये नाम यह लेख है किधौं चन्द्र मुखी देखिये ऐसी चंद्र मुखी नायका देखिये ॥ ४ ॥ ४२ ॥

अथ अभंग श्लेष पंचार्थ कवित्त ॥

कालिका लसत जहां मालती प्रसन्न करै हितरुचि रचै लोक में बखानी है दायक अमृत वर कारण करण लसु सारँग किया प्रवीन सब जग जानी है ॥ आत्मा छवि छाजत है। राज द्युति राजत है योग योग्य काशी राज ध्यानि सुख दानी है। ऐसे किधौं विस्नु किधौं कालिका की बरषा है धन्वंत

बैद्य किधौं गोपिका सुहानी है ॥ ४२ ॥

टीका विष्णु पक्ष अर्थ ॥ कालिका लसत जहाँ नाम सम्पूर्ण ता सोभित है जहाँ मालती प्रसन्न कर नाम चमेली प्रसन्न करन वाली है जाकी रोहित रुचिर रंचै नाम धीर पुरुषता सुन्दर सो है है लोक में कही है दायक अमल वर नाम दाता मोक्ष वर दान के कारण करण लसु कारण नाम उत्पादक करण नाम कर्म हेतु के लसैं हैं सारंग क्रिया प्रवीन नाम धनुष क्रिया में चतुर हैं सब जग जाने हैं आत्मा छवि छाजत हैं परमात्मा की छवि जिनमें सोहै है राधा दुति राजत है सिद्धि दुति सोहै है योग योग्य ध्यान योग्य हैं काश्मीरज कवि नाम धुनि सुख दानी है जिन काश्मद सुख दाता है ऐसे किधौं विष्णु ऐसे हैं विष्णु ॥ १ ॥

कालिका पक्ष अर्थ ॥ कालिका लसत जहाँ मदिरा सोहै है जहाँ मालती प्रसन्न कर कांची मणि पात्र में प्रसन्न करन वाले है अर्थात् पात्र में मदिरा प्रसन्न करन वाले सोहैं है रोहि रुचि रंचै कुंकुम रुचिर सोहै है लोक में कही है

दायक अमृत वर दाता सुवर्ण की उत्कृष्ट है
कारण करण लसु नाम नृत्य की आदि कारण
सोहै है सारँग क्रिया प्रवीनखड्ग क्रिया में प्रवी-
न है सम्पूर्ण जन जाँनै है आत्मा छवि छाजत
है नर पिंजर की छवि सोहै है जहाँ रथ द्युति रा-
जत है छेदन विशेष द्युति सोहै है अर्थात दैत्य
मर्दन छवि सोहै है जहाँ योग योग्य तेज यो-
ग्य है जहाँ काली रज कवि नाम ध्वनि सुख
दानी है जाको शब्द सुख दाता है किधौं कालि
का नाम ऐसी है कालिका ॥ २ ॥

वर्षा पक्ष अर्थ ॥ कालिका लसत जहाँ-
नाम मेघ घटा सोहै है जहाँ मालती प्रसन्न कर
नदी को प्रसन्न करन वाली है अर्थात परि-
पूर्ण करन वारी है रोहित रुचिर रंचे इन्द्र धनु-
ष सुंदर सोहै है श्लोक में कही है दायक अमृत
वर दाता जल की श्रेष्ठ कारण करण लसु आ-
दि कारण खेत की सोहै है सारँग क्रिया प्रवीन-
के की अथवा पपीहा की क्रिया में प्रवीन है
सब जनन ने जानी है आत्मा छवि छाजत है
नाम पवन की छवि सोहै है रथ द्युति राजत

है बिजुरी की दुति सोहै योग योग्य नाम उ-
पमा के योग्य है काशीराज कवि नाम ध्वनि
सुखदानी है नाम गर्जन ध्वनि जाकी सुखदा
ता है कि वर्षा है ऐसी है वर्षा ऋतु ॥ ३ ॥
धन्वंतरीवैद्य पक्ष अर्थ ॥ कालिकाल-
सत जहाँ जटा मांसी औषधी सोहै है जहाँ मा-
लती प्रसन्न कर नाम विशल्या औषधी प्रसन्न
करन वारी है जहाँ रोहित रुचिर एचै रहै डा-
औषधी सुंदर सो है है लोक में कही है दायक
अक्षत वर दाता सिद्ध औषधी के" कारण करण
समु क्रिया भेद में आदि कारण सोहै है सार-
ग क्रिया प्रवीन नाम धातु वेधन क्रिया में
चतुर है सब जरा जाने है आत्मा छवि छा-
जत है नाम यत्न की छवि सोहै है जिनमें औ-
ध द्युति राजत है आसेर औषधी की द्युति ज-
हाँ राजै है योग योग्य औषधी में योग्य है अ-
र्थात औषधी के मिलावने में योग्य है काशी
राज कवि नाम ध्वनि सुख दानी है जाको बच-
न सुख दाता है धन्वंतरि वैद्य किधौं ऐसे धन्व-
तरीवैद्य हैं ॥ ४ ॥

गोपिका पक्ष अर्थ ॥ कालिका लसत जहाँ नाम रोमावली सोहै है जहाँ मालती प्रसन्न क- न्चन्द्र चांदनी जाकी प्रसन्न करन वारी है रोहि त रुचिर रचै नाम हार जाके सुन्दर सोहै है लोक में कही है दायक अमृत वर दाता गो- पन की श्रेष्ठ कारण करण लसु हाथ के रंग- ने में आदि कारण सोहै है अर्थात मेहदी महा वरी लगावे ही है सारंग क्रिया प्रवीन काम क्रिया में चतुर है सब मनुष्य यह बात जोने है आत्मा छवि छाजत है स्वभाव की छवि सो है है जासें राधा दुति राजत है राधा नाम गो- पी की कांति सोहै है योग योग्य नाम मिला- य के योग्य है यह वचन दूती का नायक सों जानिये कामी राज कवि नाम ध्वनि सुख दानी है जाको वचन सुख दाता है गोपिका सुहा- नी है राध नाम गोपी सुंदर है ॥५॥ ४२॥

अथ अभंग श्लेष षडर्थ कवित्त

सोभित सरस गंड सारंग सुखद अति भूषण विमल वर्ण जग में प्रसिद्ध है अमृत लसत जहाँ गुण में अधिक हित धारण लसत काम कि

ये छवि की सुवृद्धि है कवि काशी राज भनि राजत है वर वृष तीर्थ सुप्रगट लषु छाजै भग रिद्धि है किधौं गन नाथ किधौं वाणी व्रजनाथ किधौं नाथ नाथ दिवा नाथ किधौं तिय निद्धि है ॥ ४५॥

टीका वाण पति पक्ष अर्थ ॥

सोभित सरस गंड सारंग सुखद अति नाम सोभित है रस करिके युक्त गंड स्थल सो सारंग नाम भ्रमरता कों अत्यंत सुखद है भूषन विमल नाम निर्मल हैं आभूषण जिनके वर्ण जग में प्रसिद्ध है नाम स्तुति जिनकी जग में प्रसिद्ध है अमृत लसत जहाँ नाम सुधा लसै है जहाँ अर्थात चन्द्र शेखर हैं गुण में अधिक हित नाम सतो गुण मे है अधिक हित जिनको धारण लसनाम किये नाम गुणाधिक पुरुष ता धारण किये हैं छवि की सुवृद्धि है नाम छबि की भली बढ वार है कवि काशी एज कहै है राजत है वर वृष नाम राजत है श्रेष्ठ मूषक वाहन जिनको तीर्थ सुप्रगट लसु नाम अवतार विष्णु का प्रत्यक्ष देखो छाजै भागरिद्धि है नाम ऐश्वर्य रूपी रिद्धि जिनमें छाजै है किधौं गण नाथ नाम ऐसे गणेश हैं ॥ ॥ १ ॥ ॥

वाणी पक्ष अर्थ ॥ सोभित सरस गंड सारंग नाम सोभित है अधिक चिन्ह वाणी को जिनमे सुखद अति नाम अत्यंत सुख दायक हैं भूषण विमल वर्ण नाम निर्मल भूषन अरु निर्मल ही है वर्ण नाम अंग राग जाको जग मैं प्रसिद्ध है अमल लसत जहाँ सुवर्ण सोभै है जहाँ गुण मैं अधिक हित नाम स्वेत गुण मैं अधिक हित जाकी धारण ललाम किये नाम अति उत्तमता धारण किये हैं कवि की सुबुद्धि है नाम कीरति की सुबुद्धि हैं कवि काशी राज कहै है राजत है वर वृष सोभित है वृष नाम श्रेष्ठ वरदान जिन मैं तीर्थ सु प्रगट लघु नाम शास्त्र प्रत्यक्ष देखो छाजै नाम सोहै है जिन मैं भरा अरुहु है शास सोभा की अधिकता है किधौं वाणी ऐसी है सारदा ॥ २ ॥

रूप पक्ष अर्थ ॥ सोभित सरस गंड नाम सोभित है अधिक शूर पुरुष न मैं सारंग सुखद अति नाम गरुड़ के अत्यन्त सुख दाता हैं भूषन बिमल वर्ण नाम आभूषन है निर्मल सुवर्ण के जग मे प्रसिद्ध हैं जगत मैं

प्रसिद्ध नाम विख्यात है यह समस्त लसत जहाँ नाम मोक्ष लसत है जहाँ गुण में अधिक हित गुण नाम भीम सेन तिन में है अधिक हित जिन को धारण ललाम किये नाम तिलक धारण किये हुए हैं छवि की सुवृद्धि है नाम कांति की सुंदर बट वार है तिन में कवि काशी राज कहे है राजत है बर वृष नाम सोभित है श्रेष्ठ पराक्रम तीर्थ सुप्रगट लघु नाम यत्न रूप प्रत्यक्ष देखो छाजै भगवृद्धि है नाम छाजै है यस की स वृद्धि जिन में किधौं वृज नाथ ऐसे हैं श्रीकृष्ण ॥ २ ॥

शिव पक्ष अर्थ ॥ सोभित सरस गंड नाम शोभित है अधिक योग भेद जिन में सारंग सुखद शांति नाम देदो चन्द्रमा अत्यंत सुखद है जिन के भूषण बिमल वर्ण नाम जिनको कीर्ति ही निर्मल भूषण है जगत में यह बात प्रसिद्ध है समस्त लसत जहाँ नाम जल सो है है जहाँ अर्थात् गंगाधर हैं गुण में अधिकहित नाम त्याग में अधिक है हित जिन को धारण ललाम किये नाम ग्रहण शैल को किये है छवि की सुंदर वृद्धि है कवि काशी राज कहे है

रजत है वर वृष नाम सोभित है श्रेष्ठ बैल जिन
के तीर्थ सु प्रगट लखु नाम गुरु प्रत्यक्ष देखो सर्व
त्र शिव सब के गुरु हैं छाजै भग ऋद्धि है ना
म सोभित है शेष की अधिकता जहाँ किधौं ना
थ नाथ नाम ऐसे हैं महादेव ॥ ४ ॥

सूर्य्य पक्ष अर्थ ॥ सोभित सरस गंड ना
म सोभित है अधिक है गुह भेद में सारंग सु
खद अति नाम कमल के सुखद हैं अत्यंत क
रिके भूषण विमल वर्ण नाम निर्मल आभू
षण वर्ण नाम गुण है जिन में अर्थात प्रकाश अ
धि जगत में विख्यात है यह अमल सरस
जहाँ देवता ऐसे हैं जहाँ गुण में अधिक हित
नाम तेज मे अधिक है हित धारण सलाम कि
ये नाम ग्रहण सलाम नाम अवधि किये हैं अ
र्थात सूर्य्य करिके वर्ष मासादि ज्ञान होत है
छवि की सुवृद्धि है नाम कांति की बढ़ चार है
जहाँ कवि कामी गज कहैहै रजत है वर ब
ध सोभित है श्रेष्ठ धर्म जिन में तीर्थ सु भग
द लखु नाम दर्शन प्रत्यक्ष देखो अर्थात प्र
त्यक्ष देवता हैं छाजै भग ऋद्धि है सोहै है म

हिमा की अधिकता जिनमे किधौं दिवा नाथ
ऐसे हैं सूर्य ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥
नायका पक्ष अर्थ ॥ सोभित सरस गं-
ड नाम सोभाय मान है सरस नाम हास्य रस
करिके युक्त गंड नाम कपोल सारंग सुखद
अति नाम जाको चन्दन अत्यंत सुखदायक
है भूषण विमल वर्ण नाम निर्मल है अभू
षण अरु निर्मल ही है रीती जाके जग में प्र-
सिद्ध है अर्थात जगत में विख्यात यह नाय-
का अस्त लसत जहाँ सुंदरता लसे है जहाँ
गुण में अधिक हित नाम रूप गुण में अधि-
क है हित जाकी अर्थात शृंगार बनायो ई क-
रे है धारण ललाम किये नाम मणि भूषण
धारण किये है छवि की सुद्धि है कांति की
सुंदर बढ़वा रहे जामें कवि काशीराज कहैहैं
राजत है वर रूप तीर्थ सुप्रगट लखु नाम सो
भित है श्रेष्ठ रूप नाम काम तीर्थ नाम मंत्री
सी अर्थात श्रेष्ठ काम मंत्री सी सुंदर प्रत्यक्ष
देखु सोहै है छाजै भग वृद्धि है सो है है
भग नाम सौभाग्य की वृद्धि जाके किधौं

तिय निधि है ऐसी तिय रूपी रत्न है ॥ ६ ॥
॥ ॥ ५५ ॥ ॥

अथ श्लेष भंग श्लेष ॥ समर्थ कवित्त ॥ वर हंस करि सोहै धारण किये हैं हरि दायक परम शिव जग में बखानिये। करो नैन भद्रा प्रिय गुण शुभ राजत है पक्ष में रुचिर रुचि लोक लोक गानिये ॥ धरम प्रगट कियो सुखद शकति धर भग छवि छाजत है बचन प्रमानिये। भनि काशीराज ऐसे हरि हरि हरि ऐसे हरि हरि किधौं प्रौढ़ा तिय जानिये ॥ ५५ ॥

टीका ॥ विष्णु पक्ष अर्थ ॥ वर हंस करि सोहै श्रेष्ठ निर्लोभ ता करिके सोहै है धारण किये हैं हरि धारण किये हुए हैं गरुड़ कौं दायक परम शिव दाता उत्कृष्ट मोक्ष के जग में कहा है करो नैन भद्रा प्रिय भद्रा नाम हनूमान भंन स्त्रवे इवती ति भद्रा करो है नेत्रन तें हनूमान को प्रीति गुण शुभ राजत है सत्वो गुण सुंदर राजत है पक्ष मे रुचिर रुचि मयूर पक्ष में रुचिर है रुचि जाकी

लोक लोक में गई है धरम प्रगट कियो धनुष प्रगट कियो है सुखद शकति धर सुख देने वा-ली शकति जो लक्ष्मी ताकों धारण किये हैं भग छवि छाजत है ऐश्वर्य की छवि छाज-त है वचन प्रमानिये या वचन को प्रमाण मानिये कवि काशीराज कहे हैं ऐसे हरि ऐसे हैं विसु ॥ ॥ १ ॥ ॥

शिवपक्ष अर्थ ॥ वर हंस कहि सोहै प-रम हंस अवस्था करिके सोभित है धारण किये हैं हरि धारण किये हैं चन्द्रमा को दा-यक परम शिव दाता परम कल्याण के जरा में वखानें हैं कस्यो नैन भद्रा प्रिय कस्यो है नेत्रन ते वृषभ को प्रीति गुण शुभ राजत है तमोगुण शुभ राजत है पक्ष में रुचिर रुचि र सहाय में रुचिर रुचि जाकी लोक लोक में ग-ई है धरम प्रगट कियो स्वभाव प्रत्यक्ष कियो है सुखद शकति धर सुख देने वालें हैं स्वामि कार्तिक के भग छवि छाजत है वैराग्य की छवि छाजे है तिनमें वचन प्रमान कीजिये कवि काशी राज कहे है हरि ऐसे हैं महादेव ॥ २ ॥

ब्रह्मापक्षार्थ ॥ वरहंस की सोहै श्रेष्ठ हंस
पक्षी करिके सोहै है धारण किये है हरि धारण कि-
ये हैं धर्म सनातन को दायक परम शिव दा-
ता परम वेद के जग में कह्यो है करणो नैनभ
द्रा प्रिय करणो है नैत्रन ते साधु पुरुष नारदादि-
क को प्रीति गुण शुभ राजत है रजो गुण शु-
भ राजै है पक्ष में रुचिर रुचि साध्य वस्तु मे है
रुचिर रुचि जाकी अर्थात् सम्पूर्ण साध्य है लो-
क लोक में कह्यो है धरम प्रगट कियो अहिं-
सा धर्म प्रगट कियो है सुखद प्रकृति धर
सुख देने वाली उत्पन्न कारक शक्ति धारण
किये हैं भग छवि छाजत है ज्ञान की छवि छा-
य रही है या बचन को प्रमान मानिये काशी
राज कहैहै हरि ऐसे हैं ब्रह्मा ॥ २ ॥

इन्द्रपक्षार्थ ॥ वरहंस श्रेष्ठ है राजा न-
में करि सोहै गज सोहै है जिन के धारण
किये हैं हरि धारण कियो है रवद्द को दाय-
क परम शिव दाता उत्कृष्ट जल के जग म
में कह्यो है करणो नैंन भद्रा प्रिय करणो है
नैत्रन ते सुमेर शाश्वत पर्वत कौं प्रीति जाने

गुण शुभ राजत है राज्य गुण करिके शोभित
हैं पक्ष में रुचिर रुचि बल मे है रुचिर रुचि जा-
की लोक लोक में जानिये धरम प्रगट किये य-
त्न को प्रगट किये हैं सुख दम कीर्ति धर सुख
देने वाली वर्द्धी को धारण किये हैं ॥ भ-
ग छवि छाजत है कीर्त्ति की छवि करि सोभित
हैं बचन प्रमान मानिये काशी राज कहै है
हरि ऐसे हैं इन्द्र ॥ ४ ॥
सूर्य्य पक्ष अर्थ ॥ वर हंस करि सोहै श्रे-
ष्ठ घोड़ा करिके सोभित हैं धारण किये हैं
हरि धारण किये हैं किरण कों दायक परम
शिव परम कमल के दाता हैं जग मे कह्यो
है कह्यो नैंनभद्रा प्रिय कह्यो है नेत्रन ते श्रे-
ष्ठ पुरुष सूर्य्य वंश के राजान को प्रीति जि-
न ने गुण शुभ राजत हैं तेज गुण शुभ राजै
हैं पक्ष में रुचिर रुचि मित्रता में है प्रीति
जाकी लोक लोक में कह्यो है धर्म्म प्रगट
कियो यम राज कों प्रगट कियो है नाने सुख
र शक्ति धर सुख देने वाली प्रकाश शक्ति धा
रण कियेहैं भग छवि छाजत है वड़ादूकी छवि छा

जत है अर्थात नव ग्रहन में बड़ा है या वचन
कों प्रमानिये कवि काशीराज कहैं है हरि ऐसे हैं
सूर्य्य ॥ ५ ॥

चन्द्रमा पक्ष अर्थ ॥ वर हंस कीर सोहै ।
सूर्य्य कीरके श्रेष्ठ सोभित हैं धारण किये हैं
हरि धारण किए हैं श्री जो सोभा ताकों दायक
परम प्रिय दाता उत्कृष्ट सुगंध औषधीन
के जगत में जानिये करणो नैंन भद्रा प्रिय क-
रणो है नेचन ते कल्याणन कों प्रिय जिननेगु-
ण शुभ राजत है गीतलत्ता गुण शुभ राजत
है जामें पक्ष में रुचिर रुचि शुक्ल पक्ष में रु-
चिर रुचि है जाकी लोक लोक में गायो है धर
म प्रगट कियो नाम उपमा प्रगट करी सुख-
द शकति धर सुख देने वाली उद्दीपन शक्ति
धारण करे हैं भग छबि छाजत है हरिण लां-
छन की छवि शोभित है या बचन को प्रमाण
मानिये काशीराज कहै है हरि ऐसे हैं च-
न्द्रमा ॥ ६ ॥

प्रौढ़ा स्त्री के पक्ष अर्थ ॥ वर हंस कीर
सोहै श्रेष्ठ पुरुष जो है वर पति ता करिके ।

सोभित है धारण किये हैं हरि धारण किये
हैं सुवर्ण भूषण को राखव परम शिव दा-
ता परम सुख की जग में करवान्यो है करयो ने
नभद्रा करयो है नेत्रन को खंजरीट जाने मि-
यगुण शुभ राजत है क्रीड़ा दिक जो प्रिय गु-
ण शुभ हैं ता करिके शोभित है पक्ष में रुचि-
र रुचि केश सरह में रुचिर है रुचि जाके
लोक लोक में प्रसिद्ध है धरम प्रगट कियो
कुलाचार प्रगट कियो जिन ने सुखद शक-
ति भर सुख देने वाली पति व्रता जो मति
ताकौं धारण कीनी है भग छवि छाजत है
वचन वचन की रचना में छवि छाजे है जा
के प्रमानिये प्रमाण है अर्थात ताको बच-
न मिथ्या नहीं है कवि कारण राज कहै है
ऐसी प्रौढ़ा तिय जानिये ऐसी है प्रौढ़ा ना-
यका ॥ ७ ॥ ५५ ॥

इति श्री मल्लगिराज विरचित
चित्र चन्द्रिका यां अर्थ चित्र वर्णनो
नाम अष्टमः प्रकाशः ॥ ८ ॥
अथ पदार्थ संकर्ष्य यमक चित्र

स्तिरव्यते ॥ दोहा ॥ शब्द अर्थ को चित्र
सम जहाँ वर्णिये मित्र । अधिक न्यून होवै न
जह सो संकर है चित्र ॥ १ ॥
टीका ॥ शब्द चित्र अरु अर्थ चित्र है मित्र
जहाँ सम वर्णन कीजिये अर्थात् तुल्य हों
य अधिक अरु न्यून शब्द अर्थ में न होय सो
संकर चित्र जानिये ॥ १ ॥
अन्यच्च ॥ दोहा ॥ कवि धुनि शब्द
हैं शब्द सो अर्थ अर्थ में प्रीति शब्द अर्थ में
प्रीति सम यह संकर की रीति ॥ २ ॥
टीका ॥ कवि धुनि शब्द में शब्द सो नाम ज-
हाँ कवि की धुनि नाम प्रीति शब्द रचना में है सो
शब्दालंकार चित्र जानिये अर्थ अर्थ में प्रीति
नाम जहाँ कवि की प्रीति अर्थ रचना में है सो
अर्थालंकार चित्र जानिये शब्द अर्थ में प्रीति
सम नाम जहाँ कवि की प्रीति शब्द अर्थ में व-
रणन है यह संकर अलंकार चित्र की रीति
है ॥ २ ॥
तत्र दूषणानि दोहा ॥ अलंकार है रीति
के अर्थ शब्द के भाइ इहाँ न संकर को कह्यो

कौन ग्रंथ मत पाइ ॥ २ ॥

टीका ॥ अलंकार है प्रकार के हैं एक शब्दालंकार एक अर्थालंकार अरु तुमने शंकर जो वर्णन कियो सो कौन ग्रंथन के मत पाइके यह ग्रंथ ॥ २ ॥

अन्यच्च दोहा ॥ यमकादिक को कहत कवि शब्दालंकृत माहि । अर्थ चित्र कैसे बने यह बिचार अवगाहि ॥ ४ ॥

टीका ॥ यमक आदि देके अलंकारन को शब्दालंकार कवि कहतु हैं यह बिचारि करिके तुम देखो कि यमक कौं अर्थ चित्र कैसे कहैं कवि सम्प्रदाय बिरुद्ध होवै है काहे तें कि कवि जन याको शब्दालंकार में गिनत हैं ॥ ॥ ४ ॥ ॥

अन्यच्च दोहा ॥ भोज ग्रंथ में नहि कियो यमक शब्द को चित्र । शब्द चित्र ताको कहैं किहि विधि समझो मित्र ॥ ५ ॥

टीका ॥ भोज ग्रंथ जो है सरस्वती कंठाभरण ताम यमकालंकार को शब्द चित्र मे नहीं कह्यो है ता यमक को शब्द चित्र कैसे कहैं

काहेतें कि सरस्वती कंठा भरण से विरुद्ध होवै
हे मित्र समुझि लेव ॥ ५ ॥

तथा च सरस्वती कंठा भरण पद्यम् ॥

यथा ॥ वर्ण स्थान स्वराकार गति बंधान् प्रतीहि-
यः नियमस्तु बुधैः षोढ़ा चित्र मित्य भि धीय-
ते ॥ ॥ ६ ॥ ॥

टीका ॥ वर्ण कहैं वर्ण चित्र में एकाक्षरादि
दे के गणना करी है स्थान कहैं कंठादिक स्था-
न चित्र जानिये स्वर अकारादि हकारादि चित्र
जानिये आकारादिक चित्र जानिये आकार नाम
कमलादिक बंध आकार चित्र जानिये गति नाम
गतागत आदि देके गति चित्र जानिये बंध नाम
पर्वत बंधादिक बंध चित्र जानिये प्रतीहि नाम इ-
नको लखिव करिके यहाँ छः प्रकार को जो नियम
है ताकों पण्डित चित्र या नाम करिके कहत
हैं ॥ ॥ ६ ॥ ॥

उत्तर दोहा ॥ शब्द अरु अर्थ दुहून को च-
मत्कार सम देखि। यमक चित्र संकर लखो मंम-
टमत अवरेखि ॥ ७ ॥

टीका ॥ शब्द अरु अर्थ दुहून को चमत्कार तुल्य

देखि के यमक चित्र को संकर चित्र कह्यो मम्मट
आचार्य्य को मत जो है काव्य प्रकाश ताको चित्र
र करिके कह्यो है संकर अलंकार ॥ ७ ॥

काव्यप्रदीपे नवमोल्लासे यथा ग्रन्थावतरणिका यथा ॥ शब्दालंकारश्चार्थालंका-
रश्च उभयालंकार स्वरूपविभेष लक्षणत्रयं चार्थ
लभ्यमिति ॥ ८ ॥

टीका ॥ जा रीति सौं शब्दालंकार कह्यो अरु
अर्थालंकार कहै याही रीति सौं उभयालंका-
रनाम संकर अलंकार इन तीनौं न को स्वरू-
प अर्थ लभ्य है नाम स्वभाव ही करिके इनका
लक्षण प्रत्यक्ष है ॥ ८ ॥

उभयालंकारोदाहरणं काव्यप्रकाशे नवमोल्लासे यथा आर्य्या ॥
तनुवपुरज घन्यो सो करि कुंजर रुधिर रक्त-
खरनखरः। तेजो धाम महः प्रथु धाम्नासिंहो
हरिर्जिस्नुः ॥ ९ ॥

टीका ॥ तनुवपुरिति असौ सिंहः नाम प-
ह सिंह है अज घन्यः सर्व सिंहेषु श्रेष्ठ ना-
म सम्पूर्ण सिंह न में श्रेष्ठ है को दृष्टान्त

कः शंवपुर्यस्यसः तनु कहैं नाम रूप है
वपु नाम शरीर जाको पुनः की दृग्: फिर
कैसो है करि कुंजराणां राज श्रेष्ठा नां रुधि-
रेण रक्ताः लोहिता: खरास्तीक्ष्णा न खरा ।
यस्य सता दृग्: करि नाम हाथी तिनमें कुंज
र नाम श्रेष्ठ तिन के रुधिर करिके रक्त कहि
ये लाल हैं खर नाम तीक्ष्ण हैं नखर नाम
न ह जाके ऐसो सिंह है तेजसो धाम स्थान
म नाम तेज का घर है महसा वर्तिन एषु ।
मनसां विपुलांतः करणा नां इन्द्रः श्रेष्ठ म-
ह नाम वलता करिके एषु कहि बड़े हैं म-
न नाम चित्त जिनके तिन जीवन के मध्य
में इन्द्र नाम श्रेष्ठ है यह हरि नाम सिंह
निस्तुर्नय शीलः नाम जयकरन है स्वभा-
व जाको अत्र तनु वपु रित्यादौ पुन रुक्ति
वदाभासस्यष्ट दूति नाम या श्लोक में तनु
वपु इत्यादिक शब्दन में पुन रुक्ति अलंका-
र सो प्रगट दिखाई देतु है परन्तु पुन रुक्ति
है नहीं ॥ ४ ॥

फक्किका ॥ अत्र एकस्मिन् पदे परि वर्ति

ते ना लंकार वृत्ति शब्दा श्रयो श्रपरस्मिं स्तु
पदे परिवर्त्तिते पिस नही यत इत्यर्थ निष्ठ उ-
भया लंकारो यस्म ॥ १० ॥

टीका ॥ श्रब कहैं या श्लोक में एक जो प-
द पलटिये तो श्रलंकार नहीं रहै इति श-
ब्दाश्रयः इति कहिये या हेतु तें शब्द के श्रा
श्रय रह्यो श्रर्थात् शब्द के पलटे तें शब्दा
लंकार ना न रहै यातें शब्दा लंकार है श्ररु श्रप
रस्मिं स्तु पदे नाम श्रौर जो पद हैं ताके तौप
लटिवेहू तें स्वनाम सो श्रलंकार न नाम
नहीं खीयते नाम जाय है इत्यर्थ निष्ठः इ-
ति कहैं यातें श्रर्थ के श्राश्रय है श्रर्थात् श्रौ-
र पद के पलटे हूते श्रलंकार न गयो यातें श्र-
र्थ हू के श्राश्रित रह्यो यातें श्रर्थालंकार है
उभया लंकारो यस्म यहाँ श्रलंकार शब्द के श्रा
श्रित हू रह्यो श्ररु श्रर्थ हू के श्राश्रित रह्यो या
तें उभया लंकार जानिये ॥ ११ ॥

पाक्षिका ॥ एकस्मिन्निति तनु कुंजर रक्ते
त्यादि रूपे । श्रपरस्मिन् वपुः करि रुधिरादि
रूपं इति श्री वल्लभोद्धन ॥ ११ ॥

टीका ॥ श्री यस्सलांछन टीका कारको ले
ख एकस्मिन्निति नाम एक शब्द को अर्थ
यह है कि तनु कुंजर रक्त इत्यादिक रूप शब्द
को पलटिये तो अलंकार नहीं रहैहै अपर
स्मिन् नाम और पद जो है वपुः करि रुधिर
इत्यादिक रूप शब्दन के पलटिबे हूते अलं-
कार नही जाय है यही रीति शब्द यमक चि-
त्र में अरु अर्थ यमक चित्र में समानि
जानिये ॥ ११ ॥

अथ संकर यमका लंकार लक्षणम्

दोहा ॥ शब्द अर्थ के यमक कवि दुहैं पुन
रुक्ति अधीन । सब्य येत अब्य पेत कहि सां-
तर अंतर हीन ॥ १२ ॥

टीका ॥ शब्द अर्थ के यमक विवि शब्द
नाम शब्द के यमक अरु अर्थ नाम अर्थ
के यमक विवि नाम दै प्रकार के यमक
हैं पुनि रुक्ति अधीन नाम पुनि रुक्ति के अधी-
न हैं जहाँ शब्द की पुनि रुक्ति है तहाँ शब्द य-
मक है अरु जहाँ अर्थ की पुनरुक्ति है तहाँ
अर्थ यमक जानिये इन दोउन के दैदै भेद हैं

सव्यपेत अव्यपेत कहि नाम एक सव्य पे
त भेद है अरु एक अव्यपेत भेद है सांतर अंतर
हीन नाम सांतर कहे और शब्द जाके बीच में
आवै सव्य पेत जानिये अरु अन्तर हीन नाम
जाके अन्तर में और शब्दन होय सो सव्य पेत
जानिये ॥ १२ ॥

**अथ संकर शब्द यमक सव्य पेत य-
था कबित्त ॥** उगिले अनेक मणि तारेके कि
तारे नहीं ताही को प्रकाश भास तासो जोन्हि
तरसै । दश हूं दिशा में जीभि फिरन किरन सम
सीतना असीत को प्रताप ताप वरसै ॥ कबि का-
शीराज भनि शेष गोत होत सेत हिये लिए वि
ष द्युति श्याम ताई सरसै । युक्त परिवेष रेख ना
ही चन्द्र चन्द्र मुखी कुंडली किय हुए फणीन्द्र
फण दरसै ॥ १३ ॥

**टीका प्रलापिकावस्था मे नायिकाका
वचन सखीसों ॥** उगिले अनेक मणि तारे
के कि तारे नहीं नाम यह सर्प के उगिले भये म-
णि हैं तारान की पंक्ति नहीं है ताही को प्रकाश
भास तासों जोन्हि तरसै तामणिन को प्रकाश

भास नाम दीप्य मान ता करिके जोन्हि जो है
चाँदनी सो बराबरी कौं तरसै है दश हूँ दिशा में
जीभ फिरन किरन सम नाम दर्शौं हि दिशा में
यह जीभि फिर रही है किरन के बराबर अर्थात
किरन नही है जीभि है सर्प की सीतना नाम
शीतलता नहीं है असीत को प्रताप ताप बरसै
असीत जो है उष्मता ता तेज सौं ताप जो है दुः-
ख ताको बरसै है कवि काशीराज कहै है शेष
गोत होत सेत नाम शेषनाग के वंश में स्वेत
वर्ण सर्प होत हैं हिये लिये बिष द्युति श्याम ता
ईसरसै हृदय में लिये हुए जो बिष है ता करिकै
श्याम ता सरस होय रही है काहेते कि चन्द्रमा
का नाम सुधाधर है अरु सुधा है अति स्वच्छ
जो सुधा याके हृदय मे होती तो श्यामता न
होती याते यह बिष धर ही है युक्त परि बे ध
रेख नाही चन्द्र चन्द्र सुखी है चन्द्र सुखी सखी
परि बेष नाम मंडल ता रेखा करिकै युक्त यह
चन्द्रमा नहीं है कुंडली किये हुए फणीद्र फण
दरसै यह कुंडली किये भए नाम फेटी मारे
हुए फणिन में जो इन्द्र है सर्प राज ताको फण

रेखि परतु है अर्थात फण तो चन्द्रमा है अरु
कुंडली मंडल है तारेके किनारे इत्यादिक
शब्दन में के अरु कि यह वर्ण जो अन्तर में
आय गये यातें सव्य पेत यमक जानिये ॥ २३ ॥
अथ संकर शब्द यमक अव्य पेतप्र-
थम पद यमक यथा दोहा ॥ सुमनस सुम
न सवा लिये निज कर मंडहिं केश । परम सु अद्भुत
हाव यह धरि श्यामा को भेश ॥ २४ ॥
टीका ॥ यहाँ लीला हाव है सुमनस नाम पुष्प
सुमन सवर नाम देवतान में जो श्रेष्ठ हैं ऐसे जो
हैं श्री कृष्ण सो लिये नाम पुष्प को ले करिके
निज करतें मंडहि नाम पोंहे हैं वारत को पर-
म सुअद्भुत हाव यह परम अद्भुत लीला हाव
है धरि श्यामा को भेश नाम स्त्री का भेश धारण
करिके नायका के केश मंडन करें हैं यहाँ सुम-
नस सुमनस या पद में कोऊ और वर्ण बीच में
न आयो यातें अव्य पेत यमक जानिये २४
अथ संकर अव्य पेत द्वितीय पद यम-
क यथा दोहा ॥ चिबुक गाढ़ तेरो तिया मोह-
न मोहन मंत्र । भुज मेलत गर सुरति क्यों पढ़्यो

मानको मंत्र ॥ १५ ॥
यह दूती की उक्ति नायका सौं टीका है तिया तेरो जो चिबुक नाम ठोड़ी ताकी जो गार है सो मोहन नाम श्री कृष्ण तिन को मोहन जंत्र नाम मोहलेने वारो जंत्र है भुज नायक के गरे मे डारवेमे ए कौं सुरे है अर्थात् ए कौं रूके है पढ्यो मान को मंत्र कहीं मान को मंत्र पदि आई है ॥ १५ ॥

अथ संकर अभ्यपेतत्तीय पदय मक यथा दोहा ॥ गोदन कर सोभित चिबुक मनु शशि शनि लिये अंक । रती रती अति दुति रती कंज अमर ते रंक ॥ १६ ॥

टीका ॥ दूती का बचन नायक सौं गोदन नाम गोदना मेद सोभित है चिबुक पर । मानौ चन्द्रमा शनै श्चर को गोदी में लेकर बैठे हैं ऐसी शोभा गोदना की भई रती नाम काम पत्नी ताकी जो रती नाम भाग्य सो तो कांति करिके अत्यन्त रती माच । है नाम चिरमिटी के बराबर है अर्थात् । काम पत्नी वा नायका के तुल्य नहीं है

कंज नाम कमल अरु भ्रमर ये अत्यन्त ग-
रीब हैं अर्थात् गोदना चिबुक के उपमा
में कमल में भ्रमर वा शोभा कौं नहीं पहुं-
चे है ॥ १६ ॥

**अथ संकर अव्यपेत चतुर्थ पद य-
था दोहा ॥** कहा बजत वृज में सखी रहत बनत
नहिं गेह। जो चाहति कुल कान तिय कानन
कानन देहु ॥ १७ ॥

टीका ॥ यहाँ सखी नायका सौं उत्तर प्रति उ-
त्तर है सखी वृज में कहा बजत है या शब्द
करिके घर में रहत नहीं बनैं है अर्थात् वहीं
जायवे को चित्त करै है जो चाहत कुल का-
निय हे तिय जो अपने कुल की कानि ना-
म लज्जा चाहो तो कानन नाम वन ताकी
ओर कानन देहु कान नाम कर्ण वा ओर
को मत करौ अर्थात् वा शब्द को सुनौं मत
काहेतें कि शब्द सुनैं पर कानन रहैगी १७

**अथ संकरचित्र अव्यपेत आद्यंतय-
मक यथा कवित्त ॥** चटकि चटकि उठै चूरी
चारु कर बीच आपुही तेलटर खुलि लटकि लट

कि उठै । मटकि मटकि उठै बाँई अंग मेरी आ-
नु बाजू भुज जुग मध्य अटकि अटकि उठै ॥
छटकि छटकि उठै चूड़ा कील काशीराज वार
वार आँगी बन्द पटकि पटकि उठै । भटकि भ-
टकि उठै मोहन में मन आली निहचै मिलैंगो ।
काक फटकि फटकि उठै ॥ १८ ॥

टीका ॥ यह सगुन हर्षिता नायका का बचन
सखी सों चटकि चटकि उठै चूरी चारु कर बी-
च नाम टूटि टूटि जाय है चुरी सुन्दर करके
बीच में आपुही ते लट खुलि लटकि लटकि
उठै अरु आपुही ते लट जो चोटी में बंधी ।
है सो आपुही से खुलि के लटकि लटकि
परै है मटकि मटकि उठै बाँई अंग मेरी ।
आनु नाम फरकि फरकि उठै है आज मे-
रो बाँयों अंग बाजू भुज युग मध्य अटकि
अटकि उठै बाजू दोनों भुजन में फँस फँ-
स जाय है छटकि छटकि उठै चूड़ा कील ।
नाम कंकन की कील निकस निकस जा-
य है काशीराज कवि नाम बार बार आँगी
बंद पटकि पटकि उठै बारही बार कंचुकी

के बंद टूट टूट जाय है भटकि भटकि उडै मोह-
न में मन आली है आली श्रीकृष्ण में मेरो म-
न आज भटकि भटकि उडै है नाम स्मरण आ-
वै है निहचे मिलैंगे काक फटकि फटकि उ-
है काक नाम कौआ फटकि फटकि नाम
उड़ि उड़ि उडै है इन शकुनन ते यह दीस परै है
कि श्रीकृष्ण निश्चै मिलैंगे ॥ १८ ॥

अथ संकर अव्यपेत तुकांत यमक या कवित्त ॥ मीसी मै रुचिर रुचिरएचै हि
ज राज मानों नील मणि खोने मध्य उच्च वसु
कैसी है। विंबि कंज खंजरी टकोर औ कपोत
चाप लक्षित किये हैं आजु सोभित सुकेशी
है काँखी ते उरकि काँकि मेरो मन लीनों मो-
हि मोहि ना मिलावे वाहि तूं त्रिय सुकेशी है ।
काशी राज ऐसी भुव मंडल में देखी नाहि इन्द्र
लोक तैं जो किधौं उतरी सुकेशी है ॥ १९ ॥

टीका ॥ यहाँ उपपति नायक को वचन दू-
ती से मीसी में रुचिर नाम सोभा की रुचि है
एसे हिज राज सोभाय मान है हिज नाम
हंस तिन की पंक्ति जामे मानों नील मणि

स्यानें मध्य उच्च व सुकेसी है मनहु नील मणि के जो घर हैं तामें उच्च वसु नाम उच्च जो द्र व्य है अर्थात हीरा मोती जो है केसी है ना- म तैसी है शोभा बिंब नाम कुंदरू अरु क- मल अरु खंजन अरु तीता अरु कंबुतर अरु चाप नाम धनुष इन सबन को संग अ- संग शोभा ते लज्जित आजु कियो है शोभित सुकेसी है सोभाय मान है सुंदर केश जाके ऐसी नायका झरोखा ते झाँकि करिके उझकि करिके मेरो जो मन है ताकों मोहि लियो है मोहि- ना मिलावे वाहि तूं तिय सुकेसी है हे तियतूं कै- सी तिया है जो वा नायका सों मोहि नहीं मिला वै है अर्थात वा नायका कों मिलाय दे कारणमान कवि नाम ऐसी नायका पृथ्वी मंडल मे नहीं दे- खी किधौं इंद्र लोक ते सुकेसी नाम की अप्सरा उतरी है अर्थात पृथ्वी मंडल में आई है ॥ १९॥

अथ संकर अव्यय पेत पादानुप्रास यमक यथा छन्द चौपैया॥ सरस चिकुर सीता को प- क्ष। सरस चिकुर सीता को पक्ष॥ हरि अंगभासत स्थि- रदक्ष। हरि अंग भासत स्थिरदक्ष ॥ २० ॥

टीका ॥ सीता नाम पार्वती पक्ष अर्थ अधिक है चिकुर नाम केश सीता नाम पार्वती जीके पक्ष नाम मयूर पक्ष हू ते अर्थात् पार्वतीके केश मोर पक्ष हू ते सरस हैं हरि अंगा नाम महादेवके अर्द्धांगा भासत है भासत पद देहरी दीपक न्याय करिके स्थिरा नाम पर्वत दक्ष नाम नंदी ता करिके सोभित हैं अर्थात् महादेव अरु पर्वत अरु नांदी इन करिके सोभाय मान हैं पार्वती ॥ १ ॥

गंगा पक्ष अर्थ ॥ सरस नाम जल करिके युक्त चिकुर नाम चंचल सीता नाम गंगा के पक्ष नाम पराक्रम अर्थात् अति चपल पराक्रम है हरि अंगाभा नाम विष्णु के अंग सौं भई सत नाम सो अर्थात् अनेक प्रकार के स्थिरा नाम मोक्ष की दक्ष नाम चतुर हैं अर्थात् दाता हैं ॥ २० ॥

अथ संकर अव्यपेत अर्द्ध यमक यथा दोहा ॥ हरि सारंग भद्रा सुभग सीता सुर गुण युक्त । हरि सारंग भद्रा सुभग सीता सुर गुण युक्त ॥ २१ ॥

टीका रामचन्द्र पक्ष अर्थ ॥ हरि नाम रामचन्द्र सारंग नाम धनुष भद्रा नाम

हनूमान सु नाम सुन्दर भग नाम ऐश्वर्य्य सीता नाम सीता जी सुर नाम देवता गुण नाम सतो गुण इन करिके युक्त हैं अर्थात सोभित हैं राम चन्द्र ॥ १ ॥

शिव पक्ष अर्थ ॥ हरि नाम महादेव सारंग नाम टेढ़ो चन्द्रमा भद्रा नाम गंगा सु नाम सुन्दर भग नाम शेष अर्थात सुंदर शेष सीता नाम पार्वती सुर नाम नंदी श्वर गुण नाम तमो गुण इन करिके युक्त हैं अर्थात सोभित हैं महादेव ॥ २१ ॥

अथ संकर अव्य पेत सर्व यमक यथा कवित्त ॥ बनी बन माला छवि बनी बन माला छवि बनी बन माली छवि बन तट देखि ये। ब्रज कौं सिंगार बर ब्रज को सिंगार बर ब्रज को सिंगार बर तोही तिय लेखिये ॥ कबि काशी राज मन मोहन मन मोहन तेरे मन मोहन ही मैंन मत पेखिये। मैन मत बारी मान मैन मत बारी मान मैन मत बारी मान चलन बिशेखिये ॥ २२ ॥

टीका ॥ यहाँ उत्तम दूती का वचन मान मोचन

मैं नायका सौं बनी वन माला छवि बन रही
है वन की माला नाम पंक्ति की शोभा बनी व-
न माला छवि तैसिये वन माला की शोभा है
बनी वन माली छवि अरु तैसिये श्रीकृस्न की
शोभा वन तट देखिये जल के किनारे पर देखि
ये वृज को सिंगार वर वृज को सिंगार जो है वंसी
वट अर्थात तहाँ वृज कौं सिंगार वर वृज के
शृंगार वर जोई तेरो पति श्रीकृस्न वृज को सिं
गार वर वृज की शोभा श्रेष्ठ तोहीं तिय लेखि
ये हे तिय तूही है काशीराज कवि नाम मन
मोहन मन मोहन मन मोहन जो श्री कृस्न सो
तो मन के मोहने वारे हैं अर्थात तिन कौं तेरे
मन मोहन ही तेरे मन में प्रीति नही मैन मत
पेखिये काम शास्त्र देखे भये पर मैन मत वारी
मान काम देव के मसलत वारी है मानु नाम
प्रमाण की मैन मत वारी मान मैन नाम है
मोम करन वारी मान नाम मानहु मैन मत वारी
मान नाम मुरु वावरी मत जानु चलन विशेषि
ये विशेष करिके चलिये ॥ २२ ॥

अथ संकर अर्थ यमक सव्य पेत यथा

॥ कवित्त ॥ द्वार पर बार बार आवत हौं नन्द लाल जेहैं कृस्न हिये बाल चरचा मचाइ हैं। बन तट कानन में बेचन में दधि मिस मिलौंगी जो तौसों दही सौंति ललचाइ हैं। कवि काशी राजभनि गरिबहौं बनारस में सपथ तिहारे सौं हैं कूँठी न खचाइ हैं। हाहा अब पीतम तू खोवो मति मेरी पति चरण गहत पर कैसे के बचाइ हैं ॥ २३ ॥

टीका ॥ यह स्वयं दूति का नायका की उक्ति नायक सों द्वार पर बार बार आवत हौं नन्द लाल नाम मेरे दर वाजे पर बार बार तुम आवो हो हे नन्द लाल अर्थात बार बार तुमारे आय बे तें जेहैं कृस्न हिये बाल नाम जे बाल हृदय की कृस्न नाम श्याम हैं अर्थात जे मलिन हृदय हैं ते चरचा मचाइ हैं नाम बचाव करैगी। बन तट कानन में बेचन में दधि मिस मिलौंगी जो तौसों बन नाम जल ताके किनारे पर अरु कानन नाम बन में दही बेचवे के मिस करिके तोसों मिलौंगी मैं दही सौंत ललचाइ है दही नाम जरी मई जे सौंति हैं ते हमारे तुमारे मिला-

पकोदेखि के ललचौंहगी काशी राज कवि॰
नाम भनि नाम कहैहै राखि हौं बनारस मैं नाम
रस कौं बना रक्खौंगी मैं अर्थात् तुम से प्रीति न
तोरौंगी सपथ तिहारे सौं हैं नाम सौगंद तुम्हा
रे सन्मुख झूठी नरव चाइ हैं नाम मिथ्या न लि॰
खैंगी हम हाहा अब पीतम जू खो वो मति मे॰
री पति है पीतम जू अब हाहा खाति हूँ मेरी
पति जो लज्जा है ताकौं मति दूर करो चरण
गहन अरु पायन परती हौं काहे तैं कि जो
तुम द्वार पर मेरे वार वार आवोगे तो पद नाम
प्रतिष्ठा कैसे के बचाई हैं नाम कौन रीति करि
कै प्रतिष्ठा बचावैंगी हम संसार में या कवित्त
में द्वार वार नन्द लाल कुंज वन कानन इत्या॰
दिक शब्द जो हैं तिन में अर्थ पुन रुक्तिवदाभा॰
स है तासौं अर्थ यमक जानिये अरु द्वार पर
वार यहां द्वार वार शब्द के मध्य में पर शब्द आ
यो यातैं सव्य पेत जानिये ॥ २३ ॥

अथ संकर अर्थ यमक अव्य पेत य॰
था कवित्त ॥ भृगुलात पद हिय पिय बा राज॰
त है मोर पंख पक्ष छाजै मेरे मन भावै है राजै द्वार

वनमाल आडुते दिखाई देत काशीराज तन
पर गोरज सुहावै है हरै पर दोष सोऊ समय में
बिहारी श्याम ललित अरुण अँग ताम्रकूं लज्जा-
वै है दक्षिन हरित हरे अंग संग बलदेव कुंजर मतंग
दंत कंध धरे आवै है ॥ ॥ २४ ॥ ॥

टीका ॥ यहाँ उक्ति गोपी की गोपीन सौं जा सम
य में कुवलया पीड़ हाथी कों मारिकै आये हैं
श्री कृस्न भृगु लात नाम भृगु लता पद हिय पि-
य वर नाम पीतम श्रेष्ठ को हृदय पद नाम स्था-
न है अर्थात् भृगु लता को स्थान है हृदय जाको
राजत है मोर पंख नाम मयूर का पंख सोभाय
मान है जिन के पक्ष काजे नाम सहायकवासो
भायमान है जिनमे सो मेरे मन कोभावै है राजै
हार नाम हार सोभाय मान है जिन के सो वन
माल आड़ते दिखाई देत नाम वन की जो मा-
ला कहै अवली ताको ओर ते दिखाई देत है
कवि काशीराज नाम तन पर गोरज सुहावै-
है नाम गाऊन के खुरन तें उड़ी भई जो रज सो
सोभाय मान है रही है शरीर के ऊपर हरै पर
दोष नाम पराये दोष को हर करै हैं सोऊ समय

मे विहारी नाम ऐसे जो विहारी श्रीकृष्ण हैं सो सांझ समय में श्याम ललित अरुण अंग नाम श्याम रंग अरु अरुण रंग इन करि के मिश्रित सुन्दर अंगता अंग रुचि करिके ता वें को लजावै हैं दक्षिण हरित नाम दाहिनी हरित नाम दिशा अर्थात दाहिनी ओर हरे रंग संग बलदेव हरे नाम डहडहे अर्थात प्रसन्न रंग सों बलदेव जी संग में हैं कुंजर नाम श्रेष्ठ मतंग दंत कंध धरे आवै हैं नाम हाथी श्रेष्ठ जो है कुबलया पीड़ ताको जो दंत है सो कंधे पर धरे हुए आवै हैं श्री कृष्ण या कवित्त में सात पद पिय कर पंख पक्ष हार वनमाल इत्यादिक शब्दन में अर्थ पुनरुक्ति सी है यातें अर्थ यमक है सात पद इन शब्दन के बीच में कोई शब्द नहीं आयो यातें अन्य पेत जानिये ॥ २५ ॥

अथ उभय संकर लक्षणम् दोहा ॥

शब्द अर्थ पुनरुक्ति विवि एक छन्द मेहोय।
यमक उभय संकर तहाँ कहत सयाने लोय ॥ २६ ॥

टीका ॥ शब्द नाम शब्द यमक अर्थ नाम अर्थ यमक ए पुन रुक्ति होऊ जहाँ एक छंद में होंय ताको सयाने लोग उभय संकर यमक चित्र कहत हैं ॥ २६ ॥

यथा कवित्त ॥ तनु तनु मध्य सोहै देव अंग नासी अंग राग राग भावै मन नेह सर नेह में । काम काम भरी मैन पेरवी मैन कैसो हिय अंवर सुवास वास अंवर सुदेह मे॥ का नन में मेरे वैन मानि चलो कानन मे मिलि वो राहन फिरि राहन सुछैहमै ॥ कवि काशी राज लाल देखे वनै गुण रूप धाम धाम ऐसी तिय नाहीं गेह गेह मैं ॥ २७ ॥

टीका ॥ यहाँ उत्तम दूती का वचन नायक सों तनु तनु मध्य सोहै तनु नाम सूक्ष्म तनु नाम शरीर मध्य नाम बीच अर्थात् शरीर का मध्य जो है कटि सो कृश शोभाय मान है ताकी देव अंग नासी नाम देवताकी स्त्री सी है अंग राग राग भावै मन नाम अंग राग चन्द नादि अरु राग रागिनी जाके मन कों रुचै है नेह सनेहमे नेह नाम प्रीति।

सर नाम सरोवर नेह नाम जल अर्थात या समय
में वा नायका की प्रीति सरोवर के जलमेंहै काम
काम भरी काम नाम कामदेव काम नाम कामना
ना करिके परि पूर्ण है रही है मैन पेखी नाम
मैंने ऐसी नहीं देखी मैन कैसो हिय नाम मो
म कैसो है हृदय जाको अंबर सुवास वास अंब
र सुदेह में अंबर नाम औषधी ताकी है सुवास
नाम सुगंध की वास नाम स्थान है अंबर नाम
वस्त्र जाको अर्थात सुगंध युत वस्त्र ऐसो है जा
के सुंदर देह में कानन में मेरे वैन मानि चलो
नाम कर्ण में मेरे वचन सुनि के चलो कानन में
नाम बन में काहे ते कि मिलिवो गहन फिर ना
म वाको मिलाप फिरि कठिन है गहन सु छे ह
मे गह नाम गहोन सु छै ह में नाम सुंदर अंब
काम में याको अभिप्राय यह है कि ऐसी नायका
का समय में जल क्रीड़ा में है ऐसे एकांत सम
य में चलिके बन में ग्रहण करो क्यों नहीं कवि
काशीराज कवि को नाम लाल देखे बनै गुण
रूप धाम धाम है लाल गुण अरु रूप अरु धा
म नाम तेज इन तीनन के धाम नाम निवास

स्थान है रेवई वनै है अर्थात अकथनीय है ऐसी त्रिय नाही गेह गेह मे नाम ऐसी त्रि या घर घर प्रति नहीं है या कवित्त में तनु तनु राग राग काम काम वास वास धाम धाम गेह गेह यह अव्यपेत शब्द यमक हैं अरु अंग अंग नेह नेह मैन मैन अंबर अंबर कानन कानन यह सव्य पेत शब्द यमक हैं अरु तनु अंग राग नेह काम मैन अंबर वास कानन गहन धाम गेह यह अर्थ यमक हैं या कवित्त में अर्थ यमकभी अरु शब्द यमकभी अरु अव्यपेत अरु सव्यपेत दोऊ आये यातैं उभय संकर जानिये ॥ २७ ॥

अथ कवि वंश वर्णनम् ॥ दोहा ॥

गौतम ऋषि के वंश में भये नृपति वरि वंद। काशी में शिव कृपा तें कीनों राज अखंड ॥ ॥ २८ ॥ तासु तनय जग विदित हैं चेत सिंह महराज। आगम निगम प्रवीन अति हतिन में शिरताज ॥ २९ ॥ दोऊ सुतजिन कों जानिये विदित नाम बलवान। काशी राज सु गुरुय में कि

यौ नाम परधान ॥ ३० ॥

दोहा ॥ अति लघु मेरी बुद्धि है कवि को वि-
द्वति धाम । भूल चूक की क्षमा जो यहीं बुद-
न को काम ॥ ३१ ॥

अथ गुंथ संवत्सर कवित्त ॥ देव गुरु वार
सोहै लसै प्रिय धृति योग श्रवण सुखद गुण
आराम बखानिये । आशा तिथि पूरी जहाँ इषु
शुक्ल पक्ष युत हरन विघन खल जग मैं प्रमा-
निये ॥ निधि सिद्धि नाग चन्द्र विक्रम सु अब्द
अलि राशि है ललित तहाँ राजै पहि चानिये ।
कवि काशीराम मन आनंद करन हार गुंथ कीज
नस दिन किधौं शिव जानिये ॥ ३२ ॥

टीका अथ गुन्थ जन्म दिन पक्ष अर्थ
देव गुरु वार सोहै नाम देवतान के गुरु जो
बृहस्पति तिन को दिन सोहै है ता दिन अ-
र्थात् वा दिन बृहस्पति वार है लसै प्रिय धृ-
ति योग अरु सत्ताईस योग में धृति नाम जो
योग है सो लसै है प्रिय जहाँ श्रवण सुखद
गुण आराम बखानिये अरु सत्ताईस नक्ष-
त्र में श्रवण नाम नक्षत्र है ता समय में ।

कैसो है श्रवण नक्षत्र ताको सुखदायकता-
गुण आगम जो है ज्योतिषशास्त्र सो वखानै
है यह सर्व दिग्गमनता प्रसिद्ध है आगे ति-
थि पूरी जहाँ आगे नाम दिशा दिशा संख्या
की जो तिथि है सो है पूरी जहाँ अर्थात नन्दा
भद्रा जया रिक्ता पूर्णा यह जो पाँच तिथि
हैं तामे से पूरी नाम पूर्णा तिथि है पूर्णा ति-
थि तीन तामे दिशा कहे दश यातैं दशमी
तिथि जानिये कौन मास की दशमी है इषु
शुक्ल पक्ष युत इषु नाम कार महीना की
शुक्ल पक्ष करि युत है अर्थात विजय दशमी
है कैसी है दशमी कि हरन विघन खल जगा
में प्रमानिये नाम विघ्न रूपी जो खल हैं तिनकी
दूर करन वारी है ऐसे जगा मे प्रमाण की
जिये निधि सिद्धि नाम चन्द्र विक्रम अह्न-
विक्रमादित्य के सु अह्न नाम सु कहे सुंदर
सुंदर अरु शोभन इन दोऊन को एक अर्थ
है यातैं शोभन नाम को विक्रमा दित्यको सं-
वत्सर जानिये अरु विक्रमा दित्य गत एक्य वर्ष
संवत १८८९ जानिये निधि कहैं नौ सिद्धि कहे

आठ नाग कहै आठ चन्द्र कहै एक अंकानां
वामतो गति या रीति करिके यह संवत्काढ़ो
अंक राशि है ललित तहां राजै पहिचानिये
अरु ता समय में अंक नाम दृष्टिक राशि
ललित नाम सुन्दर राजै है सो जानिये कविकाशी
राज के मन को आनंद करन वारो ग्रंथ को जन-
मदिवस है ऐसो किधौं शिव जानिये ॥ १ ॥
अथ शिवपक्ष अर्थ ॥ देव गुरु वार सोहै
नाम देवता न में श्रेष्ठ वार नाम महादेव सो
है हैं अर्थात् देवतान में श्रेष्ठ महादेव सोहै हैं
कैसे हैं महादेव कि जासें प्रिय धृति योग नाम
योग की धारणा प्रिय जासें है जिन कौं श्रवण सु-
खद गुण आगम बखानिये आगम कहैं शा
स्त्रन के विषैं जिनके गुण बखानै हैं वे गुणग्र
हण के सुख दाता हैं आशा तिथि पूरी जहां अ-
तिथि कहैं याचक जन तिन की जो आशा कहि
ये कामना सो पूरन होय है जहां पदों अकः सव
र्णे दीर्घः करिके अतिथि शब्द कह्यो इषु शुक्ल
पक्ष युत इषु नाम बाण कैसे हैं कि शुक्ल कहैं
श्वेत पक्ष कहैं पंख इन करिके युक्त हैं अर्थात्

सुपेद परणी री हैं जिन में ऐसे जो वाण हैं सोहरन विघन खल नाम जे खल विघ्न करन वारे हैं तिन के हरन हैं अर्थात् नाश करता हैं यह वात प्रमाण ही है कि महादेव का शस्त्र है वाण अरु वाण को कर्म यही है निधि सिद्धि नाग चन्द्र विक्रम सु अब्द नाम नौ निद्धि हैं यह - महा पद्म - पद्म - शंख - मकर - कच्छप - मुकंद - कुंद - नील - खर्व - ए नौ निधि के नाम जानिये अरु अष्ट सिद्धि हैं यह - अणिमा - महिमा - गरिमा - लघिमा - प्राप्ति: - प्राकाम्य - ईशित्व - वशित्व - यह अष्ट सिद्धि हैं अरु नाग अष्ट कुल हैं यह - अनन्त - वासुकि - तक्षक - कर्कोटक - शंख - कुलिक - पद्म - महा पद्म - यह आठ जाति जानिये चन्द्र नाम चन्द्रमा विक्रम नाम विशेष करिके क्रम नाम संचार सु अब्द नाम सुंदर पर्वत। अर्थात् सुंदर जो पर्वत है कैलाश तापर निधि अरु सिद्धि अरु नाग अरु चन्द्रमा ए विचरैं हैं जहां अलि राशि है ललित तहां अरु अलि नाम भ्रमर की राशि कहिये समुदाय-

है तहाँ नाम ताही ठौर पर ललित नाम सो-
भायमान हैं तही यह शब्द देहरी दीपक न्या-
य करिके तह राजै पहिचानिये नाम ताही
पर्वत पर शिव राजै हैं यह जानिये। कवि
काशी राज मन आनंद करन हार काशीराज
जो कवि है ताके मन में हर्ष के वृद्धि कर-
न वीर किधौं शिव जानिये नाम ऐसे हैं महा-
देव जी सो जानिये ॥ ३२ ॥

अथ ग्रंथ परिपूर्ण मंगला चरण कवि-
त्त ॥ कमल नयन वर अंग रुचि नीरद सी
पीत पट कटि राजै मुकुट मयूर पक्ष। आक-
त मकर कान कुंडल कलित मणि मोती माल
वन माल सोहै भृगु लात वक्ष ॥ अधर मधुर
पर मुरली विराजमान गोपिन के मध्य छाजै
दक्षिण परम दक्ष। चरण शरण आय कवि
काशी राज ताके चित्र चन्द्रिका जो ग्रंथ की-
नो जगा में समक्ष ॥ ३३ ॥

टीका ॥ यह मंगला चरण है ग्रन्थ कर्ता क-
वि श्री कृष्ण की स्तुति करै है कैसे हैं श्री
कृष्णकि कमल नयन वर नाम कमलते

श्रेष्ठ हैं नेत्र जाके अंग रुचि नीरदसी नाम जाके
अंग में शोभा मेघ कीसी है पीत पट कटि राजै
नाम पीताम्बर कटि में राजे है मुकुट मयूर पक्ष
नाम जिनका मुकुट मयूर पंख को है भ्रावृत्तम-
कर कान कुण्डल कलित मणि नाम मकरा कृत
मणि करिके कलित नाम जटित ऐसो है कान में कुं
डल जाके मोती माल वन माल सोहै भृगु लात
वक्ष नाम मोती की माला अरु वन माल अ-
रु भृगु मुनि की लात जाके वक्ष नाम हृदय
में सोहै है अधर मधुर पर मुरली बिराज मा-
न नाम जाके मधुर ओष्ठ के ऊपर वांसुरी
सोभाय मान है गोपिन के मध्य छाजै नाम
गोपिन के बीच में सोभाय मान है दक्षिण
नाम दक्षिण नायक है अरु परम दक्ष ना-
म परम चतुर है चरण शरण आय कवि
काशी राज ताके तिन श्रीकृष्ण के चरण श-
रण में आय करिके कवि काशी राज चित्र
चन्द्रिका जो यह ग्रन्थ है ताको कीनों जग
में समक्ष नाम संसार में प्रत्यक्ष कीनों ॥

॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ✤ ✤ ॥ ✤ ✤

इति श्री मच्छ्री लक्ष्मी नारायण चरण कमल प्रसादात् श्री कवि काशी राज विरचित चित्र चन्द्रिका ग्रन्थः सम्पूर्णतामियात् ॥ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इन्दु राम ग्रह शशि वरष मार्गा शुक्ल रवि बार । चित्र चन्द्रिका पूर्ण भो पञ्चमि तिथि सविचार ॥ समाप्तः ॥

॥ लिखितं महावीर प्रसाद ब्राह्मण सरयूपारी अयोध्या वासी शुभ मिती पौष शुक्ला १२ संवत १९३१ वि० ॥ सन १८७५ ई० ॥ शुभम

